प्रकाशक—

सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट

बीकानेर।

मुद्रक—

सुराना प्रिन्टिङ्ग वर्क्स

४०२, अपर चितपुर रोड,

कलकत्ता-७

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ मे बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा सस्कृत, हिन्दी एव विशेषत: राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानो एव भाषाशास्त्रियो का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमे प्रारम्भ से ही मिलता रहा है।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर मे विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तिया चलाई जा रही हैं, जिनमे से निम्न प्रमुख है—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस सम्बन्ध मे विभिन्न स्रोतो से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दो का संकलन कर चुकी है। इसका सम्पादन आधुनिक कोशो के ढंग पर, लंबे समय से प्रारम्भ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं। कोश मे शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाए दी गई हैं। यह एक अत्यन्त विशाल योजना है, जिसकी सन्तोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य मे इसका प्रकाशन प्रारम्भ करना सम्भव हो सकेगा।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भडार के साथ मुहावरो से भी समृद्ध है। अनुमानत: पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग मे लाये जाते हैं। हमने लगभग दस हजार मुहावरो का, हिन्दी मे अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणो सहित प्रयोग देकर सम्पादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है।

यदि हम यह विशाल सग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह सस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिये भी एक गौरव की बात होगी ।

३ आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन

इसके अतर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं:—

१. कळायरा, ऋतु काव्य । ले० श्री नानूराम सस्कर्ता ।

२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास । ले० श्री श्रीलाल जोशी ।

३. वरस गाठ, मौलिक कहानी सग्रह । ले० श्री मुरलीधर व्यास ।

'राजस्थान-भारती' मे भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओ का एक अलग स्तम्भ है, जिसमे भी राजस्थानी कवितायें कहानिया और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं ।

४. 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है । गत १४ वर्षो से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानो ने मुक्त कंठ से प्रशसा की है । बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयो के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सभव नहीं हो सका है । इसका भाग ५ अंक ३-४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्वपूर्ण एव उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अक एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है । पत्रिका का अगला ७वा भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा हैं । इसका अक १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड का सचित्र और वृहत् विशेपाक हैं । अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है ।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सबंध मे इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन मे भारत एव विदेशो से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाए हमे प्राप्त होती हैं । भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशो मे भी इसकी माग है व इसके ग्राहक हैं । शोधकर्त्ताओ के लिये 'राजस्थान-भारती' अनिवार्यत: संग्रहणीय शोध-पत्रिका है । इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखो के अतिरिक्त सस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचद नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है ।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एव प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि की प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियो को सुरक्षित रखने एव सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप मे मुद्रित करवा कर उचित मूल्य मे वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रंथो का अनुसधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यो की ओर से निरंतर होता रहा है, जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण-प्रकाश मे लाये गये हैं और उनमे से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान-भारती' मे प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध सस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती मे प्रकाशित हुए हैं।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखा) की ७५ रचनाओ की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक मे प्रकाशित हुई है। उनका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक 'काव्य क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान-भारती मे प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड क्षेत्र के ५०० लोकगीतो का सग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एव जैसलमेर क्षेत्र के सैंकडो लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरियाँ, और लगभग ७०० लोक कथाएँ सग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतो के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाडे और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' मे प्रकाशित किए गए हैं।

१०. बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखो का विशाल सग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक वृहद् पुस्तक के रूप मे प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवंत उद्योत, मुहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रथो का सम्पादन एव प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचन्द भडारी की ४० रचनाओ का अनुसन्धान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के सम्बन्ध मे भी सबसे प्रथम 'राजस्थान भारती' मे लेख प्रकाशित हुआ है।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखों और 'भट्टि वश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रथो का अनुसन्धान किया गया और ज्ञानसागर ग्रथावली के नाम से एक ग्रथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओ का सग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त सस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियो के निर्वाण-दिवस और जयन्तिया मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्य गोष्ठियो का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमे अनेको महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताए और कहानिया आदि पढी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियो तथा भाषणमालाओ आदि के भी समय-समय पर आयोजन किये जाते रहे हैं।

१६. बाहर से ख्याति प्राप्त विद्वानो को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्रीकृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रम्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानो के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षो से महाकवि पृथ्वीराज राठोड आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षो के आसन-अधिवेशनो के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, डूंडलोद थे।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवनकाल में, सस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस सस्था के लिये यह सम्भव नही हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लडखडा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्त्ताओ ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओ के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नही है, न अच्छा संदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्यालय को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं, परन्तु साधनो के अभाव मे भी संस्था के कार्यकर्त्ताओ ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर सस्था के गौरव को निश्चित ही बढा सकने वाली होगी।

राजस्थानी-साहित्य-भडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश मे आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एव अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनों और साहित्यिको के समक्ष प्रस्तुत करना एव उन्हे सुगमता से प्राप्त करना संस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सम्भव नही हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एवं सास्कृतिक कार्यक्रम मन्त्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओ के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये १५०००) रु० इस मद में राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकशाना

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष मे प्रदान की गई है, जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

१. राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोतमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३. अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४. हमीरायण—	श्री भवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,, ,,
६. दलपत विलास—	श्री रावत सारस्वत
७. डिगल गीत—	,, ,, ,,
८. पवार वश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड ग्रथावली—	श्री नरोतमदास स्वामी और श्री बदरीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बदरीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्र थावली—	श्री अगरचद नाहटा
१२. महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चौपई—	श्री अगरचद नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचद नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबध—	प्रो० मजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमाजलि—	श्री भवरलाल नाहटा
१७. विनयचद कृतिकुसुमाजलि—	,, ,, ,,
१८ कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर रस रा दूहा—	,, ,, ,,
२१. राजस्थान के नीति दोहे—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थानी व्रत कथाएं—	,, ,, ,,
२३. राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,, ,,
२४. चदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५. भड्डली—	श्री अगरचंद नहाटा और म.विनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रंथावली	श्री अगरचंद नाहटा
२७. राजस्थानी हस्त लिखित ग्रंथो का विवरण	,, ,,
२८. दम्पति विनोद	,, ,,
२९. हीयाली–राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	,, ,,
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रथावली	श्री वदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (सपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रंथावली (संपा० वदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचद नाहटा), नागदमण (सपा० वदरीप्रसाद साकरिया) मुहावरा कोश (मुरलीवर व्यास) आदि ग्रथो का सपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एव गुरुता को लक्ष्य मे रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अविक सहायता हमे अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त सपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रथो का प्रकाशन सभव हो सकेगा।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षा विकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मजूर की।

राजस्थान के मुख्य मंत्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मत्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एव पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने मे समर्थ हो सके। सस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

इतने थोडे समय मे इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थो का सपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य मे जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादको व लेखको के अत्यन्त आभारी हैं।

अनूप सस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर सग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन सग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसधान समिति जयपुर, ओरियटल इन्स्टीट्यूट वडोदा, भाडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ वृहद् ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बबई, आत्माराम जैन ज्ञानभडार वडोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशकर देराश्री, प० हरिदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक सस्थाओ और व्यक्तियो से हस्तलिखित प्रतिया प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रंथो का सपादन सम्भव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थो का सम्पादन श्रमसाध्य है एव पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय मे ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियो का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छत. स्खलनक्वपि भवत्येव प्रमादत:, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधव॰।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनो का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावो द्वारा हमे लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुन: मा भारती के चरण कमलो मे विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पाजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मन्त्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
सवत् २०१७
दिसम्बर ३, १९६०

कविवर विनयचन्द्र और उनका साहित्य

संसार में दो तरह के प्राणी जन्म लेते है। कुछ जन्मजात प्रतिभासम्पन्न होते हैं और कुछ परिश्रमपूर्वक प्रतिभा का विकास करते है। साहित्यकारों में भी हम उभय प्रकार के व्यक्ति पाते है। कई कवियों की कविता में स्वाभाविक प्रवाह होता है, शब्दावली अपने आप उनकी कविता में रत्नो की भांति आकर जटित हो जाती है जो पाठकों को मुग्ध कर लेती है। कई कवियों की रचनाए शब्दों को कठिनता से बटोर कर संचय की हुई प्रतीत होती है। सुकवि विनयचन्द्र प्रथम श्रेणी के प्रतिभासम्पन्न कवि थे, जिनकी उपलब्ध रचनाओं का संग्रह प्रस्तुत ग्रन्थ मे प्रकाशित किया जा रहा है।

बत्तीस वर्ष पूर्व राजस्थान के महाकवि समयसुन्दर की रचनाओं का अनुसंधान करते हुए बीकानेर के श्री महावीर जैन मण्डल मे सं० १८०४ का लिखा हुआ एक गुटका प्राप्त हुआ जिसमे समयसुन्दरजी की अनेक फुटकर रचनाओं के साथ-साथ उनकी परम्परा के कुछ कवियों की भी रचनाएँ मिली। सुकवि विनयचन्द्र महो० समयसुन्दरजी की परम्परा में ही थे और उस गुटके के लिखनेवाले भी उसी परम्परा के थे अतः विनयचन्द्र की भी ४ रचनाएँ इस प्रति में प्राप्त हुई जिनमें से नेमिराजुल बारहमासा और राजिमतीरहनेमि सझाय नामक उत्कृष्ट रचनाओं ने हमें इस कवि के प्रति विशेष आकृष्ट किया

उनकी राजिमती रहनेमि सज्झाय को सन् १६२६ ता० १३ जून मे आगरा से प्रकाशित होनेवाले श्वेताम्बर जैन वर्ष ४ अंक २५ मे प्रकाशित किया गया उसके बाद खरतर गच्छ के वृहद् ज्ञान-भण्डार का अवलोकन करते हुए महिमाभक्ति भण्डार के वं० नं० ३७ मे विनयचन्द्रजी की चौवीसी, बीसी, सज्झायादि की ३१ पत्रो की संग्रहप्रति प्राप्त हुई और जैन गुर्जर कविओ दूसरा भाग सन् १६३१ मे प्रकाशित हुआ उसमे आपके रचित उत्तम-कुमार चरित्ररास, ध्यानामृतरास, मयणरेहा रास, ११ अंग सज्झाय, शत्रुजय तीर्थयात्रा स्तवन का उल्लेख प्रकाशित हुआ था। हमने आपको प्राप्त समस्त रचनाओं की सूची देते हुए कविवर विनयचन्द्र नामक लेख प्रकाशित किया जिसमे नेमिराजुल बारहमासा भी दिया था। कवि की रचनाओं की संग्रह प्रति से तभी हमने प्रेस कापी तैयार कर रख दी थी जिसे प्रकाशित करने का सुयोग अब प्राप्त हुआ है।

गुरु परम्परा—

खरतरगच्छ की सुविहित परम्परा मे मुगल सम्राट अकबर प्रतिबोधक युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि प्रसिद्ध और प्रभावक आचार्य हुए हैं। उनके प्रथम शिष्य सकलचन्द्र गणि के शिष्य अष्टलक्षी कर्त्ता महोपाध्याय समयसुन्दरजी की विद्वद् परम्परा मे कविवर विनयचन्द्र हुए है। कविवर स्वयं उत्तमकुमार चरित्र-चौपई मे अपनी गुरु परम्परा का परिचय देते हुए लिखते है कि महोपाध्याय समयसुन्दरजो भारी प्रकाण्ड विद्वान थे जैसे—

ज्ञानपयोधि प्रबोधवा रे, अभिनव ससिहर प्राय ; सु०
कुमुदचन्द्र उपमा वहै रे, समयसुन्दर कविराय ; ८ सु०
तत्पर शास्त्र समर्थिवा रे, सार अनेक विचार ; सु०
वलि कलिंदिका कमलनी रे, उल्लासन दिनकार ; ९ सु०

इनके शिष्य विद्यानिधि वाचक मेघविजय हुए। जिनके शिष्य हर्षकुशल भी अच्छे विद्वान थे जिन्होंने विहरमान वीसी का रचना करने के अतिरिक्त महोपाध्याय समयसुन्दरजो को ग्रन्थरचना में भी सहाय्य किया था। इनके शिष्य उ० हर्षनिधान हुए जिनकी चरणपादुकाएं सं० १७६७ मिति आषाढ़ सुदि ८ के दिन शिष्य वा० हर्षसागर द्वारा प्रतिष्ठित बीकानेर रेल दादाजी में विराजमान है। हर्षनिधानजी के लिए कविवर ने लिखा है कि ये अध्यात्म-योगी थे, यतः—

'परम अध्यातम धारवा रे जो योगेन्द्र समान।'

इनके तीन शिष्य थे, प्रथम वा० हर्षसागर द्वारा सं० १७२९ का० कृ० ९ को लिखित पुण्यसार चतुष्पदी (सेठिया लाइब्रेरी, बीकानेर) प्राप्त है। इनकी चरणपादुकाएँ भी सं० १७८४ वै० सु० ८ सोम के दिन प्रतिष्ठित बीकानेर के रेल दादाजी मे है। इनके नयणसी व प्रतापसी नामक दो शिष्य थे। हर्षनिधानजी के द्वितीय शिष्य ज्ञानतिलक व तीसरे पुण्यतिलक थे ये तीनों साहित्यादि ग्रंथों के विद्वान थे। ज्ञानतिलक रचित ३-४ स्तोत्र व फुटकर संग्रह का गुटका विनयसागरजी के संग्रह में है। कविवर विनयचन्द्र इन्हीं ज्ञानतिलकजी के शिष्य थे। सं० १७६६ मिती

वैशाख सुदी १४ को बीकानेर में साध्वी हर्षमाला के लिए प्रतिलिपि की हुई एकादशांग स्वाध्याय की प्रशस्ति इसी ग्रन्थ के पृ० ६८ मे प्रकाशित है।

हर्षनिधानजी के तृतीय शिष्य पुण्यतिलक थे जिनके शिष्य महोपाध्याय पुण्यचन्द्र हुए। इनके शिष्य पुण्यविलासजी ने अपने शिष्य पुण्यशील के आग्रह से सं० १७८० मे मानतुंग मानवती रास (ढाल ५० गाथा १४४२) लूणकरणसर मे निर्माण किया जिसकी दो प्रतिया लालभवन, जयपुर मे है। पुण्यविलासजी के दूसरे शिष्य मानचन्द्र थे। नन्दीपत्रानुसार इनकी दीक्षा सं० १७७४ को पत्तन मे हुई थी इसमे पं० माना पं० पुण्यशील लिखा है अतः पुण्यशील और माना एक ही व्यक्ति प्रतीत होते हैं। सं० १८०४ वाला उपर्युक्त गुटका इन्हीं मानचन्द्र द्वारा लिखा हुआ है जिसमे कविवर समयसुन्दरजी की कृतियां और विनयचन्द्रजी की चार कृतियां लिखी हुई है। प्रशस्ति इस प्रकार है :—'सम्वत् १८०४ वर्षे मिति माह वदि १ तिथौ जंगम युगप्रधान पूज्य भट्टारक श्रीमच्छ्री जिनचन्द्रसूरीश्वराणां शिष्य मुख्य पंडितोत्तम प्रवर सकलचन्द्रजी गणि शिष्य महोपाध्याय श्री ५। श्री समयसुन्दरजी गणि। शिष्य मेघविजयजी गणि। वाचकोत्तम वर हर्षकुशलजी गणि। पाठकोत्तम हर्षनिधानजी शिष्य दक्ष पुण्यतिलकजी गणि। महोपाध्याय श्री

१—देखो बीकानेर जैन लेख संग्रह लेखांक २०८०।

२—देखो बीकानेर जैन लेख संग्रह लेखांक २०५३।

५ श्री पुण्यचन्द्रजी गणि तत्शिष्य पंडितोत्तमप्रवर श्री पुण्य विलासजी गणि। तद्तेवासी पंडित मानचन्द्र लिखित ॥ श्री मरोट मध्ये ॥ सुश्रावक पुण्यप्रभावक मुंहता दुलीचन्दजी तत्पुत्र जैतसीजी तत्पुत्र सुखानन्द पठन हेतवे। आचंद्रार्कों यावत् चिरंनन्दतु।

जन्म—

कविवर का जन्म कब और किस प्रान्त में हुआ यह जानने के लिए अभी तक कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ है पर गुजरात में रह कर हिन्दी रचना व राजस्थानी शब्द-प्रयोग देखते हुए प्रतीत होता है कि इनका जन्म राजस्थान में ही हुआ होगा। आपने अपनी रचनाओं में जिन राजस्थानी लोक गीतों की देसियां प्रयुक्त की हैं, यह भी हमारी धारणा को पुष्ट करने वाली हैं। आपके हृदय के उद्गार, भक्ति आदि देखते यह निश्चित है कि आपने जैन कुल में जन्म लिया था। आपकी प्रथम रचना उत्तमकुमार चरित्र चौपाई सं० १७५२ मे पाटण मे हुई है उस समय आपका ज्ञान और योग्यता देखते कम से कम २५ वर्ष की अवस्था होनी चाहिए तो अनुमान किया जा सकता है कि आपका जन्म लगभग १७२५ से १७३० के बीच में हुआ होगा।

दीक्षा—

दीक्षाकाल जानने के लिए सब से सुगम साधन श्रीपूज्यों के दफ्तर और नंदी अनुक्रम सूची है। उसके अभाव मे हमें

अनुमान के आधार पर ही चलना होगा। अतः आपने लगभग १५ वर्ष की आयु मे दीक्षा ली हो तो सं० १७४०-४५ के बीच मे दीक्षाकाल होना चाहिए।

विद्याध्ययन—

दीक्षा लेने के अनन्तर आपने विद्याध्ययन प्रारम्भ किया। आपकी गुरु परम्परा मे साहित्य, जैनागम और भाषाशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान होते आये है। त्याग वैराग्यपूर्ण श्रमण संस्कृति का मुख्य आधार आचारशास्त्र और अध्यात्म था। आपने अपने गीतार्थ गुरुओ की निश्रा मे रह कर पूर्ण मनोयोग पूर्वक विद्याध्ययन किया जो कि आपकी कृतियो से भली भाँति प्रमाणित है। इनकी भाषा कृतियो मे संस्कृत शब्दो का प्राधान्य है इससे विदित होता है कि संस्कृत भाषा एवं काव्य ग्रन्थादि का आपने सुचारु रूप से अध्ययन किया था।

विहार और रचनाएँ–

आपका विहार कहाँ-कहाँ हुआ यह जानने के लिए हमारे पास आपकी-कृतियो के सिवा कोई साधन नहीं है। आपकी संवतोल्लेख वाली प्रथम वड़ी रचना उत्तमकुमार चरित्र चौपई है जो सं० १७५२ मिती फागुन सुदि ५ गुरुवार के दिन पाटण मे विरचित है। इससे ज्ञात होता है कि आप अपने गुरुजनों के साथ राजस्थान से तत्कालीन आचार्य श्री जिनचंद्रसूरिजी के आदेश से गुजरात पधार गये थे। इन श्री जिनचंद्रसूरि जी की

गहुँली इसी ग्रन्थ के पृ० ८४ में प्रकाशित है जिसमें आपने आचार्य श्री जिनधर्मसूरि के पट्ट पर श्रीजिनचंद्रसूरि के पाट विराजने का उल्लेख किया है। यह पट्ट महोत्सव बीकानेर के लूणकरणसर मे हुआ था अतः इसके बाद आचार्य श्री ने आपके गुरु महाराज को गुजरात में विचरने का आदेश दिया प्रतीत होता है। इस लघु रचना मे अपने को कवि ने मुनि विनयचंद्र लिखा है इसके बाद आपने लघु कृतिया अवश्य ही बनाई होगी क्योंकि उत्तमकुमार चरित्र में आपने अपने को कई जगह 'कवि' विशेषण से सम्बोधित किया है। पाटण में रहते आपने बाड़ी पार्श्व स्त० व नारंगपुर पार्श्व स्तवनादि की रचना की। इसके बाद सं० १७५५ का चातुर्मास आपने राजनगर किया और विजयादशमी के दिन विहरमान वीसी रचकर पूर्ण की। दूसरा चातुर्मास भी आपने राजनगर मे ही बिताया था स्थूलिभद्र बारहमासा गा० १३ की रचना राजनगर मे हुई। सं० १७५५ भा० व० १० को राजनगर (अहमदावाद) मे ११ अंग सज्झायो की रचना एवं विजयादशमी के दिन चौवीसी की रचना पूर्ण की। इस चातुर्मास के पश्चात् आपने आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरिजी एवं अपने दादा गुरु श्री हर्षनिधान पाठक व गुरु ज्ञानतिलकादि गुरुजनों के साथ सपरिवार मिती पोषवदी १० के दिन शत्रुंजय महातीर्थ की यात्रा की जिसका उल्लेख आपने इसी ग्रन्थ के पृ० ५० मे प्रकाशित शत्रुंजय यात्रा स्त० गा० २१ में किया है एक और गा० १३ का स्तवन पृ० ५५ मे प्रकाशित है।

इसके अतिरिक्त संखेश्वर पार्श्वनाथ स्त० गा० ११ का पृ० ६४ में छपा है पर आपने यह यात्रा कब की इसका कोई उल्लेख नहीं। इसके पश्चात् आपने कब कहाँ चातुर्मास किये इसका कोई पता नहीं चलता अब तक जो रचनाएँ मिली हैं वे सं० १७५२ से १७५५ तक की है। इसके पश्चात् की कोई संवतोल्लेख वाली रचना नहीं मिलने से ठीक ठीक पता नहीं लगता कि आप कब तक विद्यमान रहे पर दीक्षानंदि पत्र से आपके शिष्य विनय-मंदिर की दीक्षा सं० १७६६ ज्येष्ठ वदि ५ को बीकानेर मे हुई थी लिखा है उस समय तक आप अवश्य ही विद्यमान थे। इन वर्षों मे आपने ग्रंथ रचना अवश्य ही की होगी। पर किसी ज्ञान भंडार या उनकी परम्परा के किसी विद्वान के पास रही कहीं मिल जाय तो आपका रचनाओं व जीवनी पर विशेष प्रकाश पड़ सकता है। तीन वर्ष जैसे अलपकाल की रचनाओ से विदित होता है कि आप उच्च कोटि के कवि थे। एवं और भी बहुतसी रचनाओं का निर्माण किया होगा। इस ग्रन्थ मे प्रकाशित प्रधान रचनाएँ इस प्रकार है :—

१—उत्तमकुमार चरित्र चौपई ढाल ४२ गाथा ८४८ सं० १७५२ फा० सु० ५ गु० पाटण

२—विहरमान बीसी स्तवन स्त० २० कलश १ सं० १७५४ विजयादशमी राजनगर

३—११ अंग सज्झाय स० १२ सं० १७५५ भा० वदी १० राजनगर

४—चतुर्विंशतिका स्त० २४ कलश १ सं० १७५५
विजयादशमी, राजनगर

५—शत्रुंजय यात्रा स्त० गाथा २१ सं० १७५५ पौष वदी १० यात्रा

६—फुटकर स्तवन, सज्झाय, बारहमासा, गीत आदि २५ कृतियाँ

इनके अतिरिक्त जैन गुर्जर कविओ भाग २ पृष्ठ ५२३ में :—

१—ध्यानामृत रास। २—मयणरेहा चौपाई।

एवं जैन गूर्जर कविओ भाग ३ पृ० १३७४ मे—

३—रोहा कथा चौपई का उल्लेख किया है। श्री देसाई ने प्रथम दो रचनाओंका न तो रचनाकाल व आदि अन्त दिया है और न प्राप्तिस्थान ही दिया है। विनयचन्द्र नाम के कई कवि हो गए हैं अतः वे रचना इन्हीं कविवर की है या और किसी विनयचन्द्र की, नहीं कहा जा सकता। फिर भी मयणरेहा चौपाई व रोहा कथा चौ० की प्रतियाँ हमारे (श्री अभय जैन ग्रन्थालय, बीकानेर) संग्रह में है उनमे से मयणरेहा चौपाई का रचना काल सं० १८७० एवं रचनास्थान जयपुर है उसके रचयिता विनयचन्द्र स्थानकवासी अनोपचन्द के शिष्य है। रोहा कथा चौपाई में विनयचन्द्र के गुरु का नाम रचनाकाल नहीं पाया जाता, पर यह कृति भी स्थानकवासी विनयचन्द्र की ही लगती है। अतः तीन में से दो तो हमारे कविवर विनयचन्द्र से सौ, सवासौ वर्ष पश्चात् होनेवाले स्थानकवासी विनयचन्द्र की रचनाएँ सिद्ध हो जाती है केवल ध्यानामृतरास ही अनिश्चित अवस्था में रहता है सम्भव है वह हमारे कवि विनयचन्द्र

की रचना हो पर उसकी प्रति कहाँ पर है इसका निर्देश नहीं होने से हम उसे प्राप्त नहीं कर सके। उत्तमकुमार रास की भी प्रतियां अधिक नहीं मिलती। दो-तीन प्रतियों की ही सूचना मिली जिनमे से १ तिलकविजय भंडार महुआ २ चुन्नीजी भंडार, काशी का उल्लेख जैन गूर्जर कवियों मे किया गया था। चुन्नी जी भंडार की कुछ प्रतियाँ आगरा व कुछ प्रतियाँ रामघाट जैन मन्दिर के भंडार वनारस मे बँट गई। हमने वनारस हीराचन्द्र सूरिजी को पत्र लिखा पर वहाँ की सूची मे महाराजकुमार चौ० का नाम होने से वे पता नहीं लगा सके अन्त मे हमे स्वयं वहाँ जाना पडा और कठिनता से पता लगाकर प्रति प्राप्त की। प्रति का उपयोग करने का सुयोग श्री हीराचन्द्रसूरिजी महाराज की कृपा से ही प्राप्त हो सका इसलिए उनके हम विशेष आभारी है। इसकी एक प्रति देहला के उपाश्रय, अहमदावाद स्थित रत्नविजय भंडार मे होने का उल्लेख जैन गूजर कविओ के दूसरे भाग मे है जिसे प्राप्त करने के लिए पत्र व्यवहार किया पर सफलता नहीं मिली। यह चौपाई एक ही प्रति के आधार से सम्पादन की गई अतः कई जगह पाठ त्रुटित रह गया है।

चौवीसी, वीसी, ११ अंग सज्झाय आदि रचनाओं की एक प्रति पत्र ३७ की महिमाभक्ति ज्ञानभंडार मे मिली थी तदनन्तर आचार्य शाखा भण्डार से २ संग्रह प्रतियाँ व दो फुटकर पत्र प्राप्त हुए जिनमे से प्रथम प्रति २७ पत्रो की कवि के गुरु श्री ज्ञानतिलक द्वारा लिखित है उसमे वीसी, चौवीसी, ११ अंग

सम्झाय व अन्य फुटकर रचनाएँ हैं जिसकी प्रशस्ति इसी पुस्तक के पृ० ६८ में दी गई है। दूसरी प्रति ७ पत्रों की है, जिसमे ११ अंग सम्झाय, दुर्गति-निवारण सम्झाय व पार्श्वनाथ स्तवन है जिसकी लेखन प्रशस्ति इस प्रकार है :—

"संवत् १७६७ रा फागुन सुदि १० शनिवारे श्री जैसलमेर दुर्गे लिखितमस्ति श्राविका मूली वाई पठनार्थं ॥श्रीरस्तु॥"

एक फुटकर पत्र में नयविमल रचित शत्रुंजय के २ स्तवनों के वाद विनयचन्द्र रचित सभवनाथ स्तवन है। यह पत्र पुण्यचंद्र ने सुश्राविका पुण्यप्रभाविका तत्वार्थं गुण भाविका झम्मा वाचनार्थं लिखा है। अन्य फुटकर पत्र में कुगुरु स्वाध्याय गा० ३१ की है वह कवि के स्वयं लिखित पत्र विदित होता है क्योंकि इसमे ऊपर व किनारे मे पाठवृद्धि व पाठान्तर भी लिखे हुए है, सम्भवतः यह रचना का खरड़ा या प्रथमादर्श होगा। और एक फुटकर पत्र मे गौडीपर्श्व स्तवन और सूरप्रभ स्तवन मुनि हरिचद्र के श्राविका आसा पठनार्थं लिखित प्राप्त है। कुगुरु सम्झाय हमारा अनुमान है कि यदि कवि के स्वयं लिखित है तो उनके हस्ताक्षर वहुत सुन्दर थे और उसकी प्रतिकृति इस ग्रंथ भी दी जा रही है।

शिष्य परिवार—

कवि विनयचद्र के कितने शिष्य थे और उनकी परम्परा कव तक चली? साधनाभाव मे यह वतलाना असम्भव है पर ज्ञानसागर कृत चौवीसी पत्र ७ की प्रशस्ति से मालूम होता है कि आपके एक शिष्य विनयमन्दिर और उनके शिष्य खुस्यालचंद्र

थे। नंदि अनुक्रम पत्र के अनुसार इन विनयमंदिर का पूर्वनाम अमीचंद था और सं० १७६६ मिती ज्येष्ठ वदि ५ को बीकानेर मे दीक्षा हुई थी। इस प्रशस्ति मे से विदित होता है कि कविवर के गुरु वाचनाचार्य एवं कवि स्वयं सं० १७७२ से पूर्व गणि पद विभूपित हो चुके थे। यहाँ उपर्युक्त प्रशस्ति की नकल दी जा रही है —

"संवत् १७७२ वर्षे मिती ज्येष्ठ सुदी १ रविवारे श्री राजनगरे वा० ज्ञानतिलक गणि शिष्य विनयचन्द्रगणि शिष्य विनयमदिर शिष्य चिरं खुस्यालचंद लिखितं ॥ साध्वी कीर्तिमाला शिष्यणी हर्पमाला पठनार्थं ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभं भवतुः ॥"

भक्ति व काव्य प्रतिभा–

कविवर का हृदय जिनेश्वर भगवान के भक्ति रस से ओत प्रोत था। चौवीसी, वीसी एवं स्तवनादि मे आपने बड़े ही मार्मिक उद्गार प्रगट किये हैं। आपने अपनी कृतियों में कहीं सरल भक्ति, कहीं उत्प्रेक्षाएँ और वक्रोक्तिपूर्ण उपालंभ देते हुए विभिन्न रसों की भाव धारा प्रवाहित की है। भापा प्रौढ और सटंक शब्दयोजना, फबती हुई उपमाएँ पाठकों के मन को सहज ही आकृष्ट करने मे समर्थ हैं। यहाँ कुछ थोड़े से अवतरण पाठकों के रसास्वादनार्थ उद्धृत किये जाते हैं।

"नयणे नयण मिलायने रे, जिन मुख रहीयइ जोय
तउ ही तृप्ति नहीं पामियइ रे, मनसा विवणी होय"

[ऋषभदेव स्त०]

जिम गोपी मन गोविन्द रे लाल, गौरी मन शंकर वसइ
वलि जेम कुमुदिनी चंद रे लाल [शांतिनाथ स्त०]

नेह अकृत्रिम मंइ कियउ रे, कदे न विहड़इ तेह
दिन दिन अधिकउ उलटइ रे, जिम आषाढ़ी मेह
[कुंथुनाथ स्त०]

श्री मुनिसुव्रत स्वामी के स्तवन में प्रभु को उपालम्भ देते हुए कवि कहता है कि—

हुं रागी पिण तुं अछइ जी, नीरागी निरधार।
मावै नहीं इक म्यान मइंजी, तीखी दोइ तरवार॥
जाणपणउ मइं जाणियउ जी, जिनवर ताहरउ आज।
तक ऊपर आव्यउ हतोजी, तैं नवि राखी लाज॥
जे लोभी तुझ सरिखाजी, वंछित नापइ रे अन्त।
मुझ सरिखा जे लालचीजी, लीधा विण न रहंत॥

× × × ×

नेमजी हो मुगति रमणि मोह्या तुम्हे हो राजि,
पिण तिण मा नहिं स्वाद।
नेमजी हो तेह अनते भोगवी हो राजि, छोड़उ छोकरवाद।
[नेमिनाथ गीत पृ० ६०]

कविवर ने उपमाओं एवं लोकोक्तियों को अपनी कृतियो मे खचित करके उन्हे हृदयग्राही वना दिया है। यहाँ थोड़े से अवतरण प्रस्तुत किये जाते हैं :—

"साकर मां काकर निकसइ ते साकर नौ नहिं दोष"
[विमलनाथ स्तवन]

वाल्हा लागौ हो नहिं उपदेश, छाट घडइ जिम चीगटइ
वाल्हा तेतउ, हो न्याय अज्ञेस, कर्म अरि कहो किम कटइ
[धर्मनाथ स्त०]

हा रे लाल निज फल तरुवर नवि भखइ,
सरवर न पियइ जल जेम रे लाल
पर उपगारइ थाय ते, तुं पिण जिनजी हुइ तेम रे लाल
[शातिनाथ स्त०]

"कोइल आवा गुण लहै रे, पिण स्युं जाणै काग
मूरख पशु जाणै नहीं रे, सेलडी कड़न मिठास"
[कुंथुनाथ स्त०]

"जे खल नइं गुल सरिखा जाणइ, ते स्यु नवलो नेह पिछाणइ"
(मल्लिनाथ स्त०)

"देव अवर मीठा मुखे, हृदय कुटिल असमान
जाणि पयोमुख संग्रह्या, ते विषकुम्भ समान"
(नमिनाथ स्त०)

'तरू भावइ तउ छइ इकताई, पिण अंब नींव अधिकाई रे
पंखी जातइ एकज हूआ, पिण काग कोइल ते जूआ रे'
(सूरप्रभ स्तवन)

महिर विना साहिब किसउ हो, लहिर विना स्यउ वाय रे सनेही
सहिर विना स्यउ राजवी हो, इम कलि माहि कहाव रे सनेही
(संखेश्वर पार्श्व स्त० पृ० ६५)

'एक हाथइ रे ताली नवि पडइ रे' (स्वाभाविक पार्श्व स्त० पृ०७४)

'जिम सौ तिम पचास' 'सौ वाते इक वात' (वाड़ी पार्श्व स्तवन पृ० ७१)

जिन प्रतिमा स्वरूप निरूपण स्वाध्याय (पृ० १००) में वायस दुग्ध प्रक्षालन, मुद्गशेलिक घनवर्षण, ऊपरभूमि वीजवपन वधिर प्रमाण कथन, श्वान-पुच्छ, जिम काजीयइ दूध, नदी-किनोरवृक्ष आदि उपमाएँ दी गई है। स्वयं जिनेश्वर भगवान की अविद्यमानता में मुमुक्षुओं के लिए जिन प्रतिमा एक पुष्टा-लंवन है। कविवर जिन प्रतिमा को जिन सदृश उपकारी मानते थे और उसे आमन्य करनेवालों का प्रखरता के साथ निराकरण करने के हेतु इस ३६ गाथा की स्वाध्याय का निर्माण हुआ है। ध्यान के लिए जिन प्रतिमा की उपयोगिता वताते हुए कविवर निम्नोक्त भाव व्यक्त करते हैं :—

'जिन प्रतिमा निश्चयपणइ, सरस सुधारस रेलि
चिंतामणि सुरतरु समी, अथवा मोहनवेलि ६
नेह विना सी प्रीतड़ी, कंठ विना स्यउ गान
लूण विना सी रसवती, प्रतिमा विण स्यउ ध्यांन ७
तीर्थंकर पिण को नहीं, नहिं को अतिशयधार
जिन प्रतिमा नउ इण अरइ, एक परम आधार ६'

कविवर विनयचन्द्र जैन शास्त्रों के प्रौढ विद्वान थे। उन्होंने ग्यारह अंग सज्झायों मे प्रत्येक अंग—आगम का रहस्य वडी ही ओजस्वी वाणी से श्रद्धा-भक्तिपूर्वक व्यक्त किया है। इन सज्झायों को गाने से जिनवाणीके प्रति आस्था प्रगाढ़ हो जाती

है और वाचक आपकी श्रुत श्रद्धा के प्रति पद-पद पर श्रद्धावनत हो जाता है। ग्यारह अंगों का परिचय प्राप्त करने के लिए तो ये सज्झायें वड़ी ही उपयोगी है। अन्तिम सझाय मे कवि लिखता है कि—

'पसरी अंग इग्यार नी सहेली हे, मुझ मन मंडप वेलि कि।
सांचू नेह रसइ करी सहेली हे, अनुभव रस नी रेलि कि ॥२॥
हेजधरी जे सभिलइ सहेली हे, कुण वूढा कुण वाल कि।
तउ ते फल लहै फूटरा सहेली हे, स्वादइं अतिहि रसाल कि ॥३॥

कविवर ने प्रकृति-सौन्दर्य को भी जिस सरसता से वर्णन किया है वह अपने ढंग का अनूठा है—'श्रीरहनेमि राजीमति स्वाध्याय तथा श्री स्थूलिभद्र वारहमासा' मे छ. ऋतुओ का वर्णन प्रकृति की सौन्दर्य सुषमा तथा जन-मन मे उठता हुआ उल्लास नव रसो के प्रवाह का कवि ने जिस सजीवता से वर्णन किया है उसका रसास्वादन कराने के लिए कुछ पद्य यहाँ उद्धृत करते है :—

रहेनमि राजिमती स्वाध्याय

वर्षा—

सजि वुंदसारी, हर्षकारी भूमि नारी हेत।
झरलाय निर्झर झरत झरझर सजल जलद असेत ॥
घन घटा गर्जित छटा तर्जित भये जर्जित गेह।
टव टवकि टवकत झवकि झवकत झिचिविचि वीजकि रेह ॥ २॥
'द्दग श्याम वादर देखि दादुर रटत रस भरि रइन।
वन-मोर वोलइ पिच्छ डोलइ छिरद खोलइ पुनि नइन ॥ ३ ॥

मदन के माते रंग राते रसिक लोक अपार।
वइठि कइ गोख मनइं जोखइं गावत मेघ-मल्हार ॥ ५ ॥
पंच रंग चोपें अधिक ओपइं इन्द्र-धनुष सधीर।
वक श्रेणि सोहइ चित्त मोहइ सर सरित के तीर ॥
तहाँ करन क्रीड़ा मुखइ बीड़ा चावती त्रिय जात।
केसरी सारी मूल भारी पहिरि कै हर्ष न मात ॥ ६ ॥

श्री स्थूलिभद्र बारहमास

शृंगार आषाढ़

आषाढइ आशा फली, कोशा करइ सिणगारो जी।
आवउ थूलिभद्र वालहा, प्रियुड़ा करूं मनोहारो जी ॥
मनोहार सार शृंगार-रसमा, अनुभवी थया तरवरा।
वेलड़ी वनिता ल्यइ आलिगन, भूमि भामिनी जलधरा ॥

हास्य श्रावण

श्रावण हास्य रसइं करी, विलसउ प्रतिम प्रेमइ जी।
योगी! भोगीनइ घरे, आवण लागा केमइ जी ॥
तउ केम आवै मन सुहावै, वसी प्रमदा प्रीतडी।
एम हासी चित विमासी, जोअउ जगति किसी जडी ॥

करूणा वर्षा

झरहरइ पावस मेघ वरसइ, नयण तिम मुख आंसुआं।
तिम मलिन रूपी वाह्य दीसउ, तिम मलिन अंतर हुआ ॥२॥
भादउ कादउ मचि रह्यउ, कलिण कलया वहु लोको जी।
देखी करूणा ऊपजै, चन्द्रकान्ता जिम कोको जी ॥

उत्तमकुमार रास सार

प्रारम्भ में एक संस्कृत श्लोक द्वारा विनायक को नमस्कार किया गया है जो प्रति लेखक द्वारा लिखा हुआ है। रास के प्रारम्भ मे १३ दोहों में ॐकार, सरस्वती और दादा श्री जिन-कुशलसूरिजी को नमस्कार कर सुपात्रदान के अधिकार में उत्तमकुमार चरित्र रचना प्रस्ताव रखते हुए कवि श्रोताओं से बातचीत और कुमति क्लेश त्याग करने का निर्देश कर चरित्र का प्रारम्भ करता है।

काशी देश स्थित वाराणसी नगरी का वर्णन करते हुए कवि लिखता है कि उस अलकापुरी के समकक्ष नगरी में ऊँची अट्टालिकाएँ, चारो ओर दुर्ग, चौरासी चौहटे और दण्ड-कलश युक्त जिनालय है जिन पर ध्वजाएँ फहराती है। इस नगरी के पुरुष देव और स्त्रियाँ अप्सरा तुल्य है। जल से लबालब भरे हुए सरोवरों में हंस आदि पक्षी कल्लोल करते है, फल फूलों से लदे हुए वृक्ष बारहो मास हरे भरे रहते है, टहूका करती हुई कोयल एवं अन्य पक्षी गण निर्भीक निवास करते हैं। इस नगरी का राजा मकरध्वज शूरवीर और दयालु था। राजा का वास्तविक गुण क्षमा ही है, यह बतलाने के लिए कवि ने निम्नोक्त दोहा उद्धृत किया है :—

"उदै अटक्कै भूप नहीं, पहिरया नांही रूप।
खूँद खमै सो राजवी, निरख सहै सो रूप ॥"

राजा की राणी लक्ष्मीवती पतिव्रता और चौसठ कलाओं में प्रवीण धर्मिष्ठा सुन्दरी थी। सासारिक सुख उपभोग करते हुए रानी के गर्भ में शुभ स्वप्न सूचित पुत्र आकर अवतीर्ण हुआ। गर्भकाल पूर्ण होने पर रानी ने सुन्दर पुत्र को जन्म देकर इस दृष्टान्त को चरितार्थ कर दिया कि दीपक से दीपक प्रकट होता है। राजा ने वड़े उत्साह से पुत्र जन्मोत्सव किया घर घर में तोरण लगाये गए, दान दिया गया। दसोटन करने के बाद उत्तम लक्षण वाले पुत्र का नाम उत्तमकुमार रखा गया। उत्तमकुमार चन्द्रकला की भाति धाय माताओ द्वारा पालित पोषित होकर क्रमशः आठ वर्ष का हुआ। राजा ने उसे पाठशाला में पढ़ने के लिए भेजा। थोड़े दिनों में वह सारे छात्रो से आगे बढ़ कर समस्त कला कौशल मे निष्णात हो गया।

कुमार वड़ा सदाचारी था, वह सत्यवादी, नीतिवान और दयालु था। वह चोरी, परदारागमन आदि सभी दुर्व्यसनों से विरत, धीर, वीर, गम्भीर दीन दुखियों का उपकारी होने के साथ-साथ अपने इष्ट-मित्रो के साथ खेल कूद में मस्त रहता था।

एक दिन रात में सोये हुए कुमार के मन मे विचार आया कि मैं अव तरुण हो गया। इस अवस्था मे हाथ पर हाथ धर घर मे वैठे रहना कायर का काम है। कहा भी है कि—

गुण भमतां गुणवंत नै, वैठां अवगुण जोय
वनिता नै फिरिवौ बुरौ, जो सुकुलीणी होय।

कोक परि विहू वोक करतो, विरह कलणइ हुँ कली ।
काढियइ तिहाँ थी वाह झाली, करूणा रसनइ अटकली॥

रौद्र

अकुलाय धरणि तरुणि तरणी, किरण थी, शोपत धरैं ।
उपपति परइ घन कन्त अलगु, करी घन वेदन करैं ॥
तिम तुम्हे पणि विरह तापइ, तापवउ छउ अतिघणुं ।
चांद्रणी शीतल झाल पावक, परइं कहि केतउ भणुं ॥

वीररस-कार्तिक

काती कौतुक साभरइ, वीर करइ सग्रामो जी ।
विकट कटक चाला घणुं तिम कामी निज धामोजी॥
निज धाम कामी कामिनी वे, लडइ वेधक वयण सु ।
रणतूर नेउर खड्ग वेणी, धनुप-रूपी नयण सु॥

भयानक मगसिर

भयानक रसइ भेदियउं, मगिसिर मास सनूरो जी ।
माग सिरहि गोरी धरइ, वर अरुणि मां सिन्दूरो जी ॥
सिन्दूर पूरइ हर्प जोरइ, मदन झाल अनल जिसी ।
तिहा पड़इ कामी नर पतगा, धरी रंगा धसमसी ॥

अद्‌भुत हेमन्त व माघ

माघ निदाघ परइ दहै, ए अद्‌भुत रस देखु जी ।
शीतल पणि जडता घणुँ, प्रीतम परतिख पेखुं जी॥

फाल्गुन

सहज भाव सुगन्ध तैलइं, पिचरकी सम जल रसइं ।
गुण राग रग गुलाल उडइ, करुण ससवोही वसइ ॥

परभाग रंग मृदंग गूंजइ, सत्व ताल विशाल ए।
समकित तंत्री तंत झणकइ, सुमति सुमनस माल ए॥

चैत (वसन्त)

चैत्रइ विचित्र थइ रही, अंबतणी वनरायोजी।
थुड शाखा अंकुरित थइ, सोह वसन्तइ पायो जी॥
पाई वसंतइ सोह जिणपरि, प्रियागमनइं पदमिनी।
सिणगार विन पिण मुदित होवइ, प्रेम पुलकित अंगिनी॥

आगे चल कर कवि ने वैशाख और ज्येष्ठ महीना का भी सुन्दर वर्णन किया है। इसी प्रकार इस ग्रन्थ के पृ० ६१ में प्रकाशित नेमि राजिमती बारहमास मे भी प्रकृति और बारहमास का सुन्दर वर्णन किया है पाठकों को स्वयं पढ़कर रचनाओं का रसास्वादन करना चाहिए।

स्नेह निवारणे स्थूलिभद्र सभाय मे कहा है कि :—

'नेह थी नरक निवास, नेह प्रवल छइ पास
नेह देह विनाश, नेह प्रवल दुख रास
वाल्हानइ वउलावता रे, पीड़इ प्रेम नी झाल
हीयड़ौ फाटइ अति घणु रे, नाखइ विरह उछाल
वलतां भुंई भारणी हुवै रे हां, अंग तपइ अंगार
आंखड़ियें आंसू झरइ रे हां जिमपावस जलधार
मत किणही सु लागज्यो रे, पापी एह सनेह
धुखइ न धुंओ नीसरइ रे हा, बलइ सुरगी देह'

कविवर विनयचन्द्र की समस्त रचनाओं में विस्तृत रचना उत्तमकुमार चरित्र है जिसमें सदाचार को पोषण करने वाला उत्तमकुमार का उद्दात चरित्र है, जिसका सार यहाँ दिया जा रहा है।

अतः मुझे पिता द्वारा उपार्जित लक्ष्मी का उपभोग न कर भ्रमण के हेतु निकल पडना चाहिये। वह देशाटन की उमंग में स्वजनों की चिन्ता छोडकर हाथ मे तलवार लेकर अपने भाग्य परीक्षा के हेतु प्रवास मे निकल पडा। वह कितने ही जंगल, पहाड और नदियों को पार करता हुआ कौतुकवश धूप और लू की गर्मी मे सुख-दुख सहन करता हुआ आगे बढ़ता ही गया। उसे कहीं तो भयानक अटवी मिलती तो कहीं हरे भरे वृक्ष और लहराते हुए सुन्दर सरोवर जहाँ कमलों की सौरभ मस्तिष्क को ताजा बना देती। अनुक्रम से अनेक ग्राम नगरों को उल्लंघन करता हुआ उत्तमकुमार मेवाड देश की राजधानी चित्तौड जा पहुँचा। यहाँ का राजा महासेन प्रबल प्रतापी और समृद्धिशाली होने के साथ साथ धर्मात्मा भी था। सब प्रकार से सुखी होने पर भी राजा सन्तान सुख से वंछित था। दैव की गति विचित्र है, कवि कहता है कि—

"सुखिया देखि सकै नहीं, दोषी दैव अकज्ज
सपति द्यै तो सुत नहीं, इण परि करै निलज्ज
इक अवनीपति सुतबिना, वलि वैस्या मे वास
नदी किनारै रूंखडा, जद तद होइ विणास"

राजा ने सन्तानोत्पत्ति के लिए पर्याप्त उपाय किये पर वह असफल रहा। एक दिन वह वन मे घूमने के लिए सपरिवार मन्त्री आदि को साथ लेकर निकला। राजा नीले घोड़े पर आरूढ़ था, उसने गुण लक्षण सम्पन्न घोड़े की बार-बार गति-

भंग होते देख कर मंत्री से पूछा—इस घोड़े की किशोर वय में यह दशा क्यों ? राजा के वार वार पूछने पर भी मंत्री आदि कोइ भी जव उसकी जिज्ञासा का समुचित उत्तर न दे सका तो राजा को कष्ट होते देख उत्तमकुमार ने आकर कहा—प्रभो ! मैं परदेशी हूं, पर अपनी मति के अनुसार वतलाता हूं कि इसने भैंस का दूध वहुत पिया है, वह वायुकारक होता है इसी से इसकी गति मे चंचलता नहीं है। राजा ने कहा—वत्स ! तुम वड़े ज्ञानी हो, तुमने कैसे जाना ? वस्तुतः यह अश्व वाल्यकाल में मातृविहीन हो गया तव इसका ऊपरी दूध से ही पालन पोपण हुआ था। उत्तमकुमार के अश्वपरीक्षा-ज्ञान से प्रभावित होकर राजा ने कहा—वेटा ! इतने दिन मैं निःसन्तान था अव तुम भाग्यवश आ मिले तो यह सव राज पाट सम्भालो, लक्षणों से तुम राजकुमार ही लगते हो। अतः निःसंकोच राज्य भार ग्रहण करो। मैं ज्ञानी गुरु के पास दीक्षित होकर आत्म-साधन करूँगा। उत्तमकुमार ने कहा—अभी तो मै प्रवास में हूँ, लौटते समय आपके चरणो मे उपस्थित होऊँगा।

उत्तमकुमार चित्तौड से अकेला चल पड़ा और कुछ दिनों में भरुच्छ (भरौंच) जा पहुँचा। दर्शनीय स्थानों का अवलोकन करते हुए वह मुनिसुव्रत भगवान के मन्दिर मे पहुँचा और पूजा स्तुति द्वारा अपना जन्म सफल किया। फिर सरोवर के तट पर जाकर वैठा तो पनिहारिन लोगों से सुना कि कुवेरदत्त व्यवहारी पांचसौ प्रवहण भर के आज ही समुद्र यात्रार्थ रवाने

हो रहा है। कौतुकी उत्तमकुमार भी सायात्रिक की अनुमति लेकर प्रवहण पर आरूढ़ हो गया। शुभ मुहूर्त मे प्रवहण चल पड़े, कुछ दिनो मे पीने का पानी समाप्त हो जाने से जल-संग्रह करने के लिए शून्य द्वीप मे जहाज रोके गए। सब लोग जब पानी की खोज मे उतरे तो भ्रमरकेतु नामक राक्षस अपने साठ हजार साथियों के साथ आकर लोगो को पकड़ कर तंग करने लगा। साहसी उत्तमकुमार तुरन्त द्वीप मे उतर आया और ललकार कर अकेला ही राक्षस सेना के साथ युद्ध करने लगा। उसने जिस वीरता के साथ युद्ध किया, भ्रमरकेतु कायरतापूर्वक भग गया और उसकी सेना तितिर-बितिर हो गई। राक्षस को जीतकर उसने समुद्र तट पर जाकर देखा तो सारे जहाज रवाना हो चुके थे। कुमार ने सोचा—'लोग कितने स्वार्थी और कृतघ्न होते हैं ? दूसरे ही क्षण मन में विचार आया कि विचारे भया-कुल होकर भग गए, इसमें उनका कोई दोष नहीं, मेरे पूर्व जन्म के पापो का उदय है। इसके बाद उसने एक वृक्ष पर ध्वजा बाध दी जिससे किसी यात्री-जहाज को दूर से उसकी उपस्थिति मालूम हो जाय। वह भगवान के भजन करता हुआ फलाहार से अपना निर्वाह करने लगा।

एक दिन द्वीप की अधिष्ठातृ देवी ने कुमार के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उससे बहुत ही अनुनय पूर्वक प्रेम याचना की। कुमार ने कहा—माता तुम देवी हो! मैं परनारी सहोदर हूँ! मेरे से तुम्हारा किसी भी प्रकार कार्य सिद्ध नहीं होगा। अत'

नरक परिणामी अनुचित अध्यवसायो को त्याग दो! देवी ने आज्ञा न मानने पर उसे तलवार द्वारा मार डालने की धमकी दी। परन्तु कुमार को अपने निश्चय पर अटल देखकर संतुष्ट चित्त से देवी ने कुमार के शील गुण की स्तवना करते हुए वारह कोटि रत्न वृष्टि की। इसके वाद समुद्र में जाते हुए जहाज देखकर कुमार ने जहाज रोकने के लिए पुकारा। लहकती हुई ध्वजा के सकेत से समुद्रदत्त जहाजों को किनारे लगाकर कुमार से मिला और सारा वृतान्त ज्ञातकर उसे अपने जहाज में वैठा लिया। कुछ दिन में जल समाप्त हो जाने से व्याकुल होकर सभी यात्रियों ने शास्त्रज्ञ निर्यामक से जल प्राप्ति का उपाय पूछा। उसने कहा—थोड़े समय मे वेल उतरने पर स्फटिक रत्नमय पर्वत प्रगट होगा जिस पर सुस्वादु जल का कुंआ है। पर वहाँ भ्रमर-केतु नामक अति क्रूर और मांसभोजी राक्षस रहता है। समुद्र-देवता के समक्ष उसने प्रतिज्ञा कर रखी है कि प्रवहण पर आरूढ़ यात्री को वह नहीं मारेगा। इस प्रकार वातें चल रही थी कि इतने में पर्वत प्रगट हो गया। सामने कुँआँ दीखने पर भी भय के वशीभूत होकर कोई नीचे नहीं उतरा। कुमार ने सवको साहस वन्धाकर जल लाने के लिए प्रेरित किया और सव की सुरक्षा का उत्तरदायित्व अपने पर ले लिया। लोगों ने रस्सी वांध कर जल-पात्रों को कुँए मे डाला पर कुँआ जल से भरा हुआ होने पर भी किसी को एक वून्द पानी नहीं मिला। जव राक्षस के भय से कोई कुँए मे उतरकर जलोद्‌घाटन के लिए प्रस्तुत नहीं हुआ

तो लोकोपकार के हेतु कुमार स्वयं रज्जु के सहारे कुंए में प्रविष्ट हो गया। उसने देखा कि सोने की जाली से समूचा जल आच्छादित है तो तारों को इधर-उधर करके जल निकालना सुगम कर दिया। उसने लोगों को जल भरने के लिए कहा तो सब लोग कुमार के सद्गुणों की प्रशंसा करते हुए जल भरने लगे। कुमार अपने परोपकारी कृत्य के लिए आत्म-सन्तोष अनुभव करने लगा।

कुमार ने कुंए मे कंचनमय सोपान-पक्ति देखी, वह कौतुक-वश उसी मार्ग से आगे वढा और एक भव्य प्रासाद के पास जा पहुँचा जिसके आगन मे रत्न जड़े हुए थे उसकी प्रथम भूमि स्वर्ण-मण्डित/थी दूसरी भूमि मे मणिमाणिक और तीसरी मे मोती चमक रहे थे इसो प्रकार समृद्धिपूर्ण वह सतमंजिला मकान था। जव कुमार तीसरी भूमि मे पहुंचा तो उसने एक वृद्धा को वैठे देखा। वृद्धा ने कुमार को देखते ही कहा—अरे मूर्ख ! तुम यहाँ भ्रमरकेतु राक्षस के घर अकाल मौत मरने के लिए क्यो आये हो? कुमार ने राक्षस को अपने से पराजित वताते हुए वृद्धा से परिचय व प्रासाद का रहस्य पूछा, तो उसने कहा—यहाँ से राक्षसद्वीप निकट ही है और वहाँ लंकापति भ्रमरकेतु राज्य करता है। उसे अपनी पुत्री 'मदालसा' अत्यन्त प्रिय है जो अद्वितीय सुन्दरी और गुणवती है। एक दिन भ्रमरकेतु ने अपनी पुत्री के विवाह के सम्बन्ध में। मित्तिक से पूछा तो उसने कहा—इसका पति वह राजकुमार होगा जो तीन खण्ड का अधिपति होगा। नैमित्तिक

की बात से भ्रमरकेतु यह ज्ञातकर चिन्तित हुआ कि देवकुमर के योग्य मेरी पुत्री को मानव क्यो व्याहेगा ? उसने तत्काल इस सुरक्षित कूपद्वार वाले प्रासाद में कुमारी मदालसा को मेरे संरक्षण में रख दिया ताकि उससे कोई भी मनुष्य व्याह न कर सके।

भ्रमरकेतु ने अभी फिर दूसरे ज्योतिषी से मदालसा के व्याह के सम्बन्ध में प्रश्न किया तो उसने भी उपर्युक्त बात कही। जब प्रतीति के लिए राक्षसेन्द्र ने उसे पूछा तो वह कहने लगा— सायात्रिक जन को मारने के लिए जाने पर द्वीप में उस अकेले ने तुम्हें जीता है। यह सुनकर भ्रमरकेतु सदलबल उसे मारने की प्रतिज्ञा कर यहाँ से गया है पर आज एक महीना हो गया, कोई खबर नहीं मिली ? वृद्धा से उपर्युक्त वृतान्त सुनकर कुमार सोचने लगा—वह लाख प्रतिज्ञा करे, मेरा कुछ भी नहीं विगाड़ सकता, मैं उसे पराजित करके आया हूं, मेरे सामने उसकी क्या विसात है। इतने ही मे मदालसा वहाँ आ पहुँची। वे दोनों परस्पर एक दूसरे के सौन्दर्य को देखते ही मुग्ध हो गए। मदालसा ने ऊपर जाकर वृद्धा को अपने पास तुरन्त बुलाया और पूछा कि तुम्हारे पास शुभलक्षण वाला पुरुष कौन खड़ा था ? वृद्धा ने जब दोनों का परस्पर प्रेम जाना तो उनका गन्धर्व विवाह करा दिया और मणिरत्नादि विविध वस्तुएँ देते हुए वृद्धा ने उन्हें आशीर्वाद दिया। मदालसा के साथ उत्तमकुमार ने घूम-फिरकर वाग-बगीचे, जलाशय आदि देखे व सुखपूर्वक रहने

लगा। मदालसा भी जैन धर्मपरायण और सुशील थी। कवि ने मदालसा के अप्रतिम सौन्दर्य का वर्णन १२वीं ढाल मे किया है (देखो पृ० १३५) धर्मिष्टा नारी के वर्णन मे कवि ने निम्न कवित्त कहा है —

नारी मिरगानयन, रगरेखा, रस राती;
वदे सुकोमल वयण महा भर यौवनमाती।
सारद वचन स्वरूप, सकल सिणगारे सोहै,
अपछर जेम अनूप मुलकि मानव मन मोहै।
कलोल केलि वहु विध करै, भूरिगुणे पूरण भरी,
चन्द्र कहै जिणधरम विण कामिणी ते किण कामरी।

कवि विनयचन्द्र ने यहा प्रथम प्रकाश को १४ ढालों मे पूर्ण करते लिखा है कि अपने ज्ञानवृद्धि के हेतु मैंने यह प्रथम अभ्यास किया है।

सिद्ध पद का स्मरण और आत्मतत्व के विचारपूर्वक कवि द्वितीय प्रकाश प्रारम्भ करता है। उत्तमकुमार ने वैरी के स्थान मे अधिक रहना अनुचित जान कर मदालसा से विदेश गमनार्थ सीख मांगी। उसने कहा—प्रियतम! मैं तो छाया की भांति तुम्हारे साथ रहूंगी और यहाँ मेरे रहने का कोई प्रयोजन भी तो नहीं है। कुमारी ने अपने पांच रत्न और वृद्धा को साथ लिये और एकमत से तीनों कूप मे आ गए। समुद्रदत्त के आदमी उस समय जल निकाल रहे थे तो रस्सी के सहारे तीनों व्यक्ति वाहर निकल आये। लोगों ने कुमार के मुख से सारा वृतान्त ज्ञात कर

बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की और सब लोग प्रवहणारूढ़ होकर रवाना हो गए।

कुछ दिन बाद फिर जहाजों का पानी समाप्त हो गया। जल के विना लोगों को दुखी देखकर मदालसा ने लोगों का उपकार करने के लिए पतिसे प्रार्थना की। उत्तमकुमार ने कहा— जल विना सबके ओष्ट सूख रहे हैं, क्या उपाय किया जाय ? यदि तुम कुछ कर सको तो सबका दुःख दूर हो। मदालसा ने अपने आभूपर्णा का करण्डिया खोलकर उसमें से पाच रत्न निकलवाये और उनके गुण बतलाते हुए कहा—प्रियतम। ये पाच रत्न देवाधिष्ठित हैं, इनसे स्वर्णथाल, प्याला, चरी आदि भरे हुए भोजन, मणि रत्नादि के आभूषण, शयनासन, मूँग गेहूँ आदि धान्य तथा अग्नि रत्न से मिष्टान्न सुस्वादु व्यंजन प्राप्त होते है। गगन-रत्न से वस्त्र, वात-रत्न से अनुकूल वायु एवं नीर-रत्न को आकाश में रखकर पूजा करने से वाछित जल वृष्टि होती है। कुमार अपनी धर्मात्मा पत्नी के गुणों से प्रसन्न हो नीर-रत्न को स्तम्भपर बाँध कर बड़े समारोहसे पूजा की जिससे मेघवृष्टि हुई और लोगों ने अपने समस्त जलपात्र भर लिए। फिर मार्ग मे धनधान्य की आवश्यकता पड़ने पर कुमार ने दूसरे रत्नों के प्रभाव से विविध उपकार किये। सब लोग अपने उपकारी उत्तमकुमार का बड़ा आदर करने लगे। समुद्रदत्त ने जब से मदालसा को देखा, वह उस पर मुग्ध होकर उसे प्राप्त करने के लिए नाना प्रकार के घात सोचने लगा।

समुद्रदत्त ने उत्तमकुमार के प्रति बडी आत्मीयता प्रकट की और उसके साथ इतनी घनिष्ठता पैदा कर ली कि दोनों का अधिकांश समय एक साथ ही व्यतीत होता था। मदालसा ने चेतावनी देते हुए कहा—प्रियतम! यह सेठ ऊपर से मधुर-भाषी पर अन्तर मे बड़ा कलुषित और कपटी है। आप इसका तनिक भी विश्वास न करें, कहीं यह धोखा दे देगा। यतः—

मोर मधुर स्वर करि नै बोले, रंग-सुरंगो होइ।
पूछ सहित विषधर नं खायै, इण दृष्टान्ते जोइ॥

यह मुझे हरण करने के लिए तुम्हारे से प्रेम दिखाता है है क्योंकि 'दाढ गले सहुनी गुल दीठा, तेहवो नारि शरीर' अतः आप सावधान रहें। काले मस्तक का मानव बडा कपटी होता है कवि ने मदालसा के मुख से एक राजकुमार का दृष्टान्त कहलाया है जो अश्वारूढ होकर वन मे गया। वनदेव ने वानर का रूप करके राजकुमार को वृक्ष पर आश्रय दिया और रात्रि मे सिंह के उपस्थित होने पर जब उससे राजकुमार को मागा तो उसने नहीं दिया पर जब वानर राजकुमार के गोद मे सो गया तो सिंह की माग पर अपने अश्व की रक्षा के बदले वानर को वृक्ष से नीचे फेंक दिया। कवि ने इतनी कथा लिखकर आगे का चार श्लोकों आदि का कथा प्रसंग व्याख्याता को मौखिक विवेचन करने की सूचना दी है। मदालसा ने कहा प्रियतम! सावधान रहें ताकि भविष्य में पश्चाताप न हो। सौजन्यमूर्ति उत्तमकुमार ने कहा—सेठ धर्मात्मा है। चन्द्र से अग्नि कैसे

निकल सकती है ? कह कर पत्नी के वचनों पर ध्यान नहीं दिया।

एक दिन समुद्र में जल कान्तिमय पर्वत आदि कौतुक दिखाने के वहाने अवसर पाकर समुद्रदत्त ने कुमार को समुद्र में गिरा दिया। उसे समुद्र में गिरते ही एक वड़े मच्छ ने निगल लिया और गहरे जल में चला गया। फिर समुद्र-तरंगों के साथ कुमार के पुण्य से वह मच्छ समुद्र तट जा पहुँचा जिसे धीवर ने जाल में पकड लिया। जव मच्छ का उदर चीरा गया तो उत्तम-कुमार विना किसी कष्ट से उसमें से निकल गया। धीवर लोगों ने कुमार को अपना स्वामी स्थापन कर दिया और वह उनकी वस्ती में फलाहार द्वारा अपना जीवन निर्वाह करने लगा।

इधर उत्तमकुमार को समुद्र में गिराकर सेठ कपट-विलाप करने लगा। जव मदालसा ने कोलाहल में कुमार के समुद्रपतन का सुना तो वह समुद्रदत्त के इस अकृत्य को ज्ञात कर नाना विलाप करते हुए अपना धैर्य्य खो बैठी। वृद्धा ने उसे आत्मघात महा-पाप वतलाते हुए हंस हंसी का दृष्टान्त देकर शान्त किया। निर्लज्ज समुद्रदत्त मदालसा को सान्त्वना देने के वहाने आया और उसकी प्रशंसा करते हुए भावी प्रवल बता कर अन्त में उसे अपनी गृहिणी बन जाने की प्रार्थना की। मदालसा ने शील रक्षा के हेतु छल का आश्रय लेकर उसे कहा कि कुछ दिन ठहरिये, मेरे पति को दस दिन हो जाने दीजिये फिर किसी नगर मे जाकर राजा के समक्ष आपका कथन स्वीकार कर

लूंगी। सेठ भी मदालसा के इन वचनों से संतुष्ट हो गया। वृद्धा ने मदालसा के चातुर्य की प्रशंसा की। सेठ के जहाज जब उल्टे मार्ग चलने लगे तो मदालसा ने पवन-रत्न की पूजा की जिससे अनुकूल वायु द्वारा जहाज मोटपल्ली वेलाकुल के तट पर आ लगे। यहाँ का राजा नरवर्म वडा धर्मात्मा और न्यायप्रिय था। मदालसा को लेकर सेठ राजसभा मे पहुँचा और राजा को भेंट पुरष्कार से प्रसन्न करके निवेदन करने लगा—राजन्! मुझे यह महिला चन्द्रद्वीप मे मिली है, इसका पति समुद्र मे गिर कर मर गया यह पवित्र है और आपकी आज्ञा से मेरी गृहिणी बनेगी। मदालसा ने कहा—मूर्ख! क्यों मिथ्या अंट संट वकता है, अगर राजा न्याय करे तो तुम्हारे दाँत तोड दे। उसने फिर राजा को सम्बोधन कर कहा—महाराज! इस पापी ने मेरे पति को समुद्र मे गिरा दिया है, मैंने अपनी शील रक्षा के हेतु इसे भुला कर आपके सामने उपस्थित किया है अब आप जैसे महा-पुरुष अन्याय नहीं करेंगे क्योंकि वैसा होने से मेरु पर्वत कम्पाय-मान हो जाय एवं पृथ्वी पाताल को चली जाय। अतः दुष्ट को यथोचित शिक्षा दे। राजा ने क्रुद्ध होकर समुद्रदत्त के पाँचसौ जहाज जब्त कर लिये और मदालसा से कहा—वेटी! तुम मेरी पुत्री त्रिलोचना के पास उसकी वहिन की तरह आराम से रहो। चिन्ता छोड़कर दान पुण्य करती रहो। यदि किसी तट पर तुम्हारा पति पहुँचेगा तो उसका अनुसधान करवाया जायगा।

मदालसा को राजा ने धर्मपुत्री करके माना। वह पंच रत्नों

के प्रभाव से दान पुण्य करती हुई सती स्त्रियोचित नियमों का पालन करती हुई काल निर्गमन करने लगी। उसने स्नान, शृंगारादि का त्याग कर दिया और प्रतिदिन नीरस आहार का एकाशना करके भूमि शयन स्वीकार कर लिया। वह पुरुष मात्र की ओर नजर उठाकर भी नहीं देखती एवं निरन्तर नवकार मन्त्र का स्मरण किया करती थी।

एक दिन धीवर लोगों के साथ उत्तमकुमार भी मोटपल्ली आया और नगरी का अवलोकन करता हुआ जहाँ राजा नरवर्मा अपनी पुत्री के लिए प्रासाद बनवा रहा था, वहाँ आकर देखने लगा। कुमार वास्तुशास्त्र मे निष्णात था, उसने स्थान-स्थान पर सूत्रधारों से वास्तु-दोप सुधारने के लिए निराभिमानता से उचित परामर्श दिये जिससे प्रसन्न होकर सूत्रधारो ने कुमार को अपने पास रख लिया। कुमार के सान्निध्य से थोड़े दिनों में वह सुन्दर प्रासाद वन कर तैयार हो गया।

एक वार राजा नरवर्मा प्रासाद निरीक्षणार्थ आये, वे उत्तमकुमार को उच्चासन पर वैठे देखकर सोचने लगे कि यह रूप और गुण से राजकुमार मालूम होता है। उन्होने कुमार से परिचय पूछा तो उसने कहा—राजन्! मैं परदेशी हूं और आपके नगर में निवास करता हूं। राजा महल देखकर चला गया। वसंत ऋतु थी वन-वाटिका की शोभा अवर्णनीय थी, कवि ने ढाल १३वीं मे वसन्त ऋतु का अच्छा वर्णन किया है। राजकुमारी भी क्रीड़ा के हेतु वगीचे मे आई, उसे साँप डस गया। सर्वत्र हाहाकार छा

गया। कुमारी के विष व्याप्त शरीर को राजमहल में लाकर विषापहार के हेतु गारुडिक लोगों को बुलाया गया। उनके लाख उपाय करने पर भी जब कुमारी निर्विष नहीं हुई तो राजा ने राजकुमारी का विष उतारने वाले को अर्द्धराज्य व कुमारी से पाणिग्रहण कर देने की उद्घोषणा करवा दी। उत्तमकुमार ने पटह स्पर्श किया और उसने मन्त्र विद्या के बल से राजकुमारी त्रिलोचना को सचेत कर दिया। राजा ने अपने वचनानुसार शुभ मूहुर्त्त मे उत्तमकुमार के साथ त्रिलोचना का पाणिग्रहण करा दिया। हस्तमिलाप छुडाने के समय राजा ने उसे अर्द्ध राज्य दे दिया। उत्तमकुमार अपनी प्रिया के साथ नवनिर्मित प्रासाद में रहने लगा। यहाँ दूसरा अधिकार समाप्त हो जाता है।

तीसरे अधिकार के प्रारम्भ मे कवि भगवान महावीर को नमस्कार कर श्रोताओं को आगे का सम्बन्ध सुनने का निर्देश करता है। मदालसा ने दासी से कहा—प्रियतम का अबतक कोई पता नहीं लगा अतः वे समुद्र मे डूब गए मालूम होते हैं। मैं अब किस आशा से जीवित रहूं? मैंने इतने दिन आविल तपश्चर्या की, जिनालय एवं स्वर्ण, रत्नमय प्रतिमाएं बनवाई, त्रिकाल पूजा की। साधु व स्वधर्मियों को दान पुण्य आदि धर्माराधन करते हुए प्रतीक्षा की पर अब तो पाँचों रत्न त्रिलोचना बहिन-को सम्भला कर संयम-मार्ग स्वीकार कर लेना ही मेरे लिये श्रेयस्कर है। वृद्धा ने कहा—जिस परदेशी ने त्रिलोचना से व्याह किया है, सारे नगर मे उसकी प्रशंसा सुनाई देती है, मेरी आत्मा

साक्षी देती है कि वह अवश्य तुम्हारा पति ही होगा। यदि आज्ञा दो तो जाकर प्रतीति कर आऊं? वह मदालसा की आज्ञा लेकर त्रिलोचना के घर गई और त्रिलोचना के भाग्य की प्रशंसा करते हुए उसके प्रियतम को देखने की इच्छा प्रकट की। त्रिलोचना ने कहा मेरे प्राणाधार महल में सोये हुए हैं, जाकर देख आओ। वृद्धा ने उत्तमकुमार को पलंग पर सोये हुए देखा और मदालसा से आकर कहा—मुझे तो तुम्हारे पति जैसा ही लगता है। यह सुनकर मदालसा के हृदय में प्रेम जगा और उससे मिलने को उत्सुक हुई। फिर दूसरे ही क्षण विना प्रतीति किये परपुरुष के प्रति आकृष्ट होनेवाले पापी मन को धिक्कारा। इधर उत्तमकुमार ने वृद्धा को देख कर जाते हुए देखा तो त्रिलोचना से पूछा कि अभी महल में कौन आई थी, मुझे पता नहीं लगा। त्रिलोचना ने कहा—मेरे से भी सौन्दर्य व गुणों मे उत्कृष्ट एक परदेशिन यहां आई है जिसे मैंने वहिन करके माना है वह एकान्त मे रहकर धर्म ध्यान करती है परोपकारिणी तो वह अद्वितीय है उसके पास दिखता तो कुछ नहीं पर न जाने उसके पास क्या सिद्धि है दान पुण्य में अपार धनराशि व्यय कर रही है। पति के वियोग मे उसने शरीर एकदम सुखाकर कृश कर लिया है। यह वृद्धा जो आपको देख गई उसी की सखी है।

कुमार ने जब यह वृतान्त सुना तो उसे अपनी प्रियतमा मदालसा का ख्याल आया और उससे मिलने को उत्सुक हुआ। फिर दूसरे ही क्षण सोचा—उसे न जाने पापी समुद्रदत्त ने कहीं

लेजाकर किस विपत्ति में डाला होगा। व्यर्थ ही परस्त्री पर मोह उत्पन्न होने का पश्चाताप करता हुआ मध्यान्हकाल में जिन-पूजा के हेतु कुसुम, चन्दन आदि लेकर जिनालय में गया। बहुत विलम्ब हो जाने पर भी जब कुमार वापस नहीं लौटा तो त्रिलोचना ने चिन्तित होकर दासी को भेजा। खबर मिली कि उसे न तो किसी ने जाते देखा और न आते ही। त्रिलोचना पति-वियोग से दुखी होकर विलाप करने लगी। सर्वत्र खोज कराई गई पर कुमार का कोई पता नहीं लगा।

इसी नगरी में महेश्वरदत्त नामक वणिक रहता था जिसके ५६ कोटि स्वर्ण-मुद्राएं निधान में, ५६ कोटि उधार में, एवं ५६ कोटि मुद्राएं व्यापार में थी। उसके ५०० जहाज, ५०० गोकुल, ५०० हाथी, ५०० घोड़े, ५०० पालकी, ५०० कोठे, ५०० सुभट व पाच लाख सेवक थे। उसके कोई उत्तराधिकारी पुत्र नहीं था, सहस्रकला नामक एक मात्र गुणवती कन्या थी जिसके लिए योग्य वर प्राप्त होने पर पाणिग्रहण करवा के स्वय दीक्षित होने की सेठ महेश्वरदत्त की चिर-कामना थी। उसने अपनी ६४ कला निधान पुत्री को तरुण वय प्राप्त हो जाने पर भी जब योग्य वर न मिला तो एक नैमित्तिक से अपने भावी जामाता के विषय में प्रश्न किया। नैमित्तिक ने कहा—जो व्यक्ति राज सभा में त्रिलोचना के पति और मदालसा का पूरा वृत्तान्त कहेगा, वही तुम्हारी पुत्री का वर होगा और आज से एक महीने बाद वह मिलेगा। वही अखण्ड प्रतापी सारे राज्य

का अधिपति होगा। ज्योतिषी के विवाह लग्न देने पर सेठ ने स्वजन सम्बन्धियों को निमन्त्रित कर विवाहमण्डप की रचना की एव नाना प्रकार की विवाह सामग्री का संचय बड़े जोर-सोर से करना प्रारम्भ कर दिया। नगर में वर के बिना व्याह मंडने की बडी भारी चर्चा चल रही थी। राजा ने जब यह बात सुनी तो उसने सेठ महेश्वरदत्त की वैराग्य-भावना की बड़ी प्रशंसा की और वह भी त्रिलोचना के पति की खोजकर उसे राजपाट देकर दीक्षा लेने का प्रबल मनोरथ करने लगा। राजा ने सर्वत्र उद्घोषणा करवा दी कि जो त्रिलोचना के पति व मदालसा का वृत्तान्त प्रकाशित करेगा उसे राज्याधिपति बनाने के साथ-साथ माहेश्वरदत्त की पुत्री सहस्रकला के साथ विवाह करा दिया जायगा। एक मास बीतने पर एक शुक ने आकर पटह स्पर्श किया और मानव भाषा मे बोलकर कहा मुझे राज-सभा मे ले जाओ मैं राजा के जमाता और मदालसा का सारा वृत्तान्त बताकर राजा का राज्य व सहस्रकला को प्राप्त करूँगा। सब लोग उसे कौतुकपूर्वक राजसभा मे ले आए। शुक ने मनुष्य की भाषा में कहा—परदे के अन्दर त्रिलोचना और मदालसा को बुलाकर उपस्थित कीजिए ताकि मैं सारा आख्यान कह सुनाऊँ। राजा ने कहा—तुम ज्ञान के बिना त्रियंच किस प्रकार सारी बातें जानते हो ? शुक ने कहा—"मैं त्रिकालज्ञ हूं, भूत भविष्य की सारी बातें बतलाने मे समर्थ हूं।" फिर शुक ने राजा और समस्त नागरिक लोगों के समक्ष अपना वक्तव्य प्रारम्भ किया—

वाराणसी के राजा मकरध्वज का पुत्र उत्तमकुमार भाग्य परीक्षा के लिए घर से निकलकर देशाटन करता हुआ भरुअछ आया और सुग्धद्वीप देखने के लिए जहाज मे बैठकर समुद्र के बीच पहुँचा। वहाँ जलकान्त पर्वत स्थित भ्रमरकेतु राक्षस कारित कुएं मे साहस पूर्वक उतर कर लंकापति की पुत्री मदालसा से उसने पाणिग्रहण किया। फिर अपनी स्त्री के साथ कूप-मार्ग से बाहर आकर समुद्रदत्त के वाहन मे आरूढ़ हुआ। मार्ग मे जल शेष हो जाने पर पंचरत्न के प्रभाव से सबको अशन पान से सन्तुष्ट किया। कुमार की संपदा और स्त्री को देखकर पापी सेठ ने उसे समुद्र में गिरा दिया। उसे गिरते ही मकर ने निगल लिया जिसे धींवर ने जाल मे पकड़कर उदर विदीर्ण कर कुमार को निकाला। वह एक दिन त्रिलोचना का प्रासाद देखने आया जिसका नव्य निर्माण हो रहा था। उसका राजकुमारी के साथ पाणिग्रहण हुआ और सुखपूर्वक रहने लगा और एक दिन वह जिन पूजा के हेतु घर से निकलकर जिनालय आया पूजनान्तर पुष्प करण्डिका मे वंशनलिका को खोल कर देखा तो उसमे रखे हुए जहरी सांप ने कुमार के हाथ मे डंक लगा दिया जिससे वह मूर्छित हो धराशायी हो गया। हे राजन्! मैंने मदालसा और त्रिलोचना के पति का सारा वृत्तान्त बतला दिया अब कृपाकर अपनी सत्य प्रतिज्ञानुसार मेरी आशा पूर्ण करें तथा सेठ से भी सहस्रकला कन्या दिलावें। ऐसा कहकर शुक के मौन धारण करने पर राजा ने उसे आगे बोलने को कहा

तो उसने कहा—आप अपना वचन पूर्ण नहीं करते तो मैं चला जाऊँगा और जंगल में फल-फूल वृत्ति से अपना उदरपूर्ण करूँगा। मैंने यह जान लिया कि मनुष्य मायावी होते हैं और स्वार्थ सिद्ध होने पर तत्क्षण बदल जाते हैं। यह कहकर जब शुक उड़ने लगा तो राजा ने रोक कर कहा—धैर्य्यधारण करो, राज्य अवश्य दूँगा, पर यह तो बतलाओ उत्तमकुमार कहाँ है? जीवित है कि नहीं? मेरी यह शंका दूर करो! शुक ने कहा—इतनी बात बताने पर भी जब कुछ नहीं मिला तो आगे बालुका को पीलने से क्या तेल निकलेगा? जब राजा ने राज्य व कन्या देने की स्वीकृति दी तो शुक आगे का वृतान्त बतलाने लगा—

'उसी समय अनंगसेना नामक सुन्दर गणिका वहा पहुंची और उसे विपापहार मणि प्रक्षालित जल द्वारा निर्विप कर दिया और अपने घर ले जाकर चौथी मंजिल के महल मे रखा। राजन्! मैंने दाक्षिण्यवश सारा वृत्तान्त बतला कर मूर्खता की अब यदि आप अपना वचन पूरा नहीं करते तो मैं जाता हूं, आपका कल्याण हो। राजा ने कहा—अर्द्ध चिकित्सा करके वैद्य नहीं जा सकता अतः अनंगसेना के घर मे कुमार को शोध कर लूँ फिर तुम्हें राज दूँगा।

राजा ने अपने कर्मचारियों को अनंगसेना के घर भेजा। वेश्या से राज-जामाता का अनुसन्धान पूछा तो वह चिन्तित और नीची नजर कर मौन हो गई। जब उत्तमकुमार वेश्या के

यहां न मिला तो राजा ने सचिन्त होकर शुकराज से ही प्रार्थना की कि तुम्ही सब स्पष्ट अनुसंधान कहो। उसने कहा—

अनंगसेना ने देखा राज-जामाता को यों घर में रखना मुश्किल है अत. उसे सर्वदा अपने यहां रखने के लिये उसके पैर मे मंत्रित डोरा बांधकर शुक बना दिया। उसने शुक को स्वर्ण पिंजड़े मे रखा। वह रात मे उसे पुरुष और दिन मे शुक बना देती है एवं गीतगान आदि से उसका मनोरंजन करती है। कुमार ने मन मे सोचा—कर्मगति बडी विचित्र है! मैंने ऐसा क्या पाप किया जिससे मनुष्य भव मे त्रियंच गति भोगनी पडती है। शायद मदालसा और पांचरत्न उसके पिता की आज्ञा विना ग्रहण करने का तथा वृद्धा के आने पर त्रिलोचना से उसकी सखी पर स्वस्त्री जानकर क्षणिक मानसिक पाप किया तो उसी के फलस्वरूप सांप न डस गया हो? कवि कहता है कि उत्तम पुरुष अपने थोड़े से अपराध को भी विशेप मानते हैं।

अनंगसेना के यहां रहते उसे एक मास हो गया आज वह दैवयोग से पिंजड़ा खुला छोडकर किसी काम में लग गई। शुक ने पटहोद्‌घोपणा सुनकर उसे स्पर्श किया और इस समय वह आपके समक्ष उपस्थित है। राजा ने हर्पित होकर उसके पैर का डोरा खोला तो वह तुरत उत्तमकुमार हो गया।

उत्तमकुमार को देखकर सर्वत्र आनन्द छा गया। मदालसा व त्रिलोचना के अपार हर्प का तो कहना ही क्या? सेठ माहेश्वरदत्त ने अपनी पुत्री सहस्त्रकला का कुमार के साथ पाणि-

ग्रहण कर दिया सारे नगर में आनन्द उत्सव मनाये गये। सुन्दरी गणिका अनंगसेना भी पातिव्रत नियम लेकर कुमार की चौथी स्त्री हो गई। राजा ने मालिन को बुलाकर धमकाया तो उसने समुद्रदत्त व्यवहारी द्वारा पाँचसौ मुद्रा प्राप्त कर लोभवश कुमार को मारने के लिए पुष्प-करंडिका में साँप रखने का दुष्कृत्य स्वीकार कर लिया। राजा ने समुद्रदत्त व मालिन को मृत्युदण्ड दिया पर उदारचेता कुमार ने अपना भाग्य-दोष वताते हुए उन्हें क्षमा करवा दिया। राजा ने समुद्रदत्त का सर्वस्व लूटकर अन्त में देश निकाला दे दिया।

राजा नरवर्मा ने उत्तमकुमार को राजपाट सौंप कर सेठ महेश्वरदत्त के साथ सद्गुरु के चरणों मे जाकर संयम-मार्ग स्वीकार कर लिया और शुद्ध चारित्र पालन कर कर्मों का क्षय किया। अन्त मे केवलज्ञान पाकर मोक्षगामी हुए। जव राक्षसेन्द्र भ्रमरकेतु ने नैमित्तिक से अपने वैरी का पता पूछा तो उसने कहा, वह तुम्हारी पुत्री को पंच रत्नो सहित व्याह कर ले गया और इस समय मोटपल्ली में है। जव भ्रमरकेतु ने दुर्गम चक्र कूप में पहुंचना असम्भव वतलाया तो उसने कहा कि जव वह अकेला था तव भी तुम उसका पराभव न कर सके तो अव तो वह प्रवल और जामाता भी हो गया। भ्रमरकेतु वैरभाव त्याग कर उत्तमकुमार से मिला और अपनी पुत्री तथा जामाता को आशीर्वाद देते हुए उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

एक दिन जब उत्तमकुमार राजसभा में वेठा था तो

वाराणसी से मकरध्वज का पत्र लेकर एक दूत उपस्थित हुआ, जिसमे अत्यन्त प्रेम पूर्वक लिखा था—'बेटा। तुम्हारे जाने के बाद हमने चारों ओर बहुत खोज की पर तुम्हारा कोई पता नहीं लगा। अब तुम शीघ्र आकर हमारा हृदय शीतल करो। मैं अब वृद्ध हो गया अतः तुम राज-पाट सम्भालो ताकि मैं आत्मकल्याण करूँ।

पितृ आज्ञा पाकर उत्तमकुमार का हृदय शीघ्र उनके चरणों मे उपस्थित होने को उत्सुक हो गया। उसने मन्त्री लोगो को राज्य भार सौंप कर अपनी चारों स्त्रियों को लेकर सैन्य सहित वाराणसी के प्रति प्रयाण कर दिया। मार्ग मे चित्रकूट जाकर राजा महासेन से मिला जिसने पूर्व निश्चयानुसार उत्तमकुमार को राज्याभिषिक्त कर स्वयं संयममार्ग स्वीकार कर लिया। उत्तमकुमार कई देशों मे अपनी आज्ञा प्रवर्तित कर सैन्य सहित गोपाचलगिरि की ओर बढ़ा। वहाँ के राजा वीरसेन को खबर मिलते ही चार अक्षौहिणी सेना के साथ सीमा पर आ डटा। परस्पर घमासान युद्ध हुआ, कवि ने १०वीं ढाल मे युद्ध का अच्छा वर्णन किया है। अन्त मे वीरसेन पराजित होकर जीवित पकड़ लिया गया। उसके आधीनता स्वीकार करने पर कुमार ने उसे छोड दिया। अपनी पराजय से वैराग्यवासित होकर उसने एक हजार पुरुषों के साथ सुविहित आचार्य युगन्धरसूरि के पास चारित्र ग्रहण कर लिया। थोड़े दिन बाद मार्ग के अभिमानी राजाओं को वशवर्त्ती कर उत्तमकुमार वाराणसी पहुंचा। उसके

स्वागत मे नगर को सजाकर वड़े भारी उत्सव समारोह किये गए। उत्तमकुमार अपने माता पिता की चरणवन्दना कर अत्यन्त प्रमुदित हुआ। अपने पुत्र को इतने वडे राज्य-विस्तार व चार रानियों सहित समागत देखकर माता-पिता को अपार हर्ष हुआ। राजा मकरध्वज ने कुमार को शुभमुहूर्त में राज्याभिषिक्त कर स्वयं दीक्षा ले ली।

अव उत्तमकुमार चार राज्यो का अधीश्वर था। उसके ४० लाख हाथी, ४० लाख घोड़े ४० लाख रथ व चार करोड पैदल सेना थी। वह ४० कोटि गामों का अधिपति था। उसने तीर्थयात्रा, जिनबिंव व प्रसादों के निर्माण तथा ग्रंथ भण्डार व स्वधर्मी वात्सल्य में अगणित धनराशि व्यय की। इस प्रकार चार रानियों के साथ सुखपूर्वक राज्य करने लगा। एक दिन केवली मुनिराज के शुभागमन होने पर राजा चरणवन्दनार्थ उपस्थित हुआ। उपदेश सुनकर राजा उत्तमकुमार ने केवली भगवान से पूछा—प्रभो! मैंने ऐसे क्या पाप-पुण्य किये जिससे इतनी ऋद्धि सम्पत्ति पाने के साथ-साथ समुद्र मे गिरा, मच्छ के पेट से निकलकर धीवर के यहाँ रहा एवं गणिका के यहाँ शुक पक्षी के रूप मे रहना पडा। केवली भगवान ने फरमाया—पूर्वकृत कर्म का विपाक उदय मे आने पर सुख-दुःख भोगना पड़ता है। कर्मों का प्रभाव जानने के लिए केवली भगवान ने राजा को पूर्व जन्म का सम्बन्ध कहा—हिमालय प्रदेश के सुदत्त ग्राम में धनदत्त नामक एक कौटुम्बिक रहता था जिसके चार

स्त्रियाँ थी, कर्मवश उसका सारा धन नष्ट हो गया। एक वार चोरों द्वारा वस्त्र लुटे हुए चार मुनिराज उसके गाँव मे आये जो ठण्ढ के मारे कांप रहे थे। धनदत्त कृपालु था उसने उन्हें वस्त्र दान दिया चारो स्त्रियों ने भी इस दान की वड़ी अनुमोदना की उसी के प्रभाव से तुम्हें चार महाराज्य मिले। एक वार किसी भव में तुमने मुनियो के मलिन शरीर को देखकर मच्छ जैसी दुर्गन्ध वतलाई जिसके कारण तुम्हें मच्छ के पेट में तथा धीवर के घर रहना पडा। इस भव से हजारवें भव पूर्व तुमने शुक को पिंजड़े मे वन्द किया था उसी कर्मों से तुम्हें शुक होना पड़ा। अनंगसेना ने पूर्वभव में अपनी सखी को शृंगार सजी हुई देखकर वेश्या शब्द से संवोधित किया जिसके कर्मोदय से वह वेश्या हुई।

राजा उत्तमकुमार अपना पूर्व भव सुनकर वैराग्यवासित हो गया। उसने अपने पुत्र को राजपाट सौंपकर चारों स्त्रियों के साथ संयम ले लिया। फिर निर्मल चारित्र पालन कर अनशन आराधना पूर्वक चार पल्योपम की आयुवाला देव हुआ। वहाँ से महाविदेह क्षेत्र मे उत्पन्न होकर सिद्ध बुद्ध होंगे।

कवि विनयचन्द्र ने सं० १७५२ मे पाटण में चारुचन्द्र मुनि कृत संस्कृत उत्तमकुमार चरित्र के आधार से यह रास-निर्माण किया है। हमारे अभय जैन ग्रन्थालय मे इसकी चारुचन्द्र गणि द्वारा स्वयं लिखित प्रति विद्यमान है जिसके अनुसार यह चरित्र वीकानेर मे ५७५ श्लोकों मे प्रथमाभ्यास रूप मे वनाया है कवि

विनयचन्द्र भी इस रचना को अपना प्रथमाभ्यास सूचित करते है। जिनरत्नकोश के अनुसार इसके अतिरिक्त तपागच्छीय जिनकीर्त्ति, सोमसण्डन और शुभशील के भी संस्कृत चरित्र उपलब्ध है तथा भाषा में महीचन्द्र ने सं० १५६१ जौनपुर में विजयशील ने सं० १६४१ मे, लब्धिविजय ने सं० १७०१ में, कवि जिनहर्ष ने सं० १७४५ पाटण मे तथा राजरत्न ने सं० १८५२ में खेड़ा में रास चौपाई बनाये जो सभी उपलब्ध है।

कविवर विनयचन्द्र के व्यक्तित्व और रचनाओं का थोड़ा विहंगावलोकन पिछले पृष्ठो मे कराया जा चुका है। इस ग्रन्थ मे अब तक की उपलब्ध कविवर की समस्त रचनाएँ दी जा चुकी है। अन्त में कविवर की कृतियों में प्रयुक्त देसियों की सूची देकर इस ग्रन्थ में आये हुए राजस्थानी व गुजराती शब्दो का कोष प्रकाशित किया है। इसमे शब्दों के अर्थ की ओर नही, पर भावार्थ की ओर ही लक्ष्य रखा गया है, एक शब्द के अनेक अर्थ होते है पर जहाँ जिस भाव में उसे प्रयुक्त किया है उसे समझने में पाठकों को सुगमता हो, यही इसका उद्देश्य है।

कविवर की जीवनी के विषय मे हम अधिक सामग्री उपलब्ध न कर सके पर जितना भी ज्ञात हुआ, दिया गया है। कविवर के हस्ताक्षर व उनकी रचनाओं की प्रति के अन्तिम पृष्ठ का ब्लाक बनवा कर इस ग्रन्थ मे प्रकाशित कर रहे है ताकि उनकी व उनके गुरु की अक्षरदेह के दर्शन हो सके।

यह पुस्तक जिस रूप में प्रकाशित हो रही है उसका

वास्तविक श्रेय राजस्थानी और जैन साहित्य के यशस्वी विद्वान सादूल राजस्थान रिसर्च इन्स्टीट्यूट के डाइरेक्टर पूज्य श्री अगरचन्दजी नाहटा, जैन इतिहासरत्न को है जिनकी सतत चेष्टा और प्रेरणा से शताब्दियों से ज्ञानभंडारों मे पड़े हुए ग्रन्थ प्रकाश मे आ रहे है। मेरी समस्त साहित्य प्रवृत्तियों के तो वे ही सर्वेसर्वा है अतः आत्मीयजनों के प्रति आभार व्यक्त करने का प्रश्न ही नहीं उठता। आशा है प्रमाद व उपयोगशून्यता-वश रही हुई भूलों को परिमार्जन करके विद्वान् पाठकगण अपने सौजन्य का परिचय देंगे।

—*भंवरलाल नाहटा*

अनुक्रमणिका

कविवर के हस्ताक्षरों में कुगुरु स्वाध्याय का खरड़ा

मणा॥ पैसरी अगड्यारनी॥सण॥ मुज मन मंमप वेलि कि। सींचु नेहरस छकरी॥सण॥ अंकुर तव रस नीरेलि॥२सण॥ द्रे
डधरी जे सालतइ।सण। कणकूडा कणवालकि।नउ ते फल लहे छूटरा।सण॥ स्वाद इछ अति हिंरसाल॥३सण॥ दर्षश्र
पारधरी हियइ।स॥ अवसद्यावादमकार कि।तासकरी एअगनी॥स॥ व्रत्याजय प्रकार॥४सण॥ सचत सतरप
चावनइ।सण।वर्षा रिति नवमास कि।दसमी दिन वदि पख मा।सण॥ पूरण थई मन आस॥५सण॥ श्री जिनधर्मसू
रिपाटवी॥सण॥ श्री जिनचंदसूरीस कि। खरतरगछना राजीया॥सण॥ तसराज इंसजगीस॥६सण॥ पाठकहर्ष
निधानजी।स॥ ज्ञानतिलक सुपसाय कि।विनयचं द्र कहइ मइं करी॥सण॥ अगड्यार सिझाय॥७॥सण
॥ इति श्री एकादशांगानां स्वाध्यायः॥ संव त् १७६६ वर्षे मिती वैशाख वदि ४ दिने श्री वि
क्रमनगरे॥ उपाध्याय श्री हर्षनिधानजी शिष्य पं० ज्ञानतिलक लिखितं॥ साध्वी कीर्तिमाला नि
त्रणी। लक्ष्मीमाला पठनार्थं॥ श्रीरस्तु॥ शुभं। भवतु॥ कल्याणमस्तु॥ श्रेयांसि सिद्धवर्न्तां॥

कविवर के गुरु उ० ज्ञानतिलक लिखित कवि विनयचन्द्रकृति संग्रह प्रति का अन्तिम पत्र

विनयचन्द्रकृति कुसुमाञ्जलि

चतुर्विंशतिका

॥ श्रीऋषभ जिन स्तवनम् ॥

ढाल—महिंदी रंग लागौ

आज जनम सुकियारथउ रे, भेट्या श्रीजिनराय।
प्रभु सुं मन लागौ, खिण इक दूरि न थाय ॥ प्र०॥
सुगुण सहेजा माणसां रे, जोरइ मिलियइ जाय। प्र० ॥१॥
नयणे नयण मिलायनइ रे, जिन मुख रहीयइ जोय। प्र०।
तउ ही तृप्ति न पामियइ रे, मनसा विवणी होय। प्र० ॥२॥
मानसरोवर हंसलउ रे, जेम करइ झकझोल। प्र०।
तिम साहिब सुं मन मिलयउ रे, करइ सदा कल्लोल। प्र० ॥३॥
हीयड़ा माहि जे वसइ रे, वाल्हा लागइ जेह। प्र०।
जउ बीजा रूपइं रूडा रे, न गमइ तां सूँ नेह। प्र० ॥४॥
रसल्यै गुण मकरंद नउ रे, चतुर भमर तजि खेद। प्र०
जे जण घण सरिखा हुवउ रे, स्युं जाणइ तस वेध। प्र० ॥५॥
एहवउ मंइ निश्चय कियउ रे, पलक न मेलूं पास। प्र०।
आखर सेवा मां रह्यां रे, फलस्यइ मन नी आस। प्र० ॥६॥

मीठा अमृत नी परइ रे, ऋषभ जिनेश्वर संग। प्र०।
'विनयचन्द्र' पामी करी रे, राखउ रस भरि रंग। प्र० ॥७॥

॥ श्री अजित जिन स्तवनम् ॥

ढाल—हमीरा नी

साहिब एहवउ सेवियइ, सुगुण सरूप सतेज सजनजी।
मिलतां ही मन उल्लसै, दीठा वाधइ हेज सजनजी ॥१॥ सा० ॥
तेतउ आज किहाँ थकी, जिण माहें हुवै स्वाद। स०।
स्वाद विहूणा छोड़ियइ, राखेवां मरजाद सजनजी ॥२॥ सा० ॥
समय अछइ इण रीत नों, तउ पिण वखत प्रमाण। स०।
मुझनइ प्रभु तेहवउ मिल्यौ, सहज सुरंग सुजाण। स० ॥३॥सा०॥
ज्यां सँ मन पहिली हुँतउ, ते तउ देव कुदेव। स०।
कंचन नइ वलि कामिणी, ते जीप्या नितमेव। स० ॥४॥सा०॥
ए निर्जित इण वात मां, रिद्धि तजी भरपूर सजनजी।
दर्प हवउ कदर्प नउ, ते पणि टल्यउ दूर सजनजी ॥ ५ ॥ सा० ॥
मुगति वधू रस रागियउ, ज्योतिर्मय वसुधार सजनजी।
यश महकइ गहकइ गुणे, अजित विजित रिपुवार।स०॥६॥सा०॥
'विनयचन्द्र' प्रभु आगलें, कर्म अरी करी नीम सजनजी।
वेगि वल्या गर्भइं गल्या, जिम पोहुण गल हीम स० ॥७॥ सा० ॥

॥ श्री संभव जिन स्तवनम् ॥

ढाल—धणरा मारूजी रे लो

स्वस्तिश्री गर्जित भयवर्जित त्रिभुवनतर्जित
सकल जीव हितकामी रे लो। म्हारां वालेसर जी रे लो ॥

ते शिव बदिर अनुभव मन्दिर सद्गुण सुन्दर
तिहां छइ संभव स्वामि रे लो ॥ मा० ॥ १ ॥
तिण दिशि लेख लिखइ प्रेमातुर चित नउ चातुर
आतुर प्रेम प्रयासइ रे लो । मा० ।
प्रभु नइ प्रीति प्रतीत दिखाली रीति रसाली,
पाली सेवक भासइ रे लो ॥ मा० ॥ २ ॥
सुगुण सनेही अरज सुणीजइ सुनिजर कीजइ,
दीजइ दरस उमाही रे लो । मा० ।
मुझ चित्त माहें ए छइ चटकउ तुझ मुख मटकौ,
लटकौ दीसइ नाही रे लो । म० ॥ ३ ॥
तुं तउ मोसुं रहइ निरालउ, माया गालउ,
इम टालउ किम कीजइ रे लो ॥ मा० ॥
पोतानउ सेवक जाणीनइ हित आणीनइ,
चित ताणी नइ लीजइ रे लो । म० ॥ ४ ॥
निगुण थया तउ नेह न व्यापइ मन थिर थापइ,
तउ आपइ नवि डोलु रे लो । मा० ।
वात कहुं वेधाले वयणे विकसित नयणे,
गुण रयणे जस बोलु रे लो । मा० ॥ ५ ॥
कहता कहतां सोहन वाधइ मोह न बाधइ,
साधइ कारिज तेही रे लो । मा० ।
मौन करइ जे मननी खातइ बक दृष्टान्ते,
भ्रान्तइ रहत सनेही रे लो । मा० ॥ ६ ॥

समाचार इण भातइ वांची दिलमइं राची,

साची कृपा करेज्यो रे लो । मा० ।

'विनयचन्द्र' साहिब तुम्ह आगे मागै रागैं,

सुकृत भंडार भरेज्यो रे लो ॥ मा० ॥ ७ ॥

॥ श्री अभिनन्दन जिन स्तवनम् ॥

ढाल—धणरी विंदली मन लागौ

हांरे मोरा लाल थिर कर रह्यौ सहु थानकइ,

थिर जेहनउ जस थंभ मोरा लाल ।

अभिनन्दन चंदन थकी, अधिक धरइ सोरंभ मोरा लाल ॥१॥

तिण साहिब सु मन मोह्यौ,

हांरे सुगुणा साहिब सु मन मोह्यौ ॥ आंकणी ॥

हारे मोरा लाल चंदण नी तौ वासना,

रहइ एक वन अवगाह ॥ मो० ॥

प्रभुनी प्रगट उपासना, सलहै त्रिभुवन माह ॥ मोरा ॥ २ ॥ ति०॥

हारे मोरा लाल साप संताप करइ सदा, घाल्यौ चंदन घेर ॥मो०॥

मारा साहिब आगलइ, सुरनर हुआ जेर ॥ मो० ॥३॥ ति० ॥

चंदन विरहण नारीयां, तपति बुझावउ देह ॥ मो० ॥

पाप ताप दूरइ हरउ, श्री जिनवर ससनेह ॥ मो० ॥४॥ ति० ॥

चंदन तरुवर अवर नउ, करइ सरस शुभ गंध ॥ मो० ॥

विषय अंध मानव भणी, जिन तारइ भवि सिंधु ॥मो०॥५॥ति०॥

चंदन फल हीणौ हुवइ, नंदन वन जसु वास ॥ मो० ॥

इक कारणि प्रभु मां मिलइ, फलइ जपंता आश ॥ मो० ॥६॥ति०॥

परतखि जाणि पटंतरउ, मनथी प्रभु मत मेल्हि ।। मो० ।।
'विनयचन्द्र' पामिस सही, निरमल जस रस रेल्हि ।।मो०।।७।।ति०।।

।। श्रीसुमतिजिन स्तवन ।।

ढाल—वात म काढो व्रत तणी

सुमति जिनेश्वर साभलौ, माहरा मननी वाता रे।
तुं सुपना माहे मिलइ, खबर पड़इ नहीं जातां रे ।।१।।सु०।।
पिण हिव अवसर देखिनइ, धर्म जागरिका धरस्युं रे।
प्राण सनेही जाणिनइ, तुझथी झगड़ौ करिस्युं रे ।।२।।सु०।।
जे हित अहित न जाणिस्यइ, पर ना अवगुण लेस्यइ रे।
तिण सुं कुण मुह मेलिस्यइ, कुण अतर गति देस्यइ रे ।।३।।सु०।।
तिल भर जे जाणै नहीं, तेहनइ गुह्य कहीजै रे।
तू तउ जाण प्रवीण छइ, माहरी बांह ग्रहीजइ रे ।।४।।सु०।।
मइं भव भमता दु ख सह्या, ते तउ तुं हिज जाणइ रे।
जे लज्जालू नर हवइ, मुहंडइ केम वखाणइ रे ।।५।।सु०।।
इम जाणीनइ हित धरउ, मुझनइ दुत्तर तारउ रे।
स्युं जायइ छइ ताहरौ, वाल्हा हृदय विचारौ रे ।।६।।सु०।।
बीजा किणही ऊपरा, भोलइ ही मति राचउ रे।
मननी इच्छा पूरस्यइ, 'विनयचन्द्र' प्रभु साचउ रे ।।७।।सु०।।

।। श्री पद्मप्रभु स्तवनम् ।।

ढाल- योधपुरीनी

पद्मप्रभु स्वामी हो माहरी अरज सुणौ, तुमे अंतरजामी हो;
जिनवर आइ मिलौ ।।१।।

तुं तौ पदम तणी परइ हो, परिमल प्रगट करइ,
मुझ मन मधुकर धरि हो ॥जि०॥२॥
वलि तु इम जणिसि हो, पदम हुवइ जिहां,
जायइ मधुकर अहिनिशि हो ॥जि०॥३॥
पिण पदम सयाणउ हो, सरवर माहिं रह्यौ,
वेलइं वीटाणउ हो ॥जि०॥४॥
तिहा चित्त न लोभइ हो, जल अति ऊछलइ,
भमरउ इम सोचइ हो ॥जि०॥५॥
तिम तइं कमलाकरि हो, सिद्ध पद आश्रयौ,
शिव वेलि सुहंकर हो ॥जि०॥६॥
विचि भवजल वोलइ हो 'विनयचन्द्र' किम आवइ,
हिव किणि इक ओलइ हो ॥जि०॥७॥

॥ श्रीसुपार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—वारुनइ विराजइ हो हजा मारु लोवड़ी

सहज सुरंगा हो चंगा जिनजी साभलौ,
विनय तणा जे वयण।
हुं तुझ चरणे हो आयौ ध्यायौ हेज सु,
साचौ जाणी सइण ॥१॥
मूरति तोरी हो दिल चोरी नइ रही,
वसियकरण कियौ कोइ।
रंग दिखालइ हो टालइ जे दुख आपणौ,
ते गुण रसिया जोइ ॥२॥मूरति॥

अंतरजामी हो सामि तैं मन वेधियउ,
प्रगट्यउ प्रेम प्रमाण।
मैं इकतारी हो कीधी थारी वालहा,
तुं हिज जीवन प्राण॥३॥मू०॥

पिण मोसुं नाणइ हो प्राणै ही तुं नेहलउ,
एक पखी थइ प्रीत।
नीर अभावइ हो जिम दु:ख पावइ माछली,
नीर तणइ नहीं चीत ॥४॥मू०॥

वलि इम जाण्यौ हो ताण्यौ तूटइ साहिवा,
हृदय विचारी दीठ।
जाय निराशी हो प्रभुसुं हांसी जे करइ,
ते तू फल प्रापति लहै नीठ ।५॥मू०॥

ओलग चाहइ हो तोरी लाहइ कारणइ,
अन्य उपरि रहै लीण।
वाचा न काचा हो जे तुम्हनइ कहइ,
ते मूरख मतिहीण ॥६॥मू०॥

हुं गुणरागी हो सागी सेवक ताहरउ,
साहिव सुगुण सुपास।
भेद न राखइ हो भाखइ कवियण भावसुं,
'विनयचंद' सुविलास ॥७॥मू०॥

॥ श्रीचन्द्रप्रभु जिन स्तवनम् ॥

ढाल—[illegible]

चन्द्रप्रभु नइ चन्द्र सरीखो, कान्ति शरीरइ सोहइ ।
जेहनइ रूप अनूप निरालौ, सुरनर नगरा मोहइ ॥१॥
तिणसुं मो मन मिलियउ राज, नायक हुं तणी परइ ॥आंकणी॥
पिण सकलंकित चन्द्र कहावइ, अकलंकित सुख स्वामी ।
ते तउ अमृत रस नइ धारइ, प्रभु अनुभव रस भागी ॥२॥नि०॥
तेहनइ सन्मुख चपल चकोरा, प्रभु रत नयणे जोवइ ।
प्रभु दरसण देखण जग तरसे, प्रापति विण नवि होवइ ॥३॥नि०॥
चन्द्रकला ते विकला जाणौ, घटत वधत नइ दीसइ ।
साहिब नउ तउ सदा सुरंगी, बाधइ कला विशेषइ ॥४॥नि०॥
निशिपति नारी मोहनगारी, रोहणि नउ रंग* रातौ ।
प्रभु करणी परणी तजि तरुणि, अद्भुत गुण करि मातौ ॥५॥ति०॥
राहु निसत्त करै ग्रसि तेहनउ, जाणौ रूनौ फूंभौ ।
तेहज राहु जिनेसर सेवा, करउ सदाउ ऊभौ ॥६॥ति०
सीस मानता देवाधिपती, शशिहर एहवुं जाणी ।
'विनयचन्द्र' प्रभु चरणे लागौ, लंछन नइ मिश आणी ॥७॥ति०॥

॥ श्री सुविधिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—बिंदलीनी

सुविधि जिणद तुम्हारी, मोनइ सूरति लागे प्यारी हो ॥
जिनवर अरज सुणो ॥

---

* रस ।

अरज सुणौ इण वेला,
दोहिला छइ फिर फिर मेला हो ॥१॥ जि० ॥
अवसर विन कुण किणि पासइ,
आवै मनइ उल्लासइ हो ॥ जि० ॥
जिम कोइल पवनइ प्रेरी,
आवइ तजि ठौड अनेरी हो ॥२॥जि०॥
चलि लोक कूकइ कण सूकइ,
जलधर जौ अवसर चूकइ हो ॥ जि० ॥
पछै घोर घटा करि आवै,
तेह केहना मन मा भावइ हो ॥जि०॥३॥
तिम अवसर साधउ स्वामी,
तमे मोहन मूरति पामी हो ॥ जि० ॥
तेहनउ फल मुझनइ दीजै,
करि महिर कृतारथ कीजै हो ॥ जि० ॥४॥
आज आप स्वारथ मीठौ,
मइं साच वचन ए दीठउ हो ॥जि०॥
जिम तरुवर छोड़इ पंखि,
फल फूल न देखइ अंखि हो ॥ जि० ॥५॥
निर्जल सर सारस मूकइ,
दृष्टान्त इत्यादिक ढूकइ हो ॥ जि० ॥
पिण ते मुझ मनमां नावइ,
इक तुंहिज सदा सुहावइ हो ॥ जि० ॥६॥

तुम्हथी कुण मुझनइ वाल्हूं,
हुं तउ तुमहिज ऊपरि माल्हुं हो ॥ जि० ॥
साम्हउ जोवउ बहु खातइ,
कहइ विनयचन्द इण भातइ हो ॥जि०॥७॥

॥ श्रीशीतलजिनस्तवन ॥

ढाल—वेगवती ते बाभणी, एहनी

अरज सफल करि माहरी, शीतलनाथ सनेही रे।
थोड़ा माँ समजै घणुं, साचा साजन तेही रे ॥ १ ॥ अ० ॥
तुझ विन मननी वातड़ी, केहनइ आगल कहियइ रे।
पासइ रहि सीखावियइ, तउ प्रभु सोह न लहीयइ रे ॥ २ ॥प्र०॥
तिण मेलउ दे मुझ भणी, जिम मन मा सुख थावइ रे।
जउ चिन्ता चित्त राखीयइ, दिवस दुहेलउ जायइ रे ॥ ३ ॥अ०॥
तैं मन लीधउ हेरिनइ, जिम भावै तिम कीजइ रे।
कहता लागइ कारिमउ, अनुमानइ जाणीजइ रे ॥ ४ ॥ अ० ॥
जनम लगइ हिव माहरइ, तु छइ अन्तरजामी रे।
निज सेवक जाणी करी, खमिजे वाल्हा खामी रे ॥ ५ ॥ अ० ॥
बीजउ सहु दूरइ रहउ, जउ फरसूँ तुझ छाया रे ॥
तउ अगणित सुख ऊपजइ, उल्लसइ माहरी काया रे ॥ ६ ॥ अ० ॥
प्राणें ही नवि पहुंचियइ, तेहनइ तुरत नमीजै रे।
'विनयचंद्र' कहै तेहनउ, तउ काइक मन भीजै रे ॥ ७ ॥ प्र० ॥

॥ श्रीश्रेयांस जिन स्तवनम् ॥

ढाल—राजमती तें माहरो मनड़ौ मोहियौ हो लाल, एहनी

जिनजी हो मानि वचन मुझ ऊधरउ हो लाल,
महिर करी श्रेयांस वालेसर।
खेल चतुर्गति मा कियौ हो लाल,
वादी जिण परि वास। वा० ॥१॥
पिण तुझनइ नवि साभर्यो हो लाल,
मंइ तउ किण ही वार॥ वा० ॥
हिव अनुक्रमि तुझनइ मिल्यउ हो लाल,
इहां नहीं झूठ लिगार॥ वा० ॥२॥
देखि स्वरूप संसार नउ हो लाल,
भय आवे नितमेव॥ वा० ॥
पिण जाणुं छुं ताहरी हो लाल,
आडी आस्यै सेव॥ वा० ॥३॥
सेव करइ ते स्वारथइ हो लाल,
तेहनी ताहरइ चित्त॥ वा० ॥
मोह हिया थी मेल्हिनइ हो लाल,
तुं वैठो नित नित्त॥ वा० ॥४॥
कर जोड़ी तुझ आगले हो लाल,
कहियइ वारंवार॥ वा० ॥
तउ ही तुं न करइ मया हो लाल,
स्यानउ प्राण आधार॥ वा० ॥५॥

कठिन हृदय छइ ताहरउ हो लाल,
वज्र थकी पिण जोर ॥ वा० ॥
मन हटकी नइ राखिस्यउ हो लाल,
करस्यइ कवण निहोर ॥ वा० ॥६॥
आप शरम जउ चाहस्यउ हो लाल,
नवि देस्यउ मुझ छेह ॥ वा० ॥
भवसायर थी तारस्यौ हो लाल,
'विनयचन्द्र' ससनेह ॥ वा० ॥७॥

॥ श्रीवासुपूज्य स्तवनम् ॥

ढाल—वधावानी

श्री वासुपूज्य जिनेसर ताहरी,
ओलग हो २ मंइ कीधी सही जी।
हिव आशा पूरउ प्रभु माहरी,
नहिं तरि हो २ तुझ नइ मेल्हिस्यइ नहीं जी ॥ १ ॥
तुझ साथइ कोई जोर न चालइ,
तउ पिण हो २ आड़ौ माडिस्युं जी।
इम करता जउ तु वछित नालइ,
तउ त्यारै हो २ तुझनइ छाडस्यु जी ॥ २ ॥
हिवणा तउ हुं छुं वाल्हा तारै जी सारै,
कहिस्यौ हो २ कह्यौ नहीं पछै जी।
वाह ग्रह्यानी जे लाज वधारै,
एहवा हो २ नर थोड़ा अछै जी ॥ ३ ॥

जेहवी प्रीति कुटिल नारी नी,
जेहवी हो २ वादल केरी छांहड़ी जी ।
जेहवी मित्राई भेषधारी नी,
तेहवी हो २ कापुरुषां री वांहड़ी जी ॥ ४ ॥
पिण तुम्हे सगुण सापुरिस सवाई,
पाई हो २ वांहड़ली मंइ तुम तणी जी ॥
सफल करउ जिनवर चित लाइ,
मीनति हो २ सी करियइ घणी जी ॥ ५ ॥
शिव सुख फल तुझ पासइ चाहूं,
तुं हीज हो २ सुरतरु मोरियउ जी ।
आज वधावउ जाणी मन में उमाहुं,
हुंइज हो २ प्रेम अंकूरियउ जी ॥ ६ ॥
अधिकउ तउ ओछउ सेवक भाषइ नइ भाखइ,
साहिब हो २ तेह सदा खमइ जी ।
विनयचन्द्र कवि कहइ तुम्ह पाखइ,
किणसुं हो २ माहरउ मन रमइ जी ॥ ७ ॥

॥ श्री विमलनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—चतुर सुजाणा रे सीता नारी

विमल जिनेसर सुणि अलवेसर, माहरा वचन अनूप ।
मनड़ौ विलूधौ रे ताहरै रूप, जेम विलूधौ रे कमल मधूप ॥आ०॥
ताहरा रूप माहे काई मोहनी, मिलवानी थइ चूंप ॥ १ ॥ म० ॥

वसोकरण छइ स्युं तुझ पासइ, अथवा मोहनवेलि ॥म०॥
साच कहो ते अंतर खोली, जिम थायइ रंग रेलि ॥ म० ॥ २ ॥
कहिस्यउ नहीं तउ मइ पिण सुणीयउ, लोक तणइ मुख आम ॥
मोहन रूप समौ नहीं कोई, वसीकरण नउ दाम ॥३ म० ॥
एहिज कारण साचउ जाणी, लागौ तुझ सुँ नेह ।
ताहरी मूरति चित्त माँ चहुटी, खिण न खिसइ नयणेह ॥४ म०॥
पिण फल मुझ नइं न थयउ काइ, असरप आवै तेह ।
फलदायक तौ तेहिज थायइ, जे गिरुआ गुण गेह ॥ ५ म० ॥
वलि विस्मय मन माहें आणी, मंइ ग्रहियउ सन्तोष ।
साकर मा काकर निकसइ ते, साकर नौ नहीं दोष ॥ ६ म० ॥
सुगुण साहिब तूँ सुखनउ दाता, निर्मल बुद्धि निधान ।
'विनयचन्द्र' कहइ मुझनइ आपौ, मुगतिपुरी नउ दान ॥ ७ म०॥

॥ श्री अनंतनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—पथीडा नी

एक सबल मन में चिन्ता रहै रे,
न मिल्यउ साहिब जीवनप्राण रे ।
श्वास तणी परि मुझनइं सांभरे रे,
जिम चकवी केरइ मन भाण रे ॥१ ए० ॥
पिण ते शिवमन्दिर माहें वसै रे,
कागल मात्र न पहुँचे कोइ रे ।
प्राणवल्लभ दुर्लभ जिनराजनी रे,
संदेसे ओलग किम होइ रे ॥ २ ए० ॥

देव अवर सुँ कीजइ प्रीतड़ी रे,
खिण इक आवइ मन मां द्वेष रे।
इण वातइं तउ स्वाद नहीं किसउ रे,
चुप करि रहियइ तिणे सुविशेप रे ॥३ ए० ॥
जेह आपणनइं चाहइ दूरथी रे,
धरियइ दिन प्रति तेहनउ ध्यान रे।
आडंवर देखी नवि राचियइ रे,
ए छइ चतुर पुरुप नउ ज्ञान रे ॥ ४ ए० ॥
मुँह मीठा धीठा हीयड़इ तणा रे,
निगुण न पालै किण सुँ नेह रे।
अवगुण ग्रहिवा थायइ आगला रे,
काम पड्यॉं द्यै लाबौ छेह रे ॥ ५ ए० ॥
ते टाली मिलियइ सुगुणा भणी रे,
जे जाणइ सुख दुखनी वात रे।
सुपनइ ही नवि करियइ वेगला रे,
ज्याहनइ दीठां उल्हसै गात रे ॥ ६ ए० ॥
नाथ अनंत भवे नवि वीसरइ रे,
जे ससनेही सगुण सुरंग रे।
प्रभु सुँ 'विनयचन्द्र' कहै माहरौ रे,
लागौ चोल तणी पर रंग रे ॥ ७ ए० ॥

॥ श्री धर्मनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—सासू काठा हे गोहूँ पीसाय आपण जास्युँ मालवइ, सोनार भणइ

वाल्हा सुणि हो मुझ अरदास, मइ अभिलाष इसउ धर्यो,
मोसुं महिर करउ ।
वाल्हा काढूँ हो मननी भास,
जे तुझ आगइं पतगर्यौ ॥ मो० ॥१॥
वाल्हा तु तउ हो धरम धुरीण,
पर उपगारी परगड़उ ॥ मो० ॥
वाल्हा मुझनइ हो देखी दीण,
सेवक करिनइ तेवड़उ ॥ मो० ॥२॥
वाल्हा स्युँ कहुँ माहरइ हो मुक्ख,
मंइ पगि २ लही आपदा ॥ मो० ॥
वाल्हा टालउ हो ते सहु दुक्ख,
सुख आपौ अविचल सदा ॥ मो०॥३॥
वाल्हा पूरवइ हो परपद मांहि,
धरम देशना तूँ दियइ ॥ मो० ॥
वाल्हा सगले हो सुणि रे उमाहि,
मइं न सुणी इक पापियइ ॥ मो० ॥४॥
वाल्हा लागौ हो नहीं उपदेश,
छाट घड़ठ जिम चीगटइ ॥ मो० ॥
वाल्हा तेतउ हो न्याय अजेस,
कर्म अरि कहो किम कटइ ॥ मो० ॥५॥

वाल्हा ताहरउ हो नहीं कोई दोष,
सोस किसउ कीजइ हिवइ ॥ मो० ॥
वाल्हा वलि म्यउ कीजइ हो रोष,
आतम कृत कर्म अनुभवइ ॥ मो० ॥६॥
वाल्हा पिण तुं हो सकज सदीव,
धर्मनाथ जिन पनरमउ ॥ मो० ॥
वाल्हा एहिज वात मइ जीव,
'विनयचन्द्र' ना दुख गमउ ॥ मो० ॥७॥

॥ श्री शान्तिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—विछियानी

हांरे लाल शान्ति जिनेश्वर सांभलउ,
माहरइ मन आवइ ख्याल रे लाल ।
हुँ तुझ चरणे आवियउ, तुँ न करइ केम निहाल रे लाल ॥१॥
माहरउ मन तुझ मइं वसि रह्यउ ॥ आंकणी ॥
जिम गोपी मन गोविंद रे लाल, गौरी मन शंकर वसइ ।
वलि जेम कुमुदिनी चंद रे लाल ॥ २ मा० ॥
वात कहीजइ जेहनइ, जे मन नउ हुइ थिर थोभ रे लाल ।
जिण तिण आगलि भाषतां, वाल्हेसर न चढइ शोभ रे लाल ॥३॥
तिण कारणि मइं माहरी, सहु वात कही तजि लाज रे लाल ।
तुँ मुखथी वोलइ नहीं,
किम सरिस्यइ मन काज रे लाल ॥४ मा० ॥

हारे लाला तूँ रसियउ वाता तणौ,
सुणिनै नवि द्यै को जवाव रे लाल।
मन मिलीयां विन प्रीतडी,
कहो नइ किम चढियइ आव रे लाल॥ ५ मा० ॥
हारे लाल निज फल तरुवर नवि भखइ,
सरवर न पियइ जल जेम रे लाल।
पर उपगारइं थाय ते, तुँ पिण जिनजी हुइ तेम रे लाल ॥६ मा०॥
घणुं २ कहिये किसुँ, करिजे मुझ आप समान रे लाल।
रयणि दिवस ताहरउ धरइ,
कवि 'विनयचन्द्र' मन ध्यान रे लाल ॥७ मा०॥

॥ श्री कुंथुनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—ईडर आंवा आमली रे

वहु दिवसां थी पामियौ रे, रतन अमोलख आज।
जतने करि हुँ राखस्युँ रे, जगवल्लभ जिनराज ॥१॥
मोरइ मन जाग्यउ राग अथाग, मइं तउ पाम्यउ वारू लाग।
माहरउ छइ पिण मोटउ भाग, करस्युं भवसागर त्याग ॥आंकणी॥
अणमिलिया हुँ जाणतउ रे, जिनवर केहवा होय।
मिलियां जे सुख उपनउ रे, मन जाणइ छइ सोय ॥ २ मो० ॥
मइं साहिब ना गुण लह्या रे, आणी पूरण राग।
कोइल आंवा गुण लहै रे पिण स्यु जाणै काग ॥ ३ मो० ॥
जे वेधक सहु वातना रे, गुण रस जाणइ खाश।
मूरख पशु जाणइ नहीं रे, सेलड़ी कड़न मिठास ॥४ मो० ॥

प्रभुनी मुद्रा देखिनइ रे, मुझनइ थइ रे निरान्ति।
हिव सेवा करिवा तणी रे, मनड़ा मइ छइ खान्ति ॥ ५ मो० ॥
नेह अकृत्रिम मइं कियउ रे, कदे न विहड़इ तेह।
दिन २ अधिकउ उलटइ रे, जिम आषाढ़ो मेह ॥ ६ मो० ॥
एक घड़ी पिण जेहनइ रे, वीसार्यो नवि जाय।
'विनयचन्द्र' कहइ प्रणमियइ रे, कुन्थु जिनेश्वर पाय ॥७ मो०॥

॥ श्री अरनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—मोतीनी

तुझ गुण पंकति वाड़ी फूली,
मुझ मन भमर रह्यउ तिहां भूली।
साहिबा कांइ मउज करौ नइ,
साहिबा कांइ मउज करउ ॥ आकणी ॥
मउज करउ कांई अंग सुहाता,
सुणि सुणि नै विगताली वाता ॥१॥सा०॥
तुझ पद कज केतकी मइं पाई,
तसु आवै खुशबूह सहाई ॥ सा० ॥
मोहन भाव मालती महकै,
गरुआनी संगति करि गहकइ ॥२॥सा०॥
सुख सहस्रदल कमल विकास्यौ,
समतारस मकरंदइ वास्यउ ॥ सा० ॥
चित्त उदार ते चंपक जाणौ,
दिल गंभीर गुलाब वखाणौ ॥सा०॥३॥

कुंद अनै मचकुंद विलासी,
कलि कीरति उज्ज्वल प्रतिभासी ॥सा०॥
पाडल प्रीति प्रतीत प्रबोधइ,
मरुक दमण सज्जन गुण सोधइ ॥सा०॥४॥
केवड़ानी परि तुं उपगारी,
फूल अमूल गुणे करि धारी ॥सा०॥
फल सहकार सकारइं फावै,
द्राखते द्वेषनी रेखनइ दावै ॥सा०॥५॥
वलि संतोष सदाफल सदली,
करुणा रूप सुकोमल कदली ॥सा०॥
नारंगी ते प्रभु निरागइं,
जंभीरी युगतें करि जागइं ॥सा०॥६॥
फूल अनइ फल इत्यादिक छै,
प्रभु ना गुण इण माहि अधिक छइ ॥सा०॥
नहीं शिव पोइणि ते तुम्ह आगइ,
श्री अरनाथ विनयचंद मांगइ ॥सा०॥७॥

॥ श्री मल्लिजिन स्तवनम् ॥

ढाल—राजिमती राणी इण परि बोलइ

मल्लि जिनेसर तुं परमेसर,
तुम्ह नइं सुरनर चर्चित केसर ॥म०॥
तुम्ह सरिखा ते पुण्ये लहिय,
देखी देखी मन गह गहीयइ ॥म०॥१॥

तुं सद्भाव तणौ छइ धारक,
दुष्ट दुरासय नौ निर्वारक ॥म०॥
तिण कारण माहरौ मन लागौ,
भेद अपूरव सहजइ भागउ ॥म०॥२॥
देव अवर सुं जे रहइ राता,
तेहनइ तउ छइ परम असाता ॥ म० ॥
इम जाणी मुझ मन ऊमाहइ,
तुझ मुख कमल नरपिवा चाहइ ॥म०॥३॥
तुं छइ माहरह सगुण सनेही,
तउ करो पड़वज कीजै केही ॥ म० ॥
पिण तुं मुगति महल मा वसियउ,
संपूरण समता गुण रसियउ ॥म०॥४॥
अवसर आयइ नवि संभारइ,
केम भवोदधि हेलइ वारइ ॥ म० ॥
हिव हुं निश्चल थइ नइ वेठउ,
अनुभव रस मन माहे पइठउ ॥म०॥५॥
जे खल नइ गुल सरिखा जाणइ,
ते स्युं नवलौ नेह पिछाणइ ॥ म० ॥
इण हेतइ माहरउ मन फिरियउ,
जाणे पवन हिलोल्यउ दरियउ ॥म०॥६॥
साची भगति कीधी मइं ताहरी,
तउ मन इच्छा पूरउ माहरी ॥ म० ॥
विनयचन्द्र कहै ते गुणवंता,
जे टालै मनड़ानी चिन्ता ॥म०॥७॥

॥ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवनम् ॥

ढाल—ओलूनी

मुनिसुव्रत मन माहरौ जी, लागौ तुम लगि थेट ।
पिण तुँ मींट न मेलवै जी, ए व्रत दुष्कर नेट ॥१॥
जिनेश्वर वणस्यै नहीं इम बात ॥ आंकणी ॥
मुझ स्वभाव छै तामसी जी, रहिन सकइ खिण मात ॥२॥जि०॥
हुँ रागी पिण तुँ अछइ जी, नीरागी निरधार ।
मावै नहीं इक म्यान मंइ जी तीखी दोइ तरवार ॥जि०॥३॥
जाणपणउ मइ जाणीयउ जी, जिनवर ताहरौ आज ।
तक उपर आव्यउ हतो जी, तैं नवि राखी लाज ॥४॥जि०॥
जे लोभी तुझ सरिखा जी, वंछित नापइ रे अन्त ।
मुझ सरिखा जे लालची जी, लीधां विण न रहंत ॥५॥जि०॥
एह अणख छै आपणौजी, सदा न चलस्यै रे एम ।
करि मुझ नइ राजी हिवै जी, जिम वाधइ बहु प्रेम ॥६॥जि०॥
तु मुझ नइ नवि लेखवइ जी, देखी सेवक वृन्द ।
तारा तेज करै नहीं जी, विनयचन्द्र विण चन्द्र ॥७॥जि०॥

॥ श्री नमिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—मामाजी हो डुंगरिया हरिया हुवा

साहिबा जी हो तुं नमि जिनवर जगधणी,
सरणागत साधार म्हारा साहिबा जी ।
पुण्य सयोगइ ताहरउ,
मैं दीठउ दीदार म्हां सा० ॥१॥

चतुरपणानी ए छइ चातुरी,
मिलीयइ तुझ नइ धाय म्हां० ।
सा० तो तुं चित चिन्ता हरै,
वादल नइ जिम वाय ॥ म्हां० ॥२॥ च० ॥
सा० प्रीति हुवइ जिहां प्रेम नी,
उपजइ तिहाँ परतीत म्हा० ।
करि करि नइ सुं कीजियइ,
प्रेम विहूणी प्रीति म्हां० ॥ ३ ॥ च० ॥
देव अवर मीठा मुखे,
हृदय कुटिल असमान म्हा० ।
जाणि पयोमुख संग्रह्यां,
ते विपकुम्भ समान म्हां० ॥ ४ ॥ च० ॥
सा० इम जाणी मन ओसर्यो,
पाछौ त्याथी नेट म्हा० ।
फेटि निगुण नी टलि गई,
थई सुगुण नी भेट म्हां० ॥ ५ ॥ च० ॥
इतला दिन मन मा हतउ,
उदासीनता भाव म्हा० ।
ताहरइ मिलिवइ ते गयउ,
तत्खिण तजि निज दाव म्हा० ॥६॥ च० ॥
मंइ तुझ सेवा आदरी,
होइ रह्यउ तुझ दास म्हा० ।

जिण सुरतरु फल चाखियउ,
कुफल गमइ नहीं तोस म्हां० ॥ ७ ॥ च० ॥
स्यु कहिरावइ मो भणी,
तारि तारि करतार म्हां० ।
विनयचन्द्र नी वीनति,
हित धरी नइ अवधार । म्हा० ॥८॥ च० ॥

॥ श्री नेमिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—ऊभी राजुलदे राणी अरज करै छै

थांहरी तौ मूरति जिनवर राजै छइ नीकी,
शिवसुन्दरि सिर टीकी हो ।
राणी शिवादेवीजी रा जाया
नेमजी अरज सुणीजै ।
अरज सुणीजै काई करुणा कीजै,
म्हानइ मुजरौ दीजै हो ॥१॥रा०॥
ते दिन वाल्हां मुझनै कइयइ आस्यै,
तुम थी मेलौ थास्यइ हो । रा० ।
अंतर तुम्हारउ माहरउ दूरइ व्रजस्यइ,
अंगइ सुख ऊपजस्यइ हो ॥२॥रा०॥
हिवणा तउ तुमनइ हियड़ा माँहे धारूँ,
इण भांतइ दिल ठारूँ हो । रा० ।
आखर थे पिण समझणदार सनेहा,
नवि दाखविस्यौ छेहा हो ॥३॥रा०॥

जे तुम सेती प्रेम प्रयासइ जी विलगा,
ते किम टलस्यै अलगा हो। रा०।
प्रीति लगास्यइ ते तउ जिम रंग अकीकी,
पड़े नहीं जे फीकी हो ॥४॥रा०॥
प्राणपियारा साहिब थे छउ जी म्हारै
मुझ नइ छइ तुम्ह सारै हो। रा०।
इम जाणी नइं प्रत्युपकार करंता,
राखौ छौ सी चिन्ता हो ॥५॥रा०॥
स्युं कहुं कीरति राज तुम्हारी,
तुमे छउ बाल ब्रह्मचारी हो। रा०।
राजुल नारी ते विरहागर ध्यारी,
पोतानी कर तारी हो। रा०॥६॥
कहियउ जी म्हारौ अलवेसर अवधारउ,
हुं छूं दास तुम्हारौ हो। रा०।
विनयचन्द्र प्रभु तुमे वरदाई,
मउज सवाई द्यउ काइ हो ॥रा०॥७॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—इण रिति मोनइ पासजी साभरइ

जिनवर जलधर उलट्यौ सखि, वयणे वरसै मेह।
जेहनइं आगमनइ करी सखि, ऊपज्यौ प्रेम अछेह रे॥
नर नारी वाध्यउ नेह रे, ठाढी थइ सहुनी देह रे।
पसर्यो चित भुइ मइ त्रेह रे, उपस्यउ खल कंदल खेह रे॥१॥

धीणउ हुवइ घर माहि रे,
त्रि० लूखौ रे तौ स्या माटे खाइयइ रे ॥४॥
तार्या तें सुरनर फोड़ि रे,
त्रि० पोते तरी रे शिव सुख अनुभवइ रे।
मुझमाँ केही खोड रे,
त्रि० तारै नहीं रे क्यों मुझनइ हिवइ रे ॥५॥
ओछा तणउ सनेह रे,
त्रि० जाणै रे पर्वत केरा वाहला रे।
वहताँ वहै एक रेह रे,
त्रि० पछइ विछड़इ रे ज्युं तरु डाहलारे ॥६॥
तिण परि नेहनी रीति रे,
त्रि० नहीं छै रे चरम जिनेसर आपणी रे।
'विनयचन्द्र' प्रभु नीति रे,
त्रि० राखउ स्वामी नइ सेवक तणी रे ॥७॥

॥ कलश ॥

ढाल—शांति जिन भामणइ जाऊँ

इण परि मंइ चौवीसी कीधी, सद्भावै करि सीधीजी।
कुमति निकेतन आगल दीधी, सुमति सुधा बहु पीधीजी ॥१॥ इ०
इण मे भेद तणी छइ दृढता, गुण इक इक थी चढ़ताजी।
सज्जन पंडित थास्यइ पढ़ता, दुर्जन रहस्यइ कुढताजी ॥२॥ इ०
पूरण ज्ञान दशा मन आणी, वेधक वाणी वखाणीजी।
विबुध भणी अवबोध समाणी, मूरख मति मूझाणीजी ॥३॥ इ०

बोध बीज निर्मल मुझ हुऔ, दियौ दुरति नइ दूऔजी।
स्तवना नौ मारग छइ जूअउ, जाणै ते कोई गिरुऔजी ॥४॥ इ०
संवत सत्तर पंचावन वरषइ, विजयदशमी दिन हरषइजी।
राजनगर मां निज उतकरषइ, ए रची भक्ति अमरषइजी ॥५॥ इ०
श्रीखरतरगण सुगुण विराजइ, अंबर उपमा छाजइजी।
तिहा जिनचन्द्रसूरीश्वर गाजइ, गच्छपतिचन्द्र दिवाजइजी ॥६॥
पाठक हर्षनिधान सवाई, ज्ञानतिलक सुखदाईजी।
विनयचन्द्र तसु प्रतिभा पाई, ए चौवीसी गाईजी ॥७॥ इ०

इति चउवीसी समाप्ता।

एह्वा म्हारे पास जी मन वसइ ॥ आँकणी ॥
वाणी ते हिज जिण सजी सखि, गुहिर घटा वन घोर ।
ज्योति झबूकै वीजली सखि, ए आडम्बर कोइ और रे ।
प्रमुदित भविजन मोर रे, पिण नहीं किहा कुमति चोर रे ।
कंदर्प तणौ नहीं जोर रे, अन्धकार न किण ही कोर रे ॥२॥ए०॥

महिर करइ सहु उपरइ सखि, लहिर पवन नी तेह ।
सुर असुरादिक आवता सखि, पीली थइ दिशि जेह रे ॥
जाणै कुटज कुसुम रज रेह रे, जिहा धर्म ध्वजा गुण गेह रे ।
ते तउ इन्द्र धनुप वणेह रे, अभिनव कोई पावस एह रे ॥
इम निरखै सहु नयणेह रे ॥३॥ए०॥

चतुर पुरुप चातक तणी सखि, मिट गई तिरस तुरन्त ।
हरिहर रूप नक्षत्र नउ सखि, नाठउ तेज नितन्त रे ॥
थयउ दुरित जवासक अन्तरे, मुनिवर मंडुक हरखंत रे ।
जिहाँ विजयमान भगवंत रे, विकशित त्रय भुवन वनत रे॥४॥ए०॥

सुर मधुकर आलंविया सखि, पदि कदिंब अरविन्द ।
विरही जेह कुदर्शनी सखि, पावइ दुख नइ दन्द रे ॥
युद्ध थी विरम्यां राजिन्द रे, हरिया थया सुगुण गिरिंद रे ।
विस्तरति मत्ति सरति अमद रे, पल्लवित वेलि सुख कन्द रे ॥
फेड्या सगलाई फद रे ॥५॥ए०॥

भिर मिर भिर मिर भर करइ सखि, नावइ किम ही थाह ।
प्रतिबोधित जन जेहवा सखि, ल्यइ वगि जिण मां लाह रे ॥

हंसा सर साभरियाह रे, ते जन धरै मुगतिनी चाह रे।
तिहां दीसइ रतन घणाहरे, जाणै नवल ममोला वाह रे ॥६॥ ए०
जीवदया जिहां जाणियइ सखि नीली हरी भरपूर।
बीज तणइ रूपइ भलौ सखि, प्रगट्यउ पुण्य अंकूर रे ॥
दुख दोहग गया सहु दूर रे, इम वर्षा भावइं भूरि रे।
प्रभुना गुण प्रवल पडूर रे, कहै 'विनयचन्द्र' ससनूरि रे ॥७॥ ए०

॥ श्री महावीर जिनस्तवनम् ॥

ढाल—हाडानी

मनमोहन महावीर रे त्रिसला रा जाया,
ताहरा गुण गाया, मनड़ा मे ध्याया।
तौही रे ताहरा खातर मैं नहीं रे,
इवड़ी सी तकसीर रे त्रि० आज्ञाकारी रे हुँ सेवक सही रे ॥१॥
तुझसुं पूरवइ जेह रे,
त्रि० रंग लागौ रे चोल मजीठ ज्युं रे।
दिन दिन वाधइ तेह रे,
त्रि० भला रे व्यवहारी केरी पीठ ज्युँ रे ॥२॥
निशिदिन मंइ कर जोड़ रे,
त्रि० ओलग कीधी स्वामी ताहरी रे।
भव संकट थी छोड़ि रे,
त्रि० अरज मानौ रे एहिज माहरी रे ॥३॥
मंइ आलंबी तुझ बांहि रे,
त्रि० कहो रे निरासी तउ किम जाइयइ रे।

विहरमान जिनवीसी

॥ श्री सीमन्धर जिन स्तवन ॥

ढाल—रसियानी

श्री सीमंधर सुन्दर साहिबा, मन्दरगिरि समधीर सलूणा ।
श्री श्रेयास नरेश्वर नन्दन, मुझ हीयड़ानुं रे हीर सलूणा ॥१॥
सोवन वरणइ रे दीपइ देहड़ी,
सुमनस सेवित पाय सलूणा ।
भद्रशाल[1] लक्षण करि राजतउ,
भेट्या भव दुख जाय सलूणा ॥२॥
चन्द्र सूरज ग्रह गण सहु प्रभु तणइ,
चरण सरण करइ नित्य सलूणा ।
जाणे रे जीत्या आप प्रभा भरइ,
करइ प्रदक्षिणा कृत्य सलूणा ॥३॥
मध्य विदेह विजय पुष्कलावती,
नयरी पुण्डरिकिणी सार सलूणा ।
तिहां विचरइ भविजन मन मोहता,
सत्यकी मातु मल्हार सलूणा ॥४॥
मेरु महीधर परि अविचल रहउ,
मुझ मन एहिज रे देव सलूणा ।
ज्ञानतिलक गुरु पदकज भमरलउ,
'विनयचन्द्र' करइ सेव सलूणा ॥५॥

।। श्री युगमंधर जिनस्तवन ।।

ढाल—नाटकियानी

बीजा जिनवर वंदियइ, युगमंधर स्वामी लो अहो युग० ।
मइं तउ सेवा जेहनी, बहु पुण्ये पामी लो अहो बहु० ।।
अध्यातम भावइं रह्यौ, मुझ अन्तरजामी लो अहो मुझ० ।
ललि ललि लागु पाउले, युगतइ शिरनामी लो अहो युगते० ।।१।।
शान्त थई अंतर गुणे, दुसमन सहु दमिया लो अहो दु० ।
दान्त पणइ अविकार थी, विपयादिक वमिया लो अहो वि० ।।
निर्धन पणि परमेश्वरु, त्रिभुवन जन नमिया लो अहो त्रि० ।
ए अचरिज प्रभु गुण तणउ, शिव सुख मन रमिया लो अहो शि०
रूप अधिक रलियामणो सो वन वन काया लो अहो ओ० ।
शत्रु मित्र समता धरइ, सम रंक नइ राया लो अहो स० ।।

राग न रीस न जेहनइ,
मद मदन न माया लो अहो म० ।
सोहग सुन्दर ना गुणइ,
भविया मन भाया लो अहो भ० ।।३।।
सज्जन जन मन रींझवइ,
नीराग सभावइं लो अहो नी० ।
विषय विभाव थी वेगलउ,
सहु विषय दिखावइ लो अहो स० ।।
सकल गुणाश्रय निज भज्यउ,
निर्गुणता ल्यावइ लो अहो नि० ।।

रंगाणी मुझ मतिए रंगइ, समकित नी सहिनाणी।
कुमति कमलिनी लवन कृपाणी, दुख तिल पीलण घाणी रे ॥३॥
शक्ति अपूर्व सहज ठहराणी, दुगति दूर हराणी।
वाणी तेहिज वेझु वेधइ, कीरति तास गवाणी रे ॥४॥ प्रा० ॥
निसढ़ नरेश्वर सुत शुभनाणी, माता भू नन्दा जाणी।
विनयचन्द्र कवि ए कही वाणी, सुणता अमी समाणी रे ॥प्रा०॥

॥ श्रीसुजात जिन स्तवनम् ॥

ढाल—झाझरिया मुनिवरनी देशी

श्री सुजात जिन पंचमा जी, पंचम गति दातार।
पंचाश्रव गज भेदिवा जी, पंचानन अनुकार ॥ १ ॥
पंचम ज्ञान प्रपंच थी जी, धर्मादिक पणि द्रव्य।
जेह त्रिकाल थकी कहै जी, सद्दहै मनि तेह भव्य ॥ २ ॥
पंच वाण नइ टालिवा जी, पंच मुखोपम जेह।
विरहित पंच शरीर थी जी, अकल अलख गुण गेह ॥ ३ ॥
पंचाचार विचार सुँ जी, दाखइ-जे व्यवहार।
कल्पातीत पणइ रहइ जी, चरित अनेक प्रकार ॥ ४ ॥
देवसेन नृप नन्दनो जी, देवसेना जसु मात।
विनयचन्द्र सोहइ भलौ जी, रवि लंछन विख्यात ॥ ५ ॥

॥ श्रीस्वयंप्रभ जिन स्तवनम् ॥

ढाल—लाछलदेवी मल्हार

श्री स्वयंप्रभ, अतिशय रत्न निधान,
आज हो हेजइ रे हेजालू हियड़ै हरखियइजी ॥१॥
जिम चकवा दिनकार मोरां नइ जलधार,
आज हो नेहइं रे गुण गेही नयणे निरखियइजी ॥२॥
जिहा विचरै प्रभु एह, तिहा होइ सुख अछेह,
आज हो पुण्यें रे परमेश्वर प्रेमइं परखियइजी ॥३॥
दुख महोदधि पाज, भव जल तारण जहाज,
आज हो रंगइ रे रलियालउ साहिब सेवियइ जी ॥४॥
मित्रभूति कुलचन्द, सुमंगला नौ नन्द,
आज हो वंदइ रे विनयचन्द्र हित आणी हियइ जी ॥५॥

॥ श्री ऋषभानन जिन स्तवनम् ॥

ढाल—आवौ आवौ जी मेहलै आवतइ

ऋषभानन जिनवर वंदी, हुँतौ थयौ रे अधिक आनन्दी।
करि कर्म तणी गति मंदी, आतम सुं दुर्मति निंदी।
आवौ आवौ साहिब सुखकन्दा, मुझ नयन चकोर नइ चन्द्रा।
आवौ आवौ जी सेवक संभारै ॥आकणी॥
संभारइ तेह सहेजा, स्यु संभारइ रे निहेजा ॥१ आ० ॥
जोड्यौ जे तुम सु नेह, जाणे पर्वत केरी रेह ॥आ०॥
जमवारइ जायइ नहीं तेह, जिम आई धरायें मेह ॥२ आ०॥

सकल क्रिया गुण दाखवी,
अक्रिय रुचि पावइ लो अहो अ० ॥४॥
सुदृढ़ राज कुल दिनमणी,
जसु माय सुतारा लो अहो ज० ।
गज लंछन अति गहगहइ,
सहुनइ सुखकारा लो अहो स० ॥
वप्र विजय मा विचरता,
ज्ञानतिलक उदारा लो अहो ज्ञा० ॥
विनयचन्द्र विनयइं कहइ,
जिन जगत आधारा लो अहो जि० ॥५॥

॥ श्री बाहुजिन स्तवन ॥

ढाल—योगिनानी

बाहु जिनेश्वर वीनवुं रे,
बांह दिउ मुझ स्वामि हो जिनजी बा० ।
भवसायर तरवा भणी रे,
तारक ताहरु नाम हो जिनजी बा० ॥१॥
जिणंदराय दर्शन दीजो आज,
जिणंदराय जिम सीझइ मुझ काज । आंकणी ॥
कल्पतरु कलि मां अछइ रे,
वंछित देवा काज हो जिनजी वं० ।
तुम बांहि अवलंबता रे,
लहियइ भव जल पाज हो जिननी ल० ॥२॥जि०॥

पंच कल्पतरु अवतर्या रे,
अगुलि मिसि तुम्ह बांहि हो जिनजी अ० ।
तुम्ह दानइ किंकर थका रे,
सेवइ तेह उच्छाहि हो जिनजी से० ॥३॥ जि०॥
सुक्ख अतींद्रिय द्यौ तुम्हे रे,
ते गुण नहीं ते माहि हो जिनजी ते० ।
तिण हेतइ परगट नहीं रे,
सांप्रत मनुजन माहि हो जिनजी सां०॥४॥
सुग्रीव कुल मलयाचलइं रे,
चन्दन विजयानन्द हो जिनजी चं० ।
विनयचन्द्र वंदइ सदा रे,
त्रीजा श्रीजिनचन्द्र हो जिनजी ॥५॥॥जि०॥

॥ श्रीसुबाहु जिन स्तवनम् ॥

देशी छींडीनी

श्री सुबाहु जिनवर नइं नमियइं, उमाहउं बहु आणी ।
जस प्रभुता नउ पारन लहियइ, किम कहि सकियइ वाणी ॥१॥
प्राणी प्रभु लीधु चित्त ताणी, प्रभु मूरति उपशमनी खाणी,
मुझ मन ए ठकुराणी रे प्रा० ॥
ज्ञानी जाणइ पिण न कहायइ, सर्व थी जस गुण खाणी ।
परिमलता गुणनी अति निर्मल, जिम गंगा नउ पाणी रे॥२॥प्रा०॥

लीणौ तुम पद अरविन्दइ, मुझ मन मधुकर आनन्दइं ॥आ०॥
न रहइ ते दूर लगार, शुक नन्द यथा सहकार ॥३ आ०॥
तुम्ह विन हुं अवरन चाहुँ, अविचल निज भावइं आराहुँ ॥आ०
निरालंबन ध्यानइ ध्याउँ, क्षीरनी परइं मिलि जाउँ ॥४ आ०॥
वीरसेना नन्द विराजइ, कीर्तिराज कुलइ निज छाजै ॥आ०॥
सिंह लंछन दुख गज भाजइ, कवि 'विनयचंद्र' नइ निवाजइ ॥५॥

॥ श्री अनन्तवीर्य जिनस्तवनम् ॥

राग—चन्द्राउलानी

अनंतवीर्य जिन आठमउ रे, जीत्या कर्म कपाय।
नाम ध्यान थी जेहनइ रे, अष्ट महा सिद्धि थाय॥
अष्ट महा सिद्धि जेहनइ नामइ, सहज सौभाग्य सुयशता पामइ
जे इच्छित होइ सुख नइ कामइ,
तेह लहइ नित ठामो ठामइ जी ॥१॥ विहरमानजी रे।
ईति उपद्रव सवि टलइ रे, जिहा विचरइ जिनराज।
भीति रीति पसरइ नहीं रे, जाणि गंध गजराज॥
जांणि गध गजराज सोहावइ, सुभग दान ना भर वरसावइ।
कपट कोट दहवट्ट गमावइ,
नित नयवाद घंटा रणकावइजी ॥२ विह०॥
अतिशय कमला हाथिणी रे, परिवरियउ निशदीश।
सहजानन्द नन्दन वनइ रे, केलि करइ सुजगीश॥
केलि करउ परमारथ जाणी, समता तटिनी सजल वखाणी।

आगम सुँडा दण्ड प्रमाणी,
परमत गज संगति नवि आणी जी ॥३ विह०॥
शुक्ल ध्यान उज्वल तनु रे, क्षायिक दर्शन ज्ञान।
कुँभस्थल जसु दीपता रे, महिमा मेरु समान ॥
मेरु समान उत्तुँग ए देव, भविक कोड़ि जसु सारइ सेव।
अचिर अभंग विचित्र कलायइ,
तउ तस चरण सरोज मिलायइजी ॥४॥ विह०॥
मेघ नृपति कुल सुर पथइं रे, भासुर भानु समान।
मंगलावती माता तणउ रे, नन्दन गुणह निधान ॥
गुण निधान गर्जित गज लंछन, वर्ण अनोपम अभिनव कंचन।
भविक लोक नइं नयणानन्दन,
'विनयचन्द्र' करइ नित नित वंदनजी ॥५ विह०॥

॥ श्री सूरप्रभ जिन स्तवनम् ॥

ढाल—माहरी सही रे समाणी

सूरप्रभु प्रभुता तइं पामी
तोरा चरण नमुँ शिर नामी रे। मोरा अतरजामी ॥
देव अवर दीठा मंइ स्वामी,
पिण ते क्रोधी कामी रे ॥१॥ मो०॥
तुझ मुद्रानइ जोड़इ नावइ,
तउ सेवक दिल किम आवइ रे। मो०।

हॅस सोस वग जाति न पावइ,
यद्यपि धवल सभावइं रे ॥२॥ मो० ॥
महिमा मोटिम तणी वड़ाई,
किम लहइ ते सुवड़ाइ रे। मो०।
तरु भावइ तउ छइ इक ताई,
पिण अंब नींव अधिकाई रे ॥३॥ मो०॥
पंखी जातइं एकज हूआ, पिण काग कोइल ते जूआ रे। मो०।
देव अवर तुम्ह थी सहु नीचा, तुम्हे तउ गुणाधिक ऊँचा रे ॥४॥
चन्द्र लंछन जिन नयणानन्दा, 'विनयचन्द्र' तुम्ह वन्दा रे ॥५ मो०

॥ श्री विशाल जिनस्तवनम् ॥

ढाल—थारे महिला ऊपरि मेह फरोखे वीजली हो लाल फरोखइ वीजली

श्री सुविशाल जिणद, कृपा हिव कीजिए हो लाल कृपा० ।
वांह ग्रह्या नइ छेह, कहो किम दीजियइ हो लाल कहो० ॥
सहज सलूणा साहिब, नेह निवाहियइ हो लाल नेह० ।
मुझ परि कूरम दृष्टि, तुम्हारी चाहियइ हो लाल तु० ॥१॥
चातक नइ मन मेह, विना को नवि गमइ हो लाल वि०
हंस सरोवर छोडि कि, छीलर नवि रमइ हो लाल कि छी०
गंगा जल झील्या ते, द्रह जल नादरै हो लाल कि द्रह०
मोह्या मालती फूल ते, आउल स्युं करइ हो लाल कि आ०॥२॥
भवि भवि तुं मुझ स्वामी, सेवक हुं ताहरौ हो लाल कि से० ।
जन्म कृतारथ आज, सफल दिन माहरौ हो लाल स० ॥

देव अवरनी सेव, कवण चित मां धरइ हो लाल क०
प्रभु तुमचउ उपगार, कदापि न वीसरइ हो लाल क० ॥३॥
ओलगडी अविनीत, तणी पिण आपणी हो लाल त०
जाणि करौ सुप्रमाण, वडाई तुम तणी हो लाल व०
सेवक आप समान, करौ जो जग धणी हो लाल क०
तउ त्रिभुवन मां वाधइ, कीरति अति घणी हो लाल की ॥४॥
नाग नृपति शुभ वश, गगन तर दिनमणी हो लाल ग०
भद्रा राणी नन्द, कंचन वरणइ गुणी हो लाल कं०
लंछन भासत भानु, कला सुन्दर वणी हो लाल क०
ज्ञानतिलक प्रभु भक्ति, 'विनयचन्द्रइ' भणी हो लाल वि० ॥५॥

॥ श्री वज्रधर जिनस्तवनम् ॥

ढाल—हॅजा मारू हो लाल आवो गोरी रा वाल्हा

रंग रंगीला हो लाल, वज्रधर जिणचंदा,
नयन रसीला हो लाल, वंदइ वज्रधर वृन्दा।
अंग असीला हो लाल, तुम्ह नइ दीठा आणंदा,
मुगति वसीला हो लाल, समता सुरतरु कन्दा ॥१॥
हर्ष हठीला हो लाल, सज्जन सुखकारी,
छयल छवीला हो लाल, मूरति मोहनगारी।
जगत नगीना हो लाल, आयो हुं तुम्ह शरणइ,
जिम जल मीना हो लाल, लीणउ तिम तुम्ह चरणइ ॥२॥

प्रेम मइं कीना हो लाल, जिम मालती भमरी,
हेजइ भीना हो लाल तारो महिर करी।
वहु तपसीना हो लाल, ताहरउ दर्शन पाखइ,
दास अमीना हो लाल, वारइं ७ स्युँ भाखइ ॥३॥
तुम्हे प्रवीणा हो लाल, समकित रतन दाता,
देखी दीणा हो लाल, पूरो सुख नइ साता।
दुर्जन हीणा हो लाल, ते तउ विमुख करउ,
तुम गुण चीणा हो लाल, सेवक हाथइं धरउ ॥४॥
पद्मरथ नृपति हो लाल, नन्दन गुण निलयो,
मात सरसती हो लाल, विजया कंत जयो।
संख लंछन सोहइ हो लाल, ज्ञानतिलक छाजैं,
'विनयचन्द्र' मोहे हो लाल, महिमा महियल गाजैं ॥५॥

॥ श्री चन्द्रानन स्तवनम् ॥

ढाल—फाग

चन्द्रानन जिन चंदन शीतल, दरसण नयण विशेष।
वयण सुकोमल सरस सुधारस, सयण हर्पित होइ देख ॥१॥
सोभागी जिनवर सेवियइ हो,
अहो मेरे ललना अद्भुत प्रभु रूप रेख ॥आंकणी॥
विपय कपाय दवानल केरो, टालइं ताप सजोर।
सहज स्वभाव सुचन्द्रिका हो, उल्लसित भविक चकोर ॥२ सो०॥

मिथ्यामत रज दूर मिटावइ, प्रगटइ सुरुचि सुगंध ।
अरुचि परूपता प्रगट न होवइ, करुणा रस श्रवइ सुवंध ॥३ सो०॥
चन्द्रानन आनन उपमानइ, हीणउ खीणउ चंद्र ।
शून्य ठाम सेवइ ते अहनिसि, मानु कलंकित मंद ॥४ सो०॥
श्री वाल्मीक नृपति कुल भूषण, पद्मावती नौ नन्द ।
वृषभ लंछन कंचन तनु प्रणमइ, प्रमुदित कवि 'विनयचन्द्र' ॥५॥

॥ श्री चन्द्रावाहु जिनस्तवन ॥

ढाल—त्रिभुवन तारण तीरथ पास चिंतामणि रे कि पा०

चन्द्रवाहु जिनराज उमाह धरि घणउ रे । उमाह० ।
दास तणा दोय वयण निजर करिनइ सुणउ रे । नि० ।
जनम सम्बन्धी वैर विरोध ते उपसमइ रे । वि० ।
समवशरण तुम देख पंखी सवला भमइ रे ॥ पं० ॥१॥
छय ऋतु आवी पाय सेवइ प्रभु तुम तणा रे । से० ।
आप आपणी करइ भेट कि पुण्य प्रकर घणा रे कि ।
नीप कदम्ब नइ केतकि, जूहि मालती जू रे कि । जू० ।
विउलसिरि वासत कि जातिलता छती रे कि ॥जा० ॥२॥
शतदल कमल विशाल कि करणी केतकी रे । कि क० ।
वन्धु जीवना थोक अशोक सुवंधु की रे । अ० ।
सप्तपर्ण प्रियंगु सरेसड़ मोगरा रे । स० ।
लाल गुलाल सरल चंपक परिमल धरा रे ॥ स० ॥३॥

तिलक केसर कोरंट वकुल पाडल वली रे । व० ।
दमणौ मरुवो कुसुम कली वहु विध मिली रे । क० ।
होइ अनुकूल समीर धरइ नहीं तूलता रे । ध० ।
तौ किम सहृदय लोक धरै प्रतिकूलता रे ।। ध० ।।४।।
देवानन्दन भूप कुलाम्वर दिनमणि रे । कु० ।
रेणुका माता नन्द लीलावती नउ धणी रे । ली० ।
कमल लञ्छन भगवान 'विनयचन्द्रइ' थुण्यौ । वि० ।
तुम गुण गण नौ पार, कुंणइ ही नवि गुण्यो रे ।।कुं० ।।५।।

।। श्री भुजंग जिनस्तवन ।।

ढाल—झूवखड़ानी

भुजंग देव भावइ नमुँ, भगति युगति मन आणि ।।सलूणेसाजना
भुजंग नाथ वंदित सदा, सुरनर नायक जाणि । स० ।।१।।
हुँ रागी पण तुँ सही, निपट निरागी लखाय । स० ।
ए एकंगी प्रीतड़ी, लोका माहि लजाय । स० ।।२।।
आश्रित जन नइं मूकतां, प्रभु अति हासी थाय । स० ।
शंकर कंठइ विप धर्यो पिण ते नवि मूकाय । स० ।।३।।
जे नेही नेहइं मिलै, तउ तेह सुं मिलियइ जाय । स० ।
तेह मिल्यइ स्युं कीजियइ, जे काम पड्या कमलाय । स० ।।४।।
महावल नृप महिमा तणौ, नन्दन गुण मणि धाम । स० ।
कमल लंछन प्रभु ना करइ, विनयचन्द्र' गुण ग्राम । स० ।।५।।

॥ श्री ईश्वर जिनस्तवनम् ॥

ढाल—थारै माथे पिचरग पाग सोनारो छोगलउ मारूजी

ईश्वर जिन नमियइ, दु ख नीगमियइ भव तणा । वाल्हाजी ।
चउगति नवि भमियइ, दुर्जन दमियइ आपणा । वा०।
संसारइ भमतां वहु दुख खमता भव गयउ । वा० ।
भव थिति नइ भोगइ, कर्म संयोगइ सुख थयउ । वा० ॥१॥
तुं साहिव मिलियउ, सुरतरु फलियउ आगणइ । वा० ।
मिथ्यामति टलियउ, दिन मुझ वलियउ हेजइं घणइ ।वा० ।
हुँ छुँ अपराधी, मइं सेवा लाधी तुम्ह तणी । वा० ।
करउ सहज समाधि, कीरति वाधी अति घणी । वा० ॥२॥
मन विपय न समियउ, क्रोधइं धमियउ कुभाव थी । वा० ।
आलइं भव गमियउ, हुँ नवि नमियउ भाव थी । वा० ।
हिव मिथ्यात्व वमीयउ, मन उपसमियौ अति घणुँ । वा० ।
दुर्दम दिल दमियउ, समकित रमीयउ गुण थुणुँ । वा० ॥३॥
तुं आगम अरूपी, अकल सरूपी मोहना । वा० ।
परमातम रूपी, ज्योति सरूपी सोहना ॥ वा०॥
तुँ आप अनायक, त्रिभुवन नायक गुण भर्यो । वा० ।
जित मनमथ सायक, क्षायक भावइं भव तर्यो ॥ वा० ४॥
गलसेन महीपति वंश विभूपण दिनमणी । वा० ।
जसु सुयशा माता, जगत विख्याता वहु गुणी ॥ वा० ॥
कंचन तनु जीपइ, लंछन दीपइ निशामणी । वा० ।
'विनयचन्द्र' आनन्दइ श्री जिन वंदइ सुरमणी ॥ वा० ५ ॥

।। श्री नेमिप्रभ स्तवनम् ।।

ढाल—हींडोलणारी, कर्म हींडोलणइ माई झूलइ चैतनराय

हर्ष हींडोलणइ झूलइ, नेमिप्रभ जिनराय।
जिहा शुद्ध आशय भूमि पटली, सोहियइ थिरवाय।
तिहा ज्ञान दर्शन थंभ अनुभव, दिव्य भाउ लसाय ।।
उपदेश शिख्या सहज सकलि, विविध दोर बनाय।
सौंदर्य्य समता भाव रूपइ, हींचितां सुख थाय ।।१।। ह०।।
जिहां चरण शोभा भाव चामर, चतुरता बींझाय।
व्रत सुमति गुपति प्रतीत आली, रहत हाजरि आय ।।
परपक्ष गुण शुभ वायु सुँधा, परिमलइ महकाय।
तिहा भगति जुगति विवेचनादिक दीपिका दीपाय ।।२।। ह०
सद्बोध तकीया तखत शुभ मति, विभवना समुदाय।
अनुपाधि भाव सुभाव चित्रित महित मन वचकाय ।।
जिहां सहज समकित गुण सुबन्धित, चंद्रूआ चितलाय।
शम शील लील विलास मंडित, मंडपइ धृति दाय ।।३।। ह०
कर कमल जोडी करइ सेवा, नाकि नाथ निकाय।
सुर असुर नरवर हर्ष भरि, सम्मिलित राणा राय ।।
अनुभाव जेहनइ वेर विड्डुर, दुरित दुख पुलाय।
धन धन्न प्रभु कृतपुण्य जय जय, सवद गीत गवाय ।।४।। ह०।।
वीरराय कुल अभ्र दिनमणि, सुजश तिहुअण छाय ।।
जसु सूर लछन वरण कंचन, सुभग सेना माय ।।
भवि जीव बोहइ चित्त मोहइ, ज्ञानतिलक पसाय ।।
कवि 'विनयचन्द्र' प्रमोद धरि नइं, देव ना गुण गाय ।।५।। ह०

॥ श्री वीरसेन जिन स्तवनम् ॥

राग—कड़खानी

जयउ वीरसेना भिधो जिनवरो जग जयो,
वीरसेना थकी सुयश पायउ।
द्रव्य गुणवाद रण तूर नादइ करी,
शुद्ध उपदेश पड़हउ वजायउ ॥१॥ ज० ॥
मद मदन मान मुख अटिल जे उंवरा,
मोह महीपति तणा जे प्रसिद्धा।
अचल अप्रमत्तता शक्ति गुण गण करी,
विविध प्रहरण करी जेर कीधा ॥२॥ ज० ॥
सौर्य सन्नाह तन टोप गम्भीर्य्यता,
वीर्य गुण वेदिका ओटि लीधी।
सुमति वन्दूक तप दारु गोली गुपति,
अति कपट कोट नइं चोटि कीधी ॥३॥ज०॥
रागनइं द्वेप वे तनुज मोह भूपना,
तेह सुं सबल संग्राम मण्ड्यउ।
सहज उदासता शक्ति वल अधिक थी,
मोह मिथ्यात नउ पक्ष खण्ड्यउ ॥४॥ ज० ॥
कुमर भूमिपाल भूपाल नउ दीपतउ,
भानुमति नन्द आनन्ददाई।
वृषभ लन्छन गुणी भुवन चूड़ामणि,
कवि 'विनयचन्द्र' जस कीर्ति गाई ॥५॥ज०॥

॥ श्री महाभद्र जिन स्तवनम् ॥

ढाल—चँवर ढुलावइ हो गजसिंह रौ छावौ महुल में जी

साहिब सुणियइ हो सेवक वीनति जी,
श्री महाभद्र जिणंद।
मुझ मन मधुकर हो नित लीणउ रहे जी,
प्रभु पदकज मकरन्द ॥१॥सा०॥
एह अनादि हो अनन्त ससार मंइ जी,
तुम्ह आणा विन स्वामि।
जे दुख पाम्या हो नाम लेई स्युँ कहुँ जी,
फरस्या सवि भवि-भवि ठामि ॥२॥सा०॥
अविरत अव्रत हो परवश नइ गुणे जी,
मोह नृपति नइ जोर।
कर्म भरम नइ हो जाल अलूझियौ जी,
चंचलता चित चोर ॥३॥सा०॥
हुँ निज वीती हो वात शी दाखवूँ जी,
जाणउ छउ जिनराय।
तारक विरुद हो वहियइ आपणौ जी,
वांह ग्रह्यांनी लाज ॥४॥सा०॥
देवराय नृप नउ हो कुँअर दीपतउ जी,
उमा देवी जसु माय।
सिंधुर लंछन हो वरणइ कंचनइ जी,
'विनयचन्द्र' सुखदाय ॥५॥सा०॥

॥ श्री देवयशा जिन स्तवनम् ॥

ढाल—काचीकली अनार की रे हा

तुम्हे तउ दूर जइ वस्या रे हा,
आवी केम मिलाय । मेरे साहिवा ।
संदेशो पहुँचइ नहीं रे हा,
कागल पिण न लिखाय ॥ मे० ॥१॥
पिण अनन्त ज्ञानी अछउ रे हा,
जाणउ मन ना भाव । मे० ॥
हेज धरी मुझ नइं मिलौ रे हा,
जिम होइ प्रीति जमाउ ॥ मे० ॥२॥
अनुकम्पा करि नइ करउ रे हां,
समकित नउ निरधार । मे० ।
तुम्ह विन अवर न को अछइ रे हा,
जीवित प्राण आधार ॥ मे० ॥ ३ ॥
जाणी नइं नवि पूरता रे हा,
सेवक केरी आश । मे० ।
तउ साहिव शी वात ना रे हा,
हुँ पिण स्यानउ दास ॥ मे० ॥ ४ ॥
सर्वभूत नृप नन्दनौ रे हां,
गंगा मात मल्हार । मे० ।
देवयशा शशि लन्छने रे हां,
'विनयचन्द्र' सुखकार ॥ मे० ॥ ५ ॥

॥ श्री अजितवीर्य जिनस्तवन ॥

ढाल—वीरवखाणी राणी चेलणा

अजितवीरज जिन वीसमा जी,
विसरइ नहीं थांरउ नेह ।
अलख रूपी तुमे चित लिख्याजी,
आ भव पर भव जेह ॥१॥ अ०॥
प्रभु तुमे अकल कलना करी जी,
अगम्य कीधा तुमे गम्य ।
अभक्ष्य ते भक्ष्य प्रभु आचर्या जी,
आदर्या रम्य अरम्य ॥२॥ अ०॥
अपेय जे पामर लोकनइ जी,
तेह कीधुँ तुम्हे पेय ।
अंतरगति इम भावतां जी,
तुम्हे अनुपम उपमेय ॥३॥ अ०
अकल पट द्रव्य निज रूप थी,
अगम्य जे सिद्ध नुँ ठाम ।
अभक्ष्य जे काल अपेय नइ जी,
सहज अनुभव सुधा नाम ॥४॥ अ०॥
नरपति राजपाल सुंदरु जी
मात कनीनिका जास ।
स्वस्तिक लछनइ वदियइ जी,
कवि विनयचन्द्र' सुविलास ॥५॥ अ०॥

।। कलश ।।

ढाल—शाति जिन भामणइ जाऊँ

संप्रति वीस जिनेश्वर वंदउ,
विहरमान जिणराया जी।
विचरंता भविजन मन मोहैं,
सुरनर प्रणमइ पाया जी ।।१।। सं०।।
जंबूद्वीपइं च्यार सोहावइ,
धातकी पुष्कर अर्द्धइ जी।
आठ आठ विचरइ जयवंता,
अढी द्वीप नइ संघे जी ।।२।। सं०।।
मात पिता लंछन नइ नामइ,
भगति धरी नइ थुणिया जी।
ए प्रभु ना अनुभाव थकी मंइ,
दुरित उपद्रव हणिया जी ।।३।। सं०।।
संवत सत्तर चउपन्नइ वरपइ,
राजनगर में रंगइ जी।
वीसे गीत विजयदशमी दिन,
कर्या उलट धरि अंगइजी ।।४।। सं०।।
गच्छपति श्रीजिनचन्द्रसूरिन्दा,
हर्षनिधान उवभाया जी।
ज्ञानतिलक गुरु नइ सुपसायइ,
'विनयचन्द्र' गुण गाया जी ।।५।। सं०।।

।। इति विंशतिका समाप्ता ।।

इति श्री विनयचन्द्र कवि विनिर्मिता विंशतीर्थंकराणा विंशतिका संपूर्णम्

॥ श्रीशत्रुंजय यात्रा स्तवनम् ॥

ढाल—कंत तत्राकू परिहरो, एहनी।

हांरे मोरालाल सिद्धाचल सोहामणो,
ऊँचो अतिहि उत्तग मोरालाल।
सिद्धि वधू वरवा भणी,
मानु उन्नत करि चग मोरा लाल ॥१॥
सेत्रूँजा शिखरे मन लागो,
साहिबनी सूरति चित लागौ ॥ आ० ॥
हांरे मोरा लाल पालीताणौ तलहटो,
जिहां ललितसरोवर पालि ॥ मो० ॥
पगला प्रथम जिणंदना,
प्रणमीजे सुविशाल मोरा लाल ॥२॥से०॥
हारे मोरा लाल प्रणमी नै पाजे चढ़ो,
समवसस्था जिहा नेम ॥ मो० ॥
जिहां प्रभु पगला वंदियै,
पूरण धरि नै प्रेम मोरा लाल ॥३॥से०॥
हारे मोरा लाल आगल चढ़तां, अतिभली,
नीली धवली पव ॥ मो० ॥
कुंडे कुडे पादुका,
वदे भवियण सर्व मोरा लाल ॥४॥से०॥
हारे मोरा लाल अनुक्रमि पहिला कोट मे,
पेसी कीध प्रणाम ॥ मो० ॥

वाघणि पोले पैसतां,
नाग मोरनो ठाम मोरा लाल ॥५॥से०॥
हारे मोरा लाल गोमुख ने चक्केसरी,
प्रणमो वामे हाथ मोरा लाल ॥ मो० ॥
चौंरी नेम जिणंदनी,
सरगवारी ने साथ मोरा लाल ॥६॥से०॥
हारे मोरा लाल चौमुख जयमलजी तणो,
नमतां होइ आह्लाद ॥ मो० ॥
अवर चैत्य नमि पेसीयै,
आदि जिणंद प्रासाद मोरा लाल ।७।से०।
हारे मोरा लाल दीजे मध्य प्रदक्षिणा,
खरतरवसही वांदि ॥ मो० ॥
पुंडरीक गणधर तणी,
प्रतिमा अति आनंदि मोरा लाल ।८।से०।
हारे मोरा लाल सहसकूट अष्टापदे,
प्रमुख वहु जिन वांदि ॥ मो० ॥
राइणि तलि पगला नमो,
गणधर पगला सार मोरा लाल ॥९॥से०॥
हारे मोरा लाल मूल गंभारे ऋषभजी,
पासै होइ जिणंद ॥ मो० ॥
मरुदेवी माता गंज चढ़ी,
आगल भरत नरिंद मोरा लाल ॥१०॥से०॥

हारे मोरा लाल चवदैसय वावन अछै,
गणधर पगला सार ॥ मो० ॥
इणिपरि देइ प्रदिक्षणा,
नमिये नाभि मल्हार मोरा लाल ॥११॥से०॥
हारे मोरा लाल चैत्यवंदन प्रभु आगले,
करियै आणी भाव ॥ मो० ॥
हिव वाहिर देहरा थकी,
जे छै ते कहुँ भाव मोरा लाल ॥१२॥से०॥
हारे मोरा लाल सूर्यकुंड भीमकुंड ने,
पासे पगला जान ॥ मो० ॥
ओलखाभूल आवियो,
फरसीजे जिन न्हाण मोरा लाल ॥१३॥से०॥
हारे मोरा लाल जाइये चेलणतलावड़ी,
सिद्ध सगला तिणि ठौड़ ॥ मो० ॥
सिद्धवड़ै प्रभु पादुका,
नमियै वे कर जोड़ मोरा लाल ॥१४॥से०॥
हारे मोरा लाल आदिपुरे आवि चढ़ों,
फिरि नै ए गिरिराज ॥ मो० ॥
हथणी पोले आविनै,
वलि वंदो जिनराज मोरा लाल ॥१५॥से०॥
हारे मोरा लाल वीजी जात्र करिये तिहां,
वाहिर खमणा चैत्य ॥ मो० ॥

निरखी अद्भुत भेटियें,
अति प्रसन्न हुवे चित्त मोरा लाल ॥१६॥से०॥
हांरे मोरा लाल पांडव पांचे प्रणमियै,
अजित शांति जिनराय ॥ मो० ॥
टुंक शिवा सोमजी तणो,
तिहां चोमुख भेटो आय मोरा लाल ॥१७॥से०॥
हारे मोरा लाल गिरि तल सेत्रुंजी नदी,
जोवो आणि विवेक ॥ मो० ॥
इणि परि विमलाचल तणी,
तीरथ भूमि अनेक मोरा लाल ॥१८। से०॥
हारे मोरा लाल पाजे पाजे ऊतरी,
तलहटी जिन परसाद ॥ मो० ॥
स्नात्र महोच्छव कीजीए,
टाली पंच प्रमाद मोरा लाल ॥१६॥से०॥
हांरे मोरा लाल एगिरिनी गुण वर्णना,
करतां नावै पार ॥ मो० ॥
सीमंधर सामी सेंमुखै,
महिमा कही अपार मोरा लाल ॥२०॥से०॥
इम भक्तिपूर्वक युक्ति सेती, थुण्यो सेत्रुजा तीर्थ नइ।
संवत सतर पंचावनइ वर, पोप वदी दसमी दिनइ॥
श्रीपूज्य जिनचन्द्रसूरि पाठक, हरषनिधान हरषइ घनइ।
परिवार सों जिन यात्र कीधी, 'विनयचन्द्र' इम भणइ॥२१॥

।। श्री ऋषभ जिन स्तवनम् ।।

ढाल—फूली ना गीतनी देसी

वीनति सुणो रे म्हांरा वाल्हा, राजि मरुदेवा राणी ना लाला
राजि थांरा चरण नमुं शिरनामी ।
थेतौ भूखा नी भावठ भंजउ,
राजि निज सेवक तणा मन रंजउ राजि० ॥१॥
म्हारां मननी आशा पूरो,
राजि म्हांरा कठिन करम दल चूरउ। राजि०।
थांरा गुण सुं मो मन लागो,
राजि हियइ राखुं रे वांभण जिम तागउ ॥ २ ॥
थांरी सूरत अधिक सुहावै,
राजि म्हारा नयण देखि सुख पावइ राज०
थांरी कंचनवरणी काया,
राजि थारउ रूप सकल सुख दाया। राज० ।३॥
सोहइ नयन कमल अणियाला,
राजि समतामृत रस वरसाला । राजि०।
थे तो नाभि नरिंद कुल चन्दा,
राजि थांनइ सेवे सुर नर इन्दा। राजि० ॥ ४ ॥
थांरो ध्यान हिया विच धारूं,
राजि थानइ निशिदिन कहीन विसारूं ।राजि०।

त्रिभुवन नउ मोहनगारउ,
राजि तिणि लागइ मुझ नइ प्यारौ ।राजि० ॥५॥
तुझ नइ देखी दिल फूली,
राजि तुझ पास सदा रहइ भूली। राजि०।
मुझ नइ निज सेवक जाणी,
राजि मुझ तारउ करुणा आणी। राजि० ॥६॥
मइ तउ पूरब पुण्यइ पाया,
राजि प्रभु चरणे चित्त लगाया। राजि०।
श्री ऋृषभ जिणंद जगराया,
विनयचन्द्र हरख सुं गाया राजि० ॥ ७ ॥

॥ श्री शत्रुंजय मंडन ऋषभदेव स्तवनम् ॥

ढाल—माखीनी

वात किसी तुझनइ कहुं, मुझ नइ आवइ लाज ऋषभजी।
विगर कह्या मन नवि रहइ, हिव सांभलि जिनराज ।ऋृ०॥१॥
हुं माया सुँ मोहीयउ, मइ कीधा पर द्रोह । ऋ०।
अधम तणी संगति ग्रही, न रही संयम सोह। ऋ० ॥२॥
मूझि रह्यउ संसार में, न धर्यो ताहरउ ध्यान। ऋृ०।
परमारथ पायउ नहीं, भरियउ घट मा मान। ऋृ० ॥३॥

तृष्णा सुं लागी रह्यउ, पिण न भज्यउ संतोप। ऋृ०।
ठावा मुझ माहे मिलइ, सगलाई जे दोप। ऋृ० ॥४॥

कुमति घणी मुझ मन वसइ, सुमति थकी नहीं नेह। ऋृ०।
माठी करणी मा पड्यउ, हुं अवगुण नउ गेह। ऋृ० ॥५॥

वलि झूठी सांची करूं, वातां तणउ विचार। ऋृ०।
हुं लंपट नइ लालची, कपट तणउ नहीं पार। ऋृ० ॥६॥

ढाकुं अवगुण आपणा, केहनी न करूं काण। ऋृ०।
पर दूषण लेवा भणी, हुं छूं आगेवाण। ऋृ० ॥७॥

मिथ्यादृष्टि देव सुं, धरियउ पूरउ राग। ऋृ०।
अर्थ तणउ अनरथ कियउ, देखी नइ निज लाग। ऋृ० ॥८॥

थिरकि रह्यउ निज घाट में, चंचल माहरउ चित्त। ऋृ०।
संसारी सुख ऊपरइ, हीयड़उ हींसइ नित्त। ऋृ० ॥९॥

जीव सताप्या मइं घणा, पर आशायें वींध। ऋृ०।
वलि रात्रि भोजन कर्या, काज अकारज कीध। ऋृ० ॥१०॥

हिव हुं किम करि छूटिसुं, कीधा करम कठोर। ऋृ०।
भव दुख मां हुं भीड़ीयउ, कोई न चालइ जोर। ऋृ० ॥११॥

पिण इक शरणउ ताहरउ, लीधउ छइ जग तात। ऋृ०।
देस्युं ताहरी सानिधइ, दुर्जन नइ सिर लात। ऋृ० ॥१२॥

'विनयचन्द्र' प्रभु तू अछइ, सेत्रुजय सिणगार। ऋृ०।
चरण ग्रह्या में ताहरा, मुझ कुमति नइ तार। ऋृ० ॥१३॥

॥ श्री अभिनन्दन जिन गीतम् ॥

ढाल—प्रोहितियानी

पंथीड़ा अंदेसउ मिटस्यै जे दिनइ रे,
ते तउ मुझ नइ आज बताइ रे।
प्रभु अभिनन्दन नइ मिलवा तणउ रे,
अलजो ए मनड़ै न खमाइ रे ॥१॥ पं० ॥

ते शिवपुर वासउ वसे रे,
हुं तउ मानव गण मइं जोय रे।
प्राणवल्लभ दुर्लभ जिनराज नी रे,
कहि नै सेवा किण विधि होय रे॥२॥पं०॥

पाख हुवै तउ ऊडि नै रे,
जाइ मिलीजै तेह सुं नेट रे।
ओलग कीजइ वेकर जोड़ि नै रे,
स्युं वलि काइ भलेरी भेट रे॥३॥ पं० ॥

इण कलि संमुख नवि मिलइ रे,
वलि पहुँचइ नहीं कागल मात रे।
दूर थकी जे रंग इसी परि रे,
राखिस ए पटोलै भाति रे॥४॥ पं० ॥

परम पुरुष पाहर पखै रे,
चाढै वंछित कवण प्रमाण रे।
गुण आगलि साची जाणै सही रे,
जगगुरू'विनयचन्द्र' नी वाणि रे॥४॥पं०॥

॥ श्री चन्द्रप्रभ जिन गीतम् ॥

देशी—जिनजी हो हसत वदन मन मोहतउ हो लाल

साहिवा हो पूरण ससिहर सारिखौ,
हो लाला सोहै मुख अरविंद जिणेसर
तें चित चोर्यो माहरौ हो लाल,
जिम अलि मन मकरन्द जि० ॥१॥ते०॥
गयण निसाकर दीपतौ हो लाल,
जस वड़ जिम विस्तार जि० ॥२॥ ते० ॥
तूं तेहिज सुपनइ मिलइ हो लाल,
सांप्रति दरसण दाखि जि० ।
मूढ पतीजै जे हियइ हो लाल,
लाज मोरी तुं राखि जि० ॥३॥ ते० ॥
अन्तरजामी तुं अछै हो लाल,
वाल्हेसर सुविदीत जि० ।
साहिव वस्त तिका करो हो लाल,
जिण करि आवै चीत जि० ॥४॥ ते० ॥
ते हिज वात सही करी हो लाल,
कहीये न विसरइ हेव जि० ।
'विनयचन्द्र' साचउ सही हो लाल,
श्रीचन्द्रप्रभु देव जि० ॥५॥ ते० ॥

॥ श्री शान्तिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—जे हडमानै मोंजरी ए देशी

सांभलि निसनेही हो लाल कहूं वात ते केही हो।
सगुण म्हांरा वालहा।
कहुँ वीनति केही हो लाल पिण तू छइ तेही हो। स० ॥१॥
शरणागत पालौ हो लाल, अंतर दुख टालौ हो। स०।
तुं तउ माया गालौ हो लाल, रहै मोसुं निरालौ हो। स०॥२॥
वाते परचावै हो लाल, ते मन नइ नावै हो। स० ॥
साची पतियावै हो लाल, तउ संशय जावै हो। स० ॥३॥
राख्यौ पारेवौ हो लाल, तिण परि सारेवौहो। स०।
सेवक तारेवौ हो लाल, नाकार वारेवौ हो। स० ॥४॥
शांतिनाथ सोभागी हो लाल, सोलम जिन सागी हो। स०।
'विनयचन्द्र' रागी हो लाल, जयौ तुं वड़ भागी हो। स०॥५॥

॥ श्री नेमिनाथ गीतम् ॥

ढाल—अब कउ चौमासी थे घर आवौ जावइ कहउ राजि ए देशी

नेमजी हो अरज सुणो रे वाल्हा माहरी हो राज,
राजुल कहइ धरि नेह, घरि रहउ नै राज।
साहिबा एकरस्यउ थे फिरी आवउ,
घरि रहउ नै राज।
केसरिया घरि० अलबेला घ० अभिमानी घ०,
साहिबा एकरिस्यउ ॥ आं० ॥

नेमजी हो नवभव नेह निवारनइ हो राज,
इम किम दीजइजी छेह ॥१॥ घ०॥
नेमजी हो विन अवगुण मुझ नइ तजी हो राज,
ते स्यउ मुझ मां दोष ॥घ०॥
नेमजी हो करिवउ न घटइ तुम नइ हो राजि,
अवला ऊपरि रोष ॥घ०॥सा० २॥
नेमजी हो सउ मीनति करता थका हो राजि,
मत जावउ मुझ मेलि ॥घ०॥
नेमजी हो तुम विन मुझ काया दहइ हो राजि,
जिम जल विहूणी वेलि ॥घ०॥सा० ३॥
नेमजी हो मुगति रमणि मोह्या तुमे हो राजि,
पिण तिण मां नहिं स्वाद ॥घ०॥
नेमजी हो तेह अनंते भोगीवी हो राजि,
छोड़उ छोकरवाद ॥घ०॥सा० ४॥
नेमजी हो अधिका लोभ न कीजइ हो राजि,
आणउ हियइ रे विवेक ॥घ०॥
नेमजी हो सुललित शील सुहामणी हो राजि,
हुँ तुम नारी एक ॥घ०॥सा० ५॥
नेमजी हो योवन लाहउ लीजियइ हो राज,
जोइ विषय सुख जोर ॥घ०॥
नेमजी हो चारित पिण लेज्यो पछइ हो राज,
न हुवउ कठिन कठोर ॥घ०॥सा० ६॥

नेमजी हो भलौ रे कियौ तुम वालहा हो राज,
आवी तोरण बार ॥ घ०॥
नेमजी हो रथ फेरी पाछा वल्या हो राज,
एह नहीं जग व्यवहार ॥घ०॥सा० ७॥
नेमजी हो जउ नाव्या मन मन्दिरइ हो राज,
हूँ आविस तुम पास ॥घ०॥
नेमजी हो इम कहि पिउ पासइ गइ हो राज,
राजुल धरती आश ॥घ०॥सा० ८॥
नेमजी हो प्रणमी नेम जिणंदनइ हो राज,
संयम ग्रह्यो धरि प्रेम ॥घ०॥
नेमजी हो प्रिउ पहिली मुगते गई हो राज,
वंदइ 'विनयचन्द्र' एम ॥घ०॥६॥

॥ श्री नेमिनाथ राजिमती बारहमासा ॥

राग—हिंडोल

आवउ हो इस रिति हित सइं यदुकुलचन्द,
द्यउ मोहि परम आनन्द।
रस रीति राजुल वदत प्रमुदित, सुनो यादव राय।
छोरि कै प्रीति प्रतीति प्रियु तुम्ह, क्यूँ चले रीसाय॥
चिहुँ ओर घोर घटा विराजत, गुहिर गाजत गइन।
धरि अधिक गाढ़ अषाढ़ उलट्यउ, घट्यउ चित से चइन॥१ आ०॥

उत्तंग गिरिवर प्रवर फरसत, मेघ वरषत जोर।
दमकती दामिनि वहुर भामिनी, चमकती तिहिं ठोर॥
प्रिउ प्रिउ पपीयन रटत प्रगटत, पवन के झकझोर।
इस मास सावन दिल दिढावन, सजन मानि निहोर॥२ आ०॥
दिहुँ दिसइ जलधर धार दीसत, हार के आकार।
ता वीचि पहुवै नहीं कवही, सूई कौ सचार॥
सा लगत है झरराट करती, मध्यवरती वान।
भर मास भाद्रव द्रवत अंवर, सरस रस की खान॥३ आ०॥
सरसा सरोवर विमल जल से, भरे है भरपूर।
लख लोल करत हिलोल हर्षित, हंस पक्षि पडूर॥
चन्द्र की शीतल चन्द्रिका से, विकासइं निशि नूर।
आसोज मास उदास अवला, रहत तो विनु झूरि॥४ आ०॥
संयोगिनी कौ वेष देख्यउ, तव उवेख्यउ कंत।
शृंगार शोभत सहल अंगइ, महल दीप्र दीपंत॥
उनमत पीवर अति घन स्तन, मध्य मुकुलित माल।
सखी मास काती दहत छाती, माल तौ भई झाल॥५॥आ०॥
सिव रमनि संगति सइं उमाहे जात काहे दउरि।
निज नारी प्यारी आसकारी, दीजियत क्युं छोरि॥
वनवास कीयइ भेप लीयइ, भला न कहुं तोहि।
इन मागेसिर भई मार्ग सिर परि, देखि दुखिनी मोहि॥६॥आ०॥
अति दिवस दुर्वल सवल दोषाक्रान्त निशिपति ज्योति।
संकुचित हिम हिम कठिनता सइं, कमल लटपट होत॥

चंबेल चोआ करु मरदन, दरद होइ असमान।
प्रियु पोष मास शरीर शोपत, हूं भई हइरान ॥७॥आ०॥
चल चीत प्रीतम सीत कीनी, सोउ सालत साल।
इक तनक मोरी भनक सुनिकै, छिनक करौ निहाल॥
विरह सौं फाटत हृदय मेरौ, दुख घनेरो होहि।
यह माह मास उलास धरि कै, सेझ को सुख जोहि ॥८॥आ०॥
सारिखी जोरी रमत होरी, लेत गोरी संग।
रंभित झमाल धमाल गावत, सब बनावत रंग॥
डफ ताल चंग मृदंग बावत, उडावतहिं गुलाल।
इह मास फागुन सगुन खेलउ, निरखि मोहि बेहाल ॥९॥आ०॥
जहाँ गत विपल्लव अति सपल्लव, भये झंखरझार।
अरविंद निर्मल विपुल विकसित, हसत वन श्रीकार॥
तहाँ बहुल परिमल लीन अलिकुल मिलि करत गुँजार।
यह मास चैत सचेत भई, देत मनमथ मार।१०।आ०।
लुलि लुंब झुंब कदंब होवत, अंब के चिहुँ फेर।
तरु डार धूजत मधुर कूजत, कोकिला तिहिं बेर॥
अभिलाष द्राखन कउ समानत, मउज मानत लोग।
वैशाख मंइ वयशाख बउलत, कहा पीछइं भोग ॥११॥आ०॥
रति केलि कंदल दवानल सउ, प्रबल ताप प्रसग।
अति अरुन किरन कठोर लागत, नांहि तागत अग॥
चन्दन प्रमुख झखि झखि लगाउं, धख जगावुं साय।
मन लाय ज्येठ मई ज्येठ मेरे, ल्याउ नेमि मनाय ॥१२। आ०॥

वयणे नेह वधइ नहीं रे लो,
नयणे वाधइ नेह रे सनेही।
नेह तेह स्या काम नो रे लो,
अणमिलिया रहै तेह रे सनेही ॥१०॥श्री०॥
जिम तिम मुझ नइ तेड़नइ रे लो,
करि माहरउ निरवाह रे सनेही।
'विनयचन्द्र' प्रभु सानिधइ रे लो,
नहीं खलनी परवाह रे सनेही ॥११॥श्री०॥

॥ श्री पार्श्वनाथ बृहत्स्तवनम् ॥

ढाल—देहु देहु नणद हठीली, एहनी

श्री पास जिनेसर स्वामी, तुं वाहलो अन्तरजामी रे।
जिनदेव तुं जयकारी, तुझ सुरति लागै प्यारी रे॥
साहिव सुन वीनति मोरी, वलिहारी जाउं तोरी रे॥१॥
तुं गुण अनन्त करि गाजइ, तुझ रूप अनोपम राजइ रे।
सुन्दर तुझ मुख नउ मटकौ, वारू लोयण नउ लटकउ रे॥२॥
तुं धर्म तणउ छइ धोरी, माहरउ मन लीधउ चोरी रे।
तुझ दीठां विण न सुहावइ, मुझ जीव असाता पावइ रे॥३॥
भरि निजर जोऊँ जव तुझनइ, तव आनंद उपजइ मुझनइ रे।
चित्त मांहि हुवइ रंग रोल, जाणै स्वयंभूरमण कल्लोल रे॥४॥
मइं देव घणा ही दीठा, मुख मीठा हीयड़इ धीठा रे।
मिलियउ नहीं हितुयउ कोई, त्यारइ मूॅक्या सहु जोई रे॥५॥

हुं भव भव भमतौ हार्यों, बहु दिवसे तुझ सम्भार्यो रे।
तुझ सेवा करिवी मांडी, ते किम जायइ कहौ छाडी रे ॥६॥
पूरवली प्रीति जगाई, हिवइ करौ निवाज सकाई रे।
जे मांहि दत्त गुण लहियइ, मोटा तउ तेहिज कहीयइ रे ॥७॥
तू अध्यातम मत वेदी, तइं कर्मप्रकृति सहु छेदी रे।
संसार तरी तुं बइठउ, शिवमन्दिर मां जइ पइठउ रे ॥८॥
आजन्म तुं बालउ योगी, तुं अनुभव रस नउ भोगी रे।
तुं तउ छइ निपट निरागी, हुं रागी तुझ रह्यउ लागी रे ॥९॥
रागी रागइ जे व्यापइ, तेहनइ जउ वंछित नापइ रे।
तउ भगतवच्छल बहु प्रीतइ, तेहनइ कहियइ सी रीतइ रे ॥१०॥
अविचल सुख मुझ दीजइ, परमातम रूपी कीजइ रे।
प्रभु साथइं वाते आया, कवि 'विनयचन्द्र' गुण गाया रे ॥११॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—सूंवर दे ना गीतनी

सुन्दर रूप अनूप, मूरति सोहइ हो,
सगुणा साहिब ताहरी रे।
चित माहे रहै चूप, देखण तुझ नइ हो,
सगुणा साहिब माहरी रे ॥१॥
मुझ मन चंचल एह, राखुं तुझ नइ हो,
सगुणा साहिब नवि रहइ रे।
मुझसुं धरिय सनेह, राखउ चरणे हो,
सगुणा साहिब सुख लहइ रे ॥२॥

इन भाति मन की खाति बारह, मास विरह विलास।
करि कह्यु प्रिया प्रिय पासि चरित्र, ग्रह्यउ आनि उल्लास ॥
दोउं मिले सुन्दर सुगति मंदिर, भइ जहाँ अति भंद्र
मृदु वचन ताकउ रचन भापत, विनयचन्द्र कवीन्द्र ॥१३॥आ०॥

॥ इति श्री नेमिनाथ राजीमत्योर्द्वादश मास ॥

॥ श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ वृहत्स्तवनम् ॥

ढाल—कोइलो परवत धूँधलउ, एहनी

श्री संखेश्वर पास जी रे लो,
सुणि वारू दोइ वइण रे सनेही।
दरसण ताहरउ देखिवा रे लो,
तरसें माहरा नइण रे सनेही ॥१ श्री०॥
चोल मजीठ तणी परइ रे लो,
लागउ तुझ सुं प्रेम रे सनेही।
हियड़उ हेजइ ऊलसइ रे लो,
जलहर चातक जेम रे सनेही ॥२ श्री०॥
हूँ जाणूँ जइ नइ मिलूँ रे लो,
साहिब नइ इकवार रे सनेही।
सयणा रइ मेलउ करी रे लो,
सफल हुवइ अवतार रे सनेही ॥३ श्री०॥
वाल्हा किम आवुं तिहां रे लो,
वेला विपमी जाय रे सनेही।

सुख चाहंता जीव नइ रे लो,
मत कोई लागू थाय रे सनेही ॥४ श्री०॥
केलवि कल काइ हिवै रे लो,
जिम आवुं तुझ पास रे सनेही।
आवी नइ तुझ रंझिस्युँ रे लो,
खिजमति करस्युं खास रे सनेही ॥५ श्री०॥
मत जाणौ मोनइ लालची रे लो,
दिल माहरउ दरियाव रे सनेही।
वीजउ कंइ माहरइ नहीं रे लो,
चाहइ आदर भाव रे सनेही ॥६ श्री०॥
महिर विना साहिब किसउ रे लो,
लहिर बिना स्यउ वाय रे सनेही।
सहिर विना स्यउ राजवी रे लो,
इम कलि मांहि कहाइ रे सनेही ॥७ श्री०॥
कां न करउ मुझ ऊपरइ रे लो,
कूरम दृष्टि सुदृष्टि रे सनेही।
जेथी ततखिण संपजइ रे लो,
शान्त सुधारस वृष्टि रे सनेही ॥८॥श्री०॥
वृक्ष्यादिक नइं सेवता रे लो,
पूगइ मननी आस रे सनेही।
तउ साहिब तुझ सारिखउ रे लो,
किम राखइ नीरास रे सनेही ॥९॥श्री०॥

तुं उपगारी एक, त्रिभुवन माहइ हो,
सगुणा साहिब मइं लह्यउ रे।
आव्यौ धरिय विवेक, हिवइ तुझ सरणइ हो,
सगुणा साहिब संग्रह्यउ रे ॥३॥

सरणागत साधारि, विरुद सम्भारी हो,
सगुणा साहिब आपणौ रे।
भवसायर थी तारि, तुझ नइ कहियइ हो,
सगुणा साहिब स्युं घणउ रे ॥४॥

साहिब नइ छइ लाज, निज सेवक नी हो,
सगुणा साहिब जाणिज्यो रे।
मेलउ दे महाराज, वचन हीयामइं हो,
सगुणा साहिब आणिज्यो रे ॥५॥

लाड कोड भावीत, जो नवि पूरइ हो,
सगुणा साहिब प्रेम सुं रे।
तो कुण राखइ प्रीति, तउ कुण पालइ हो,
सगुणा साहिब खेम सुं रे ॥६॥

पास जिणेसर राजि, पदवी आपउ हो,
सगुणा साहिब ताहरी रे।
कहै 'विनयचन्द्र' निवाजि, अरज मानेज्यो हो,
सगुणा साहिब माहरी रे ॥७॥

।। श्रीगौड़ी पार्श्वनाथ वृहत्स्तवनम् ।।

राग—मल्हार

नाम तुम्हारौ साभली रे, जाग्यउ धरम सनेह ।
ते तउ दिन दिन ऊलटइ रे, मानुं पावस ऋतु नउ मेह ।।१।।
गोड़ी पासजी हो, ज्ञानी पासजी हो, अरज सुणउ इण वार ।।
तुम पासे आव्या तणौ रे, अधिक ऊमाहउ थाय ।
पिण स्युं कीजइ साहिवा, आव्या नै छै अन्तराय ।।२।।गो०।।
ते माटइ करिनइ मया रे, आणी मन उपगार ।
आवी नइ मुझ थी मिलउ, दरसण द्यौ इकवार ।।३।।गो०।।
तुझ जेहवउ वलि कुण छइरे, अवसर केरौ जाण ।
निज अवसर नवि चूकियइ, करौ सेवक वचन प्रमाण ।।४।।गो०।।
तीन भवन मां ताहरौ रे, झलकइ निरमल तेज ।
सूरति देखी ताहरी वाल्हा, हसता आवै हेज ।।५।। गो०।।
तुझ मुख मटकउ अति भलौरे, जाणइ पूनिमचन्द ।
आंखड़ी कमलनी पांखडी, शीतल नइ सुखकन्द ।।६।। गो०।।
दीपशिखा सम नासिका रे, अधर प्रवाली रंग ।
दंत पंकति दाडिम कुली, दीपइ अग अनंग ।।७।। गो०।।
मुकुट विराजइ मस्तकइं रे, काने कुण्डल सार ।
वांह वाजूवन्द वहिरखा, हीयड़इ मोती नउ हार ।।८।। गो०।।
नील वरण शोभा वणी रे, अहि लंछन अभिराम ।
तुझ सारीखो जगत मां, वाल्हा रूप नहीं किण ठाम ।।९।। गो०।।

तीन छत्र सिर शोभता रे, चामर ढालइ इन्द्र ।
तुझ प्रभुता देखी करी, मोह्या सुर नर नइ नागेन्द्र ॥१०॥गो०॥
अपछर ल्यइ तुझ भामणा रे, करती नाटक जोर ।
तारौ तारौ पास जी रे, ऊभी करइ निहोर ॥११॥गो०॥
चाकर केरी चाकरी रे, प्रभु आणौ मन मांहि ।
वाल्हेसर सुप्रसन्न थयी, धरि हेत ग्रहउ मोरी बांहि ॥१२॥गो०॥
तुझ सूं लागी मोहणी रे, बीजा सूँ नहिं काम ।
साम्हौ जोवौ साहिवा, आवौ आवौ आतम राम ॥१३॥गो०॥
योगी भोगी तुझ भणी रे, ध्यावै नित एकान्त ।
मुगति रमणि रस रागीयौ, तुं नीरागी भगवन्त ॥१४॥गो०॥
अश्वसेन नृप कुल तिलौ रे, वामादेवी कौ नन्द ।
ते साहिब नइ वीनती, इम वीनवइ 'विनयचन्द' ॥१५॥गो०॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

राग—सारग

माई मेरे सावरी सूरति सुं प्यार ॥मा०॥
जाके नयन सुधारस भीने, देख्यां होत करार ॥मा०॥१॥

जासौ प्रीति लगी है ऐसी, ज्यों चातक जल धार ।
दिल मे नाम वसैं तसु निसदिन, ज्युं हियरा मइं हार ॥मा०॥२॥

पास जिनेसर साहिब मेरे, ए कीनी उक तार ।
विनयचंद्र कहै वेग लहुं अव, भव जल निधि कौ पार ॥मा०॥३॥

॥ श्री वाड़ी पार्श्वनाथ लघुस्तवनम् ॥

लांघ्या गिरवर डुंगरा जी, लाघ्या विषम निवास।
ते दुख तुझ भेट्या गया जी, साभलि वाड़ी पास ॥१॥

परमगुरु माहरै तुम्हसुं प्रीति।
पाभि सगुण तो सारिखा जी, निगुण न आवै चीत ॥२॥प०॥

नयणे निरख्या चाहसुं जी, भलो थयो परभात।
मन मेलू जो तुं मिल्यौ जी, उल्हस्यौ माहरौ गात ॥३॥प०॥

तइं तो कल का फेरवी जी, तन मन ताहरइ हाथ।
खरी कमाई माहरी जी, हिव हुं थयौ सनाथ ॥४॥प०॥

अलवि करै अराधतां जी, वायें बादल दूर।
एह विरुद सम्भारि नै चित चिंता चकचूर ॥५॥प०॥

सकज अछै तूं पूरिवा जी, घणा हरख नै लाड।
जाइ अनेरा आगलै जी, किसौ चढ़ावुं पाड ॥६॥पा०॥

वचने लागइ कारिमौ जी, लाख गुणे ही नेह।
दिल भर दिल तेवै छतो जी, जिम बावईयै मेह ॥७॥प०॥

प्रस्तावै ऊपर करै जी, वलती ए अरदास।
दरसण दे संतोषजे जी, जिम सौ तिम पंचास ॥८॥प०॥

मत बीसारेज्यो हिवै जी, सौ वाते इक वात।
अवगुण गुण करि लेखज्यो जी, विनयचंद्र जगतात ॥९॥पा०॥

।। श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ लघु स्तवनम् ।।

ढाल—आज माता जोगणी ने चालो जोवा जइये रे एहनी

भलौ वण्यो मुखडा नउ मटकौ, आखड़ली अणियाली ।
लटकालौ साहिव देखी नइ, तो सुँ लागी ताली रे ।।१।।
राजि म्हारा वीजा नइ किम मन री वाता कहियइ ।।आंकणी।।
ते पासिइ ऊभा नवि रहियइ, जे होवइ बहु मीता ।
थे म्हारा छउ अन्तरजामी, मनड़ा रा मानीता रे ।।२ रा०।।
आज मिलयउ थानइ ऊमाही, दूधे जलधर वूठा ।
प्रभु थारउ दर्शन देखन्ता, पाप दियइ पग पूठा रे ।।३ रा०।।
हियड़उ छइ माहरउ हेजाल्, सांझ सवार न देखइ ।
थासू प्रीत करण नइ आवइ, गिणइ दिवस निज लेखइ रे ।।४।।
कर जोड़ी नइ थासू इतरी, अरज करूँ सिरनामी ।
सनमुख थइ शिवसुख कां नापउ, सी कीधी छइ स्वामी रे ।।५।।
थारउ जस मैं पहिला सुणियउ, ए प्रभु आश्या पूरइ ।
तउ पोतानउ सेवक जाणी, चिन्ता किम नवि चूरइ रे ।।६ रा०।।
जग माहे तुं श्री चिन्तामणि, पारसनाथ कहावइ ।
'विनयचन्द्र' नइ मुगति सूपता, थारउ कासु जावइ रे ।।७ रा०।।

।। श्री चिन्तामणि पार्श्वनार्थ लघु स्तवनम् ।।

ढाल—वीर वखाणी राणी चेलणा जी, एहनी

अरज अरिहंत अवधारियै जी, चतुर चिन्तामणि पास ।
आतुर दरसण निरखिवा जी, मुँकीये केम निरास ।।१।।

दूपण ने पड्यउ पातरै जी, तेह वगसौ महाराज।
चाह जउ दीजीयै मो भणी जी, आज तोहिज रहै लाज ॥२॥
एक पखउ मइं तो जाणीयो जी, स्वामि सेवक व्यवहार।
धवलड़ौ दूध जिम देखिनैजी, हुं रच्यो सरल अनुहार ॥३॥
नेह कीजे निज स्वारथे जी, ते इहा को नहीं लाह।
तुं निरंजण सही माहरी जी, तिल भर कौं नहिं चाह ॥४॥
पग भरि कवण ऊभौ रहे जी, जिहाँ नहिं लाव नै साव।
कहै 'विनयचन्द्र' गिरुआहुज्योजी, हरस द्यौ देखिने दाव ॥५॥

॥ श्री पार्श्वनाथ गीतम् ॥

ढाल—सरवर खारो है नीर स० नयणा रो पाणी लागणौ हेलो एहनी देशी

तूठा हे पास जिणद ।तू०। वूठा हे अमृत मेहडा हे लो ।बू०।
रूठा हे पातक वृन्द ।रू०। पूठा हे पग दे वापड़ा हे लो ।पू० ॥१॥
साचउ हे धरम सनेह ।सा०। लागउ हे प्रभु सुँ माहरइ हे लो।
मुझ इकतारी हे एह ।मु०। नेह कियाँ विन किम सरइ हे लो ॥२॥
समकित जाग्यउ हे जोर ।स०। अशुभ करम दूरइ गया हे लो।
कुमति न चापइ हे कोर ।कु०। संयम जोग वशिथया हे लो ॥३॥
प्रगट्यो हे ध्यान थी ज्ञान ।प्र०। उदय थयउ अनुभव तणो हे लो।
आतम भाव प्रधान ।आ०। सहज संतोष वध्यउ घणो हे लो ॥४॥
सहुमाँ प्रभुनो हे अंश ।स०। जेम घृतादिक खीर मां हे लो।
झीलइ हे मुझ मन हँस ।झी०। प्रभु गुग निर्मल नीर मां हे लो ॥५॥
जगव्यापी जिनराज ।ज०। तित्थंकर तेवीसमउ हे लो।
हित्त सुख केरइ हे काज ।हि०। चरणकमल प्रभुना नमउ हे लो ॥६॥

परमपुरुष श्री पास ।प०। प्रणम्यां तन मन उल्लसइ हे लो ।
पूरइ हे सेवक आस ।पू०। 'विनयचन्द्र' हियड़े वस्या हे लो ॥७॥

॥ श्री स्वाभाविक पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—हाडानी

सुणि माहरी अरदास रे मन मोहनगारा, म्हारा प्राण पियारा।
आस पूरो रे वाल्हा पास, निपट न करि नीरास ।म०।
सास तणी परि तुँ मुझ साभरे रे ॥१॥
माहरइ तुँ हिज सइण रे ।म०।
ताहरी मूरति मननी मोहनी रे।
निरखि ठरइ मुझ नयण रे ।म०।
हियड़ो हेजालू विकसै माहरो रे ॥२॥
तुझ थी लागौ रंग रे ।म०।
लइणा दइणा नो कारण एह छेरे।
खिण न पड़ै मन भंग रे ।म०।
संग न छोडुं जिनजी ताहरउ रे ॥३॥
ताहरौ मन नीराग रे ।म०।
राग घणौ रे मन में मोहरै रे।
ते किम पहुँचइ लाग रे ।म०।
एक हाथइ रे ताली नवि पड़इ रे ॥४॥
वलि एहवउ नहिं कोइ रे ।म०।
जेहनइ कहियइ रे मननी वातडी रे।

अलवि कह्यां स्युं होइ रे ।म०।
मन ना चिंत्या रे कारज नवि सरइ रे ॥५॥
मोह मिथ्यामति भाव रे ।म०।
रचि मचि नइ घट माहि रहइ रे ।
स्युँ ताहरउ परभाव रे ।म०।
विमुख न थायइ अरियण एहवा रे ॥६॥
अधिक करइ आवाज रे ।म०।
राता माता रे हस्ती घूमता रे ।
ते मृगपति नइ लाज रे ।ते०।
एह औखाणउ जिनजी जाणियइ रे ॥७॥
कलिमां तूँ कहिवाय रे ।म०।
दरियउ रे भरियउ गुण रयणे करी रे ।
दुख सहु दूरि गमाय रे ।म०।
लहिर धरउ महिर तणी हिवइ रे ॥८॥
भव जल निधि थी तारि रे ।म०।
विरुद थायइ रे साचउ तउ सही रे ।
'विनयचन्द्र' जलधार रे ।म०।
वरसइ रे सगलइ पिण जोवइ नहीं रे ॥९॥
॥इति श्री स्वाभाविक पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

तहाँ करन क्रीड़ा मुखइ वीड़ा चावती त्रिय जात।
केसरी सारी मूल भारी पहिरि कै हर्ष न मात ॥६॥इ०॥
ससि सूर ढांकइ जहाँ तहाँ के पंथ पूरे नीर।
वकुल के वन में छिनकि छिन मइं झकोरतहि समीर॥
वहु सलिल पाए वेलि छाए सघन वृक्ष सुहात।
झंकार भमरे करत गुणरे चुंवत पल्लव पात ॥७॥इ०॥
अद्रिसइं उतरी भरी जलसइं नदी आवत पूर।
करणी के दरखत निकट निरखत छिन करत चकचूर॥
सूकत जवासौ तरु निवासौ करत पंखी वृन्द।
घन विस्तारे सर संभारे हंस मिथुन निरदंद ॥८॥इ०॥
रंगइ रसीली निपट नीली हरी प्रगटत ज्याहि।
डोलत अमोला मृदु ममोला लाल से तिन माँहि॥
उच्छाह सेती करत खेती करसनी सुविचार।
सव लोक कुं आनंद उपज्यौ व्रज्यौ है दुरित प्रचार ॥९॥इ०॥
वरसात इन परि झरी मडइ छिन न खंडइ धार।
राजीमती के वस्त्र भीने सवल झीने सार॥
एकन्त गुफा मे जाहि तामइं सुकाए सव चीर।
भई नगन रूपइं अति सरूपइं निरखी नेमि के वीर ॥१०॥इ०॥
निरखि कें नागी तुरत जागी मदन नृप की छाक।
घट भ्रमत ताकौ लगि झराकौ ज्युं कुलाल की चाक॥
चिहुँ ओर घेरी अग हेरी नृप सुता सुख काज।
कहै वचन ऐसे अटपटे से सुनत ही आवै लाज ॥११॥इ०॥

हुं गुफावासी नित उदासी रहत हुं इन ठोर।
स्यावास तोकुं मिली मोकुं चित लीयउ तें चोर॥
भोगकउ हुं तउ अति भिख्यारी करौ प्यारी प्यार।
अव विरह टारौ हृदय ठारौ मिलौ मिलौ प्रान आधार॥१२॥इ
तव चीर पहिरइ सवद गुहिरइ अग करिकइ गूढ़।
राजुल सयांनी वदत वानी सुनि अग्यानी मूढ॥
मुनि मागे मूकइ चित्त चूकइ वृथा तु इन वैर।
स्युं व्रत विगोवइ लाज खोवइ रहि रहि जियकुं फेरि॥१३॥ इ० ॥
निद्रान्ध सिंधुर वहुत वन्धुर उर्द्ध कन्धर होय।
जव धरत अंकुश सिर महावत ठौर आवत सोय॥
त्युं सदुपदेश विशेष देकइ विमल एकइ वइन।
वूझ्यौ सो रहनेमि विपयी गई जहां यदुपति सइंन॥१४॥इ० ॥
युं सुलभ वोधी आत्म सोधी गये मुगति मझार।
कलियुगइं उमगइं नाम जाकउ लेत है संसार॥
धरि ज्ञान अन्तर दृशा सुदसा मनह मच्छर छोड़ि।
कवि विनयचन्द्र जिनेन्द्र भावै जपत है कर जोरि॥ १५ ॥इ० ॥

इति श्री रहनेमि राजीमत्योः स्वाध्यायः

॥ श्री स्नेह निवारणे स्थूलिभद्रमुनि सज्झाय ॥

राग—केदारो, ढाल—मेरे नन्दना, एहनी

सांभलि भोली भामिनी रे हां, परदेशी नै साथ। नेह न कीजियै।
भमर तणी परि जे भमै रे हां, ते नहीं केहनै हाथ॥ नेह० ॥१॥

॥ श्री नारिंगपुर पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—आठ टकइ कंकण लीयउ री नणदी थिरकि रहयउ मोरी बांह, कंकणउ मोल लीयउ एहनी देशी

सुनिजर ताहरी देखिनइ रे जिनजी सफल थई मुझ आस।
मोरउ मन मोहि रह्यउ, हारे जैसे मृग मधुर ध्वनि गीत ॥मो०॥
तुं माहरइ मन मइं वस्यो रे, जि० श्री नारंगपुर पास ॥१॥
तुझ मुख कमल निहालिवा रे, जि० रहती सबल उमेद ॥मो०॥
ते तुझ नइं मिलियाँ पछी रे जि० भागउ मन रउ भेद ॥मो०॥२॥
हुँ सेवक छुं ताहरउ रे जि० तुं साहिब सुप्रमाण ॥मो०॥
तें मन हेर्यो माहरउ रे जि० भावइ तउ जाण म जाण ॥मो॥३॥
खिण इक जउ तुझ नइ तजुं रे जि० तउ उपजै अंदोह ॥मो०॥
धरती पिण फाटइ हियो रे जि० पाणी तणय विछोह ॥मो०॥४॥
ताहरी सूरति नउ सदा रे जि० धरिस्युं निशि दिन ध्यान ।मो०।
जिण तिण मां मन घालतां रे जि० न रहै माहरउ मान ।मो०।५।
चरण न मेल्हुँ ताहरा रे जि० रहिस्युं केड़इ लागि ॥मो०॥
फल प्रापति पिण पामस्युं रे जि० जेह लिखी छइ भागि ।मो०।६।
मइं तउ कीधउ मो दिसा रे जि० ताहरइ ऊपरि मोह ॥मो०॥
विनयचन्द्र कहै माहरी रे जि० सगली तुझ ने सोह ॥मो०॥७॥

रहनेमि राजीमति स्वाध्याय

राग—हींडोल

शिवादेवी नंदन चरण वंदन चली राजुल नारि ।
प्रियु संगि रागी सती सागी चलत लागी वार ॥

निज प्राणपति कौ नाम जपती होत तृपती बाल ।
तहाँ मास पावस कइ उदै सैं अइसइं जगत कृपाल ॥१॥
इण भांति सइं सखि आयउ वरपाकाल,
सउ तउ वरनत कवि सुविसाल ॥आंकणी॥
सजि बुँद सारी हर्षकारी भूमि नारी हेत ।
झरलाय निर्झर झरत झरझर सजल जलद असेत ॥
घन घटा गर्जित छटा तर्जित भये जर्जित गेह ।
टव टवकि टबकत झवकि झवकत विचि विचि वीज कि रेह ॥२॥
अतहिं अवाजइं गगन गाजइ वायु वाजइ त्युंहि ।
दिग चक्र झलकइ खाल खलकइ नीर ढलकइ भुंहि ॥
दृग श्याम वादर देखि दादुर रटत रस भरि रइन ।
वन मोर बोलइ पिच्छ डोलइ द्विरद खोलइ पुनि नइन ॥३॥इ०॥
उल्लसित हीयरौ करि पपीयरौ करत प्रियु प्रियु सोर ।
विरह सइं पीरी अति अधीरी डरत विरहनि जोर
अंधकार पसरइ वैर विसरइ परस्पर भूपाल
सर्वरी शंका दैत डका दिवसन मइ घरीयाल ॥४॥इ०॥
जहाँ परत धारा अति उदारा जानि गृह जल यन्त्र
स्वाधीन वनिता सौख्य जनिता करत कंत निमंत्र
मदन के माते रंग राते रसिक लोक अपार
वइठि कइ गोखइं मनइं जोखइं गावत मेघ मल्हार ॥५॥इ०॥
पंचरंग चोपे अधिक ओपइं इन्द्र धनुष सधीर ।
वक श्रेणि सोहइ चित्त मोहइ सर सरित के तीर ॥

नेह थी नरक निवास, नेह प्रवल छइ पास।
नेहे देह विनाश, नेह सवल दुख रास ॥ नेह० ॥ आ० ॥
परदेशी तउ प्राहुणा रे हा, मेल्ही जाय निराश। नेह०।
तिण थी केहउ नेहलउ रे हा, न रहै जे थिर वास। ने० ॥२॥
पहिलि मिलीयइ तेह सुं रे हां, करियइ हास विलास। ने०।
मिलि नइ वीछड़िवौ पड़े रे हां, तव मन होइ उदास। ने० ॥ ३ ॥
वाल्हां नइ वउलावता रे हां, पीडइ प्रेमनी झाल। ने०।
हीयड़ौ फाटइ अति घणुं रे हा, नाखइ विरह उछालि। ने०॥४॥
वलता भुइ भारणि हुवै रे हां, अंग तपइ अंगार। ने०।
आखडियइ आसू पड़इ रे हां, जिम पावस जल धार। ने० ॥५॥
मत किणही सु लगिज्यो रे हा, पापी एह सनेह। ने०।
धुखइ न धुंओं नीसरइ रे हा, वलइ सुरंगी देह। ने० ॥ ६ ॥
कोशा नइ स्थूलिभद्र कहइ रे हा, नेह नी वात न भाखि। ने०।
तिण कीधइ ही सारियइ रे हा, विनयचन्द्र द्यै साखि। ने०॥७॥

श्री स्थूलिभद्र वारहमासा

ढाल—चउमासियानी

आषाढ़इ आशा फली, कोशा करइ सिणगारो जी।
आवउ थूलिभद्र वालहा, प्रियुडा करूं मनोहारो जी ॥
मनोहार सार शृङ्गार रसमा, अनुभवी थया तरवरा।
वेलड़ी वनिता ल्यइ आलिंगन, भूमि भामिनी जलधरा॥
जलराशि कंठइ नदी विलगो, एम वहु शृंगार मा।
सम्मिलित थइ नइ रहै अहनिशि, पणि तुम्हें व्रत भार मां ॥ १ ॥

श्रावण हास्य रसइं करी, विलसउ प्रीतम प्रेमइ जी।
योगी भोगी नइ घरे, आवण लागा केमइ जी॥
तउ केम आवै मन सुहावै, वसी प्रमदा प्रीतड़ी
एह हासी चित विमासी, जोअउ जगति किसी जड़ी।
झरहरइ पावस मेघ वरसइ, नयण तिम मुख आंसुआं।
तिम मलिन रूपी बाह्य दीसउ, तिम मलिन अंतर हुआं॥२॥
भादउ कादउ मचि रह्यउ, कलिण कल्या बहु लोकोजी।
देखी करुणा ऊपजै, चन्द्रकान्ता जिम कोको जी॥
कोक परि विहू वोक करती, विरह कलणइ हुं कली।
काढियइ तिहां थी बांह झाली, करुणा रस नइ अटकली॥
मयमत्त तटिनी अनइ नारी, मेह प्रीतम नेह थी।
अवसरइ जउ ते काम नावइ, स्युं करीजै तेह थी॥ ३॥
आसू आसिक दिहाड़ला, एकलडां किम जायो जी।
रौद्र रसइ मुझ मन घणु, नित प्रति अति अकुलायोजी॥
अकुलाय धरणि तरुणी तरणो, किरण थी शोपत धरै।
उपपति परइ घन कंत अलगु, करी घन वेदन करै।
तिम तुम्हे पणि विरह तापइ, तापवउ छउ अति घणुं।
चांद्रणी शीतल झाल पावक, परइं कहि केतउ भणुं॥४॥
काती कौतुक सांभरउ, वीर करइ संग्रामो जी।
विकट कटक चाला घणु, तिम कामी निज धामोजी।
निज धाम कामी कामिनी बे, लड़इ वेधक वयण सु।
रणतूर नेउर खड़्ग वेणी, धनुप रूपी नयण सुं।

श्री स्थूलिभद्र मुणिंदना, भणीया वारहमासो जी।
नवरस सरस सुधा थकी, सुणता अधिक उल्लासो जी ॥
उल्लास धरि ऋषिराज गायो, जिण रखायउ जगतमा।
निज नाम अति अभिराम चुलसी, चउवीसी शीलवंतमां ॥
गुरुराज हर्पनिधान पाठक, ज्ञानतिलक प्रसाद सुं।
गुर्जरा मंडन राजनगरइं, 'विनयचंद्र' कहइ इसुं ॥१३॥

॥ श्री जिनचंद्रसूरि गीतम् ॥

वड़ वखती गुरु नित गाजै, वलि दिन दिन अधिक दिवाजै।
सहु गच्छपति सिर छाजै ॥१॥ राजेश्वर पाटियइ पाउधारउ।
इक वीनतड़ी अवधारो ।पाटोधर०। श्रीसघना वंछित सारउ ॥रा०
श्रीजिनधर्मसूरीसर पाटइ, पूज्य थाप्या घणै गहगाटइं।
नर नारी आगै जुड़ै थाटइं ॥ रा० ॥ २ ॥
वंशे वहुरा सिरदार, तात सावलदास मल्हार।
माता साहिवदे उरि हार ॥ रा० ॥ ३ ॥
हंस परि माधुरी सी चाल, अति अद्भुत रूप रसाल।
मारग मिथ्यात उदाल ॥ रा० ॥ ४ ॥
तेजे करि जाणै सूर, शशिधर परि शीतल पूर।
जसु निलवट अधिकउ नूर ॥ रा० ॥ ५ ॥
नित नित चढती कला राजइ, युगवर जिनचंद विराजइ।
जसु भेट्यां भव दुख भाजइ ॥ रा० ॥ ६ ॥
छतीस गुणे करि सोहइ, गुरु भविक तणा मन मोहइ।
जगि इण समवड़ नहिं कोहै ॥ रा० ॥ ७ ॥

नित पालै पंचाचार, षटकाय रक्षा करै सार।
उज्ज्वल उत्तम व्रत धार ॥ रा० ॥ ८ ॥
धन्न नगरी नइ धन्न देश, जहाँ सद्गुरु करै निवेश।
कीरति जग में सलहेस ॥ रा० ॥ ६ ॥
वदो भवियण हित आणी, पूजजी नी मीठी वाणी।
सांभलतां अमिय समाणी ॥रा०॥१०॥
मानइ जेहनइ राण राया, प्रणमीजै प्रहसम पाया।
मुनि 'विनयचन्द्र' गुण गाया ॥रा०॥११॥



ग्यारह अंग सज्झाय

(१) श्री आचारांग सूत्रसज्झाय

देशी—हठीला वयरी नी

पहिलौ अंग सुहामणो रे, अनुपम आचाराग रे सगुणनर
वीर जिणंदइ भाखीयउ रे लाल, उवाई जास उपाग रे सगुणनर।
वलिहारी ए अंगनी रे लाल, हूं जाउं वार वार रे स०
विनय गोचरी आदि दे रे लाल,
जिहां साधु तणउ आचार रे स० ।व०। आंकणी॥
सुयक्खंध दोइ जेहना रे, प्रवर अध्ययन पचीस रे स०
उद्देशादिक जाणियइ रे लाल, पंच्यासी सुजगीस रे स० ।व०। २॥
हेत जुगति करी सोभता रे, पद अढार हजार रे स०
अक्षर पदनइ छेहड़इ रे लाल, संख्याता श्रीकार रे स० ।व०। ३॥
गमा अनंता जेहमां रे, वलि अनन्त पर्याय रे स०
त्रस परित्त तउ छ इहां रे लाल, थावर अनन्त कहाय रे स० ॥४॥
निवद्ध निकाचित शासता रे, जिन प्रणीत ए भाव रे स०
सुणतां आतम उल्लसइ रे लाल, प्रगटइ सहज सभाव रे स० ॥५॥
श्रावक वारू श्रावका रे, अंग धरी उल्लास रे स०
विधिपूर्वक तुम्हें सांभलउ रे, लाल गीतारथ गुरू पास रे स० ॥६
ए सिद्धान्त महिमा निलौरे, ऊतारइ भव पार रे स०
'विनयचन्द्र' कहइ माहरइ रे लाल एहिज अंग आधार रे स० ॥७॥

॥इति श्री आचारागसूत्र स्वाध्यायः॥

(२) श्री सूयगडांग सूत्र सज्झाय

देशी—रसियानी

वीजउ रे अंग हिवइ सहु साभलौ,
मनोहर श्री सूगडाग। मोरा साजन।
त्रिण्हिसइ त्रेसठि पाखंडी तणउ,
मत खंड्यउ धरि रंग। मोरा साजन।
मीठी रे लागइ वाणी जिन तणी, जागइ जेह थी रे ज्ञान।मो०।
ए वाणी मन भाणी माहरइ, मानु सुधा रे समान।मो० मी०।
रायपसेणी उपाग छइ जेहनु, एतउ सूत्र गंभीर।मो०।
जाणइ रे अर्थ वहुश्रुत एहना, एतउ क्षीर नीरधि नुरे नीर मो०।२।
एहना रे सुयक्खंध दोइ छइ सही, वलि अध्ययन त्रेवीस।मो०।
उद्देशा समुद्देशा जिहा भला, संख्यायइं रे तेत्रीस मो०॥३॥
नय निक्षेप प्रमाणइ पूरिया, पद छत्रीस हजार।मो०।
संख्याता अक्षर पद छेहड़इ, कुण लहइ एहनु रे पार मो०॥४॥
गमा अनता वलि पर्याय ना, भेद अनंत जेह माँहि।मो०।
गुण अनंत त्रस परित कह्या वली, थावर अनंता रे ज्यांहि॥५॥
निवद्ध निकाचित जे सासय कड़ा, जिन पन्नता रे भाव।मो०।
भाखी रे सुन्दर एह परूवणा, चरण करण नी रे जाव॥मो० ६॥
करियइ भगति युगति ए सूत्रनी, निश्चय लहियइ मुक्ति।मो०।
विनयचन्द्र कहइ प्रगटइ एह थी, आतम गुण नी रे शक्ति॥७॥

॥ इति श्री सूयगडांग सूत्र सज्झाय॥

(३) श्री स्थानांग सूत्र सज्झाय

ढाल—आठ टके कंकणो लीयो री नणदी थिरकि रही मोरी वाँह एदेशी

त्रीजइ अंग भलउ कह्यउ रे जिनजी, नामइ श्री ठाणांग।
मोरो मन मगन थयउ। हां रे देखि देखि भाव,
हां रे जिहा जीवाजीव स्वभाव।मो०। आंकणी ॥
सबल युगति करि छाजतउ रे जिनजी, जीवाभिगम उपांग ॥१॥

एह अंग मुझ मन वस्यउ रे जिनजी, जिम कोकिल दिल अंब।
गुहिर भाव करि गाजतउ रे जिनजी, आज तउ एह आलंब ॥२॥

कूट शैल शिखरी शिला रे जिनजी, कानन नइ वलि कुण्ड।मो०।
गह्वर आगर द्रह नदी रे जिनजी, जेहमां अछइ उद्दण्ड मो० ॥३॥

दश ठाणा अति दीपता रे जिनजी, गुण पर्याय प्रयोग।मो०।
परित्त जेहनी वाचना रे जिनजी, संख्याता अनुयोग ॥४॥

वेष्ट सिलोक निज्जुत्तिते रे जिनजी, संगहणी पड़िवत्ति।मो०।
ए सहु संख्याता इहा रे जिनजी, सुणतां उल्लसइ चित्त।मो० ५॥

सुयक्खंध एक राजतउ रे जिनजी, दश अध्ययन उदार।मो०।
उद्देशा एकवीस छइ रे जिनजी, पद बहोत्तर हजार।मो० ६॥

रागी जिन शासन तणा रे जिनजी, सुणइ सिद्धात वखाण।मो०।
विनयचन्द्र कहइ ते हुवइ रे जिनजी, परमारथ ना जाण।मो०७॥

॥ इति श्री स्थानांग सूत्र स्वाध्यायः ॥

(४) श्री समवायांग सूत्र सज्झाय

चाल—थाहरइ महला ऊपरि मोर झरोखे कोइली हो लाल झरो०

चउथउ समवायांग सुणौ श्रोता गुणी हो लाल।सु०।
पन्नवणा उवंग करी सोभा वणी हो लाल।क०।
अर्द्ध मागधी भाषा साखा सुरतरु तणी हो लाल।सा०।
समकित भाव कुसुम परिमल व्यापी घणी हो लाल।प०॥१॥
जीव अजीव नइ जीवाजीव समास थी हो लाल कि जी०
लहीयइ एह मां भाव विरोध कोई नथी हो लाल वि०
भांगा तीन स्वसमयादिकना जाणीयइ हो लाल आदि०
लोक अलोक नइ लोकालोक वखाणीयइ हो लाल कि लो० ॥२॥
एक थकी छइ सत समवाय परूवणा हो लाल स०
कोड़ाकोड़ि प्रमाण कि जाव निरूवणा हो लाल कि जा०
बारस विह गणिपिटक तणी संख्या कही हो लाल त०
शासता अर्थ अनन्त कि छइ एहना सही हो लाल कि० ॥३॥
सुयक्खंध अध्ययन उद्देशादिक भला हो लाल उ०
संख्यायइं एक एक प्रत्येकइं गुणनिला हो लाल प्र०
पद एक लाख चउमाल सहस ते उत्तरा हो लाल स०
पद नइ अग्र उदग्र संख्याता अक्खरा हो लाल सं० ॥४॥
भाष्य चूर्णि निर्युक्ति करी सोहइ सदा हो लाल क०
सुणता भेद गंभीर त्रिपति न हुवइ कदा हो लाल तृ०
हेज न मावइ अंग कि अंतरगति हसी हो लाल कि अं०
जल बरसंतइ जोर कि कुण न हुवइ खुसी हो लाल किकु० ॥५॥

जाग्यउ धरम सनेह जिणंद सुँ माहरउ हो लाल जि०
तज्या शास्त्र मिथ्यात सूत्र जाण्यउ खरउ हो लाल सू०
जिम मालती लही भृंग करीरइं नवि रहइ हो लाल क०
ईश्वर सिर सुरगंग तजी पर नवि वहइ हो लाल त० ॥६॥
ए प्रवचन निग्रंथ तणउ जुगतइं वड़उ हो लाल त०
साकर सेलड़ी द्राख थकी पिण मीठड़उ हो लाल थ०
सी कहीयइ वहु वात 'विनयचन्द्र' इम कहइ हो लाल वि०
एहना सुणिनइ भाव श्रोता अति गहगहइ हो लाल श्रो० ॥७॥

॥ इतिश्री समवायांग सूत्र स्वाध्यायः ॥

(५) श्री भगवतीसूत्र सज्झाय

देशी—पंथीड़ानी

पंचम अंग भगवती जाणियइ रे, जिहां जिनवर ना वचन अथाह रे
हिमवंत पर्वत सेती नीकल्या रे, मानु गंगा सिन्धु प्रवाह रे ।१।पं०
सूरपन्नती नामइ परगड़उ रे. जेहनउ छइ उद्दाम उवंग रे ।
सूत्र तणी रचना दरीया जिसी रे, माहिला अर्थ ते सजल तरंग रे
इहां तउ सुयक्खंध एक अति भलउ रे,
एक सउ एक अध्ययन उदार रे ।
दस हजार उद्देशा जेहना रे,
जिहाँ कणि प्रश्न छतीस हजार रे ॥३॥पं०॥
पदतउ दोइ लाख अरथइं भर्या रे,
ऊपरि सहस अठ्यासी जाणि रे ।

लोकालोक स्वरूप नी वर्णना रे,
विवाहपन्नती अधिक प्रमाण रे ॥४॥पं०॥
करियइ पूजा अनइ प्रभावना रे,
धरियइ सुद्गुरु ऊपरि राग रे।
सुणियइ सूत्र भगवती रंग सुं रे,
तउ होइ भवसायर नुं ताग रे ॥५॥पं०॥
गौतम नामइ नाणुं मुकीयइ रे,
सम्यग् ज्ञान उदय होइ जेम रे।
कीजइ साधु तथा साहमी तणी रे,
भगति जुगति मन आणी प्रेम रे ॥६॥प०॥
इण परि एह सूत्र आराधतां रे,
इण भवि सीझइ वंछित काज रे।
परभवि विनयचन्द्र कहइ ते लहइ रे,
मोहन मुगतिपुरी नउ राज रे ॥७॥पं०॥

इतिश्री भगवती सूत्र स्वाध्यायः।

(६) श्री ज्ञातासूत्र सज्झाय

ढाल—कित लाख लागा राजाजी रे मालीयइ जी एहनी।

छट्ठउ अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियइजी,
जेहना छइ अर्थ अधिक उद्दण्ड हो।
म्हांरी सुणिज्यौ धरि नेह सिद्धान्त नी वातड़ी जी।
श्रवणे सुणतां गाढउ रस ऊपजइ जी,
मधुरता तर्जित जिण मधुखंड हो।१।म्हां०॥

जम्बूदीव पन्नती उपांग छइ एहनुं जी,
इण माहे जिनपूजा नी विधि जोर हो ।म्हां०।
अर्चक मुणि परम शांतरस अनुभवइ जी,
चर्चक मुणि करइ सभा मा सोर हो ।म्हा०।२।
नगर उद्यान चैत्य वनखंड सोहामणा जी,
समोशरण राजा ना मात नइं तात हो ।म्हां०।
धर्माचारिज धर्मकथा तिहां दाखवी जी,
इहलोक परलोक ऋद्धि विशेष सुहात हो ।म्हा०।३।
भोग परित्याग प्रव्रज्या पर्यवा जी,
सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ।म्हा०।
संलेहण पचखाण पादपोपगमनता जी,
स्वर्गगमन शुभकुल उतपत्ति प्रधान हो ।म्हां०।४।
बोधिलाभ वलि तंत ते अंत क्रिया कही जी,
धर्मकथा ना दोइ अछइ श्रुतखंध हो ।म्हां०।
पहिला ना उगणीस अध्ययन ते आज छइ जी,
बीजा ना दस वर्ग महा अनुबंध हो ।म्हा०।५।
उंठ कोड़ि तिहा सबल कथानक भाखीयाजी,
भाख्या वलि उगणतीस उद्देस हो ।।मां०।।
संख्याता हजार भला पद एहना जी,
एह थकी जायइ कुमति किलेस हो ।।६ मां०।।
विनय करै जे गुरु नो बहु परइजी,
तेहनइ श्रुत सुणतां बहु फल होइ हो ।।मा०।।

ते रसीया मन वसीया विनयचंद्र नइ जी,
सउ मांहि मिलइ जोया एक कइ दोय हो ।७ मा०॥

॥ इति श्री ज्ञाता धर्मकथांग स्वाध्याय ॥

(७) श्री उपासकदसांग सूत्र सज्झाय

हिवइ सातमउ अंग ते सांभलउ, उपासक दशा नामइ चग रे।
श्रमणोपासकनी वर्णना, जस चन्दपन्नति उवंग रे॥१॥
मन लागउ रे मोरउ सूत्र थी, एतउ भव वइराग तरंग रे।
रस राता गुण ज्ञाता लहइ, परमारथ सुविहित संग रे॥२॥
इण अग सुयक्खध एक छइ, अध्ययन उद्देश विचार रे।
दस दस सख्यायइं दाखव्या, पद पिण सख्यात हज्जार रे॥३॥
आणंदादिक श्रावक तणउ, सुणता अधिकार रसाल रे।
रस लागइ जागइ मोहनी, श्रोताजन नइ ततकाल रे॥४॥
श्रोता आगलि तउ वाचता, गीतारथ पामइ रीझ रे।
जे अद्धदग्ध समझइ नहीं, तेह सुं तो करिवी धीज रे॥५॥
दश श्रावक तउ इहां भाखिया, पिण सूत्र भण्यउ नहि कोई रे।
ते माटइं शुद्ध श्रावक भणी, एक अर्थनी धारणा होइ रे॥६॥
साचो होअइ तेह प्ररूपियइ, निस्संक पणइ सुजगीस रे।
कवि विनयचन्द्र कहइ स्युं थयउ, जउ कुमती करिस्यइ रीस रे॥७॥

॥ इति श्री उपासक दसाग सूत्र स्वाध्याय ॥

(८) श्री अंतगड़दशांग सूत्र सज्झाय

ढाल—वीर वखाणी राणी चेलणाजी, एहनी

आठमो अंग अंतगडदशाजी, मुणि करउ कान पवित्र।
अंतगड केवली जे थया जी, तेहना इहां रे चरित्र ॥१॥ आ०
कर्म कठिन दल चूरता जी, पूरता जगतनी आस।
जिनवर देव इहां भासता जी, शासता अर्थ सुविलास ॥२ आ०॥
सकल निक्षेप नय भग थी जी, अंगना भाव अभंग।
सहज सुख रंगनी तल्पिका जी, कल्पिका जास उवंग ॥३ आ०॥
एक सुयखंध इणि अग नउजी, वर्ग छइ आठ अभिराम।
आठ उद्देशा छइ वली जी, संख्याता सहस पद ठाम ॥४ आ०॥
आठमा अंग ना पाठमइं जी, एहवउ छइ रे मीठास।
सरस अनुभव रस ऊपजइजी, संपजइ पुण्य नी राशि ॥५ आ०॥
विपय लपट नर जे हुवइ जी, निरविषयी सुण्या थाइ।
जिम महाविप विषधर तणउ जी, नाग मंत्रइ सुण्यां जाइ ॥६॥
अमृत वचन मुख वरसती जी, सरसती करउ रे पसाय।
जिम विनयचन्द्र इण सूत्रना जी, तुरत लहइ अभिप्राय ॥७ आ०॥

॥ इति श्री अंतगड दशांग स्वाध्याय ॥

(९) श्री अणुत्तरोववाई सूत्र सज्झाय

देशी—नणदल बींदली दे, एहनी

नवमो अग अणुत्तरोववाई, एहनी रुचि मुझ नइ आई हो।
श्रावक सूत्र सुणउ॥
सूत्र सुणउ हित आणी, एतो वीतराग नी वाणी हो ॥१ श्रा०॥

जस कल्पावतंशिका नामइ, सोहइ उवंग प्रकामइ हो ।।श्रा०।।
एतो आगम नइ अनुकूला, मानु मेरूशिखर नी चूला हो ।।२।।
ए सूत्र नुं नाम सुणीजइ, तिम तिम अंतरगति भीजइ हो ।।श्रा०।।
प्रगटइ कोई नवल सनेहा, एह थी उलसइ मोरी देहा हो ।श्रा० ३।।
अणुत्तर सुरपद जे पाया, तेहना गुण इण मा गाया हो ।।श्रा०।।
नगरादिक भाव वखाण्या, ते तउ छठ्ठइ अंगइ आण्या हो ।।४।।
इहां एक सुयक्खंध वारू, त्रिण्ह वर्ग वली मनोहारू हो ।।श्रा०।।
उद्देशा त्रिण्ह सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ।।श्रा० ५।।
अम्हे सूत्र सुणावुं तेहनइ, सारी श्रद्धा होवइ जेहनइ हो ।।श्रा०।।
श्रोता थी प्रीति जगावुं, निंदक नइ मुँह न लगावुं हो ।।श्रा० ६।।
जे सुणतां करइ वकोर, ते तउ माणस नहीं पिण ढोर हो ।।श्रा०।।
कवि विनयचन्द्र कहइ साचउ, श्रुत रंगइ सहु को राचउ हो ।।७।।

।। इति श्री अणुत्तरोववाई सूत्र स्वाध्याय ।।

(१०) श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र सज्झाय

ढाल—आधा आम पधारो पूजि

दशमउ अंग सुरंग सोहावइ, प्रश्नव्याकरण नामइं ।
सूत्र क्लपतरू सेवइ तेतउ, चिदानन्द फल पामइ।।१।।
आवउ आवउ गुण ना जाण, तुम्ह नइ सूत्र सुणावुं ।।आ०।।
पुष्पकली जिम परिमल महकइ, गुण पराग नइ रागइ ।
तिम उवंग पुष्पिका एहनउ, जोर जुगति करि जागइ ।।१ आ०।।
अंगुष्टादिक जिहां प्रकाश्या, प्रश्नादिक अति रूडा ।
ते छइ अट्ठोतर सत एतउं, सूत्र मध्य मणि चूडा ।।३ ।।आ०।।

आश्रव द्वार पाँच इहाँ आण्या, पाचे संवर द्वारा ।
महामंत्र वाणी मां लहीयइ, लवधि भेद सुखकारा ॥४॥आ०॥
सुयक्खंध एक दशमइ अंगइ, पणयालीस अज्झयणा ।
पणयालीस उद्देश वलीपद, सहस संख्यात नी रयणा ॥५॥आ०॥
जे नर सूत्र सुणइ नहि काने, केवल पोपइ काया ।
माया माहि रहइ लपटाणा, ते नर इम ही जाया ॥६॥आ०॥
सूत्र माहि तउ मार्ग दोइ छइ, निश्चय नइ व्यवहारा ।
'विनयचन्द्र' कहइ ते आदरीयइ, तजि मद मदन विकारा ॥७॥आ०

॥ इतिश्री प्रश्न व्याकरण स्वाध्यायः ॥

(११) श्रीविपाकसूत्र सज्झाय

ढाल—तारि करतार ससार सागर थकी, एहनी

सुणउ रे विपाक श्रुत अंग इग्यारमउ,
तजउ विकथा वृथा जे अनेरी ।
ललित उवंग जस प्रवर पुप्फचूलिका,
मूलिका पाप आतंक केरी ॥ १॥सु० ॥
अशुभ किंपाक सम दुकृत फल भोगवी,
नरक मां गरक जे थयां प्राणी ।
सुकृत फल भोगवी स्वर्ग मा जे गया,
तास वक्तव्यता इहाँ आणी ॥२॥सु०॥
दोउ श्रुतखंध नइ वीस अध्ययन वलि,
वीस उद्देस इहाँ जिन प्रयुंजइ ।

सहस संख्यात पद कुन्द मचकुन्द जिम,
वहुल परिमल भ्रमर चित्त गु जइ ॥३॥सु०।

सरस चंपकलता सुरभि सहु नइ रुचइ,
अन्य उपगार नी वुद्धि माटइ।
सूत्र उपगार तेहथी सवल जाणियइ,
जेहथी पुरुप सुख अचल खाटइ ॥४॥सु०॥

वंध नइ मोक्ष ना वेउ' कारण अछइ,
दुकृत नइ सुकृत जोअउ विचारी।
दुकृत नउ परिहरी सुकृत नइ आदरी,
जिन वचन धारियइ गुण संभारी ॥५॥सु०

म करि रे म करि निंदा निगुण पारकी,
नारकी तणी गति काइ वंधइ।
मारकी प्रकृति तजि सहज संतोप भजि,
लागि श्रुत सांभली धर्म धंधइ ॥६॥सु०॥

सुख अनइ दुक्ख विपाक फल दाखव्या,
अंग इग्यारमइ वीतरागइ।
चिर जयउ वीर शासन जिहां सूत्र थी,
कवि 'विनयचंद्र' गुण ज्योति जागइ ॥७॥सु०

॥ इतिश्री विपाक श्रुताङ्ग स्वाध्यायः ॥

॥ एकादशांग स्वाध्यायः ॥

ढाल—अयोध्या हे राम पधारीया, एहनी

अंग इग्यारे मइं थुण्या सहेली हे आज थया रङ्ग रोल कि।
नन्दी सूत्र मइ एहनउ सहेली हे भाख्यउ सर्व निचोल ॥१॥
सहेली हे आज वधामणा ॥
पसरी अग इग्यार नी सहेली हे मुझ मन मडप वेलि कि।
सींचूँ नेह रसइ करी सहेली हे अनुभव रसनी रेलि ॥२॥
हेज धरी जे साभलइ सहेली हे कुण बूढा कुण वाल कि।
तउ ते फल लहै फूटरा सहेली हे स्वादइ अतिहि रसाल ॥३॥
हर्ष अपार धरी हियइ सहेली हे अहमदावाद मझार कि।
भास करी ए अगनी महेली हे वरत्या जय जयकार ॥४॥
संवर सतर पंचावनइ सहेली हे वर्षा रिति नभ मास कि।
दसमी दिन वदि पक्ष मा सहेली हे पूर्ण थई मन आस ॥५॥
श्री जिनधर्मसूरि पाटवी सहेली हे श्रीजिणचन्दसूरीस कि।
खरतर गच्छ ना राजीया सहेली हे तस राजइ सुजगीस ॥६॥
पाठक हर्षनिधानजी सहेली हे ज्ञानतिलक सुपसाय कि।
'विनयचन्द्र' कहइ मइं करी सहेली हे अंग इग्यार सिज्झाय ॥७॥

इति श्री एकादशागानां स्वाध्यायः ॥१२॥

सवत् १७६६ वर्षे मिति वैशाख सुदि १४ दिने श्री विक्रमनगरे उपाध्याय श्री हर्षनिधानजी शिष्य प० ज्ञानतिलक लिखत ॥ साध्वी कीर्त्तिमाला शिष्यणी हर्षमाला पठनार्थं ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभभवतु ॥ कल्याण मस्तु ॥ श्रेयाश्रि प्रवर्त्तता ॥

श्री दुर्गति निवारण सज्झाय

ढाल—बीबी दूर खड़ी रहि लोका भरम धरेगा

सुगुन सहेजा मेरा आतम, तेरी शुभ मति जागी।
सहज संतोष मन्दिर में मोह्या, मुगति वधू रस लागी ॥१॥
दुर्गति दूर खड़ी रहि, तेरा काम नहीं है ॥ आंकणी ॥
शम दम दोऊ अजब झरोखे, तेज प्रदीप बनाया।
धर्म ध्यान का लाल दुलीचा, नीचइं खूब बिछाया ॥२॥ दु०॥
समकित तख्त क्षमा का तकिया, मंडप शील सुहाया।
ज्ञान छत्र चामर चारित गुन, परम महोदय पाया ॥३॥ दु०॥
शुचि सुगंधता परिमल महके, सुरुचि सखी मन भाया।
उपशम पुत्र सुलच्छन सुन्दर, आतम नृप घरि आया ॥४॥ दु०॥
ए विलास सब मुगति रमनि के, छिन छिन में सुखकारी।
सोहागिन से रंग लग्यो तब, तुझ सें दृष्टि उतारी ॥५॥ दु०॥
तूँ तो दुर्गति दुष्ट दुहागिन, लोकन से लपटानी।
पर प्रपंच सुत अरुचि सखी के, सगइ तोहि पिछानी ॥६॥ दु०॥
अति दुर्गन्ध अशुचिता प्रगटे, निरगुनता से लीनी।
तेरो संग करै सो मूरख, तूँ तो बहुत दुखीनी ॥७॥ दु०॥
समता सायर मेरो आतम, ज्योतिवंत अविनाशी।
परमानन्द विलासो साहिब, सज्जनता प्रतिभासी ॥८॥ दु०॥
मुगति प्रिया रस भीनो अहनिश, दुर्गति दूर निवारी।
विनयचन्द्र कवि आतम गुन से, होइ रहे अधिकारी ॥९॥ दु०॥

श्री जिन प्रतिमा स्वरूप निरूपण स्वाध्याय

॥ दूहा ॥

विपुल विमल अविचल अतुल, निस्तल केवलज्ञान।
तास प्रकाशक चरम जिन, मन धरि तेहनउ ध्यान ॥१॥
जिन प्रतिमा वंदन तणउ, हिव कहिस्युं अधिकार।
जे निर्गुण मानइ नहीं, तेहनइ पड़उ धिकार ॥२॥
अभव छेदक भाव थी[1], लख्यउ न जायइ दंभ।
संमूर्छिम कपटी तणउ, क्षण ऊतरस्यइ अंभ ॥३॥
शास्त्र तणी युगति करी, सद्गुरु भाषइ तास।
कुमति वास नें तुं पड्यउ, किसी मुगति नी आस ॥४॥
अरे दुष्ट बुद्धि विकल[2], किम निंदइ जिन बिंब।
अंब सपल्लव छोड़ि नइ, किम भजइ तुं निंब ॥५॥
जिन प्रतिमा निश्चय पणइ, सरस सुधारस रेलि।
चिन्तामणि सुरतरु समी, अथवा मोहनवेल ॥६॥
नेह विना सी प्रीतड़ी, कण्ठ विना स्यउ गान।
लूण विना सी रसवती[3], प्रतिमा विण स्यउ ध्यान ॥७॥
हेज[4] दिदृक्षायें धरइ, जिन मूरति नउ संग।
ते नर जस साम्प्रति लहैं, जेहवा गंग तरंग ॥८॥
तीर्थंकर पिण को नहीं, नहीं को अतिशय धार।
जिन प्रतिमा नउ इण अरइ, एक परम आधार ॥९॥

१—व्यक्ति युक्ति नै निरखता २—निठुर
३—दीपक विण मन्दिर किस्यउ ४—दृष्टुं इत्यादि दृष्टातया

ढाल—१ ते मुझ मिच्छामि दुक्कड एहनी

तैं तउ रे निज मत संग्रह्यउ, सहु नी तजि लाज रे।
तिण कारण तुझ नइ कहुं, सुविदित हित काज रे ।।१।।
जिनवर प्रतिमा वंदियइ, मन मां धरि रंग।
समकित संकित कारणै, थायइ वहु भंग रे ।।२।। जि०।।
तुझ नइ रे कहता स्यु हवइ, वायस नइ श्रावइ[1] रे।
जउ दुग्धइ प्रक्षालियइ, पिण धवलता नावइ रे ।।३।। जि०।।
उपल मुद्‌गशैलिक तणइ, ऊपरि घन वरसै रे।
आर्द्र तदपि न हुवइ कदा, तुझ ते गुण फरसै रे ।।४।। जि०।।
वलि ऊखर धर ऊपरइ, जउ वीज कउ वाहै रे।
अंकुर मात्र न नीपजइ, नहु एम सराहै रे ।।५।। जि०
वधिर भणी जउ को कहइ, अनुगामि प्रमाण रे।
पिण तसु मन अहि कातनी, व्यापकता जाण रे ।।६।। जि०
श्वान तणी वलि पूंछनउ, दृष्टान्त दृढायौ रे।
पिण कुमति तुझ चित्त मा, आखर ते नायउ रे ।।७।। जि०।।

ढाल—२ माखी नी देशी

शुद्ध परंपरा मानियइ, प्रतिमा नो प्रतिरूप।अज्ञानी।
जिन सादृशतायें सही, इम व्यवहार प्ररूप अज्ञानी ।।१।।
एहिज तत्व विचारियइ, जउ ध्युं जाणै साच अज्ञानी।
आनहितउ ते ताहरइ दिसा, पाच तजी ग्रह्यउ काच अ० ।।२।।

१—श्रवण-श्रावस्तेन

समकित विण प्रतियोग थी, शक्ति न ताहरइ वाहि अज्ञानी।
आ गुण सद्भाविक देखता, न मिलइ तुझ घट माहि अ० ॥३॥
वदन अंग उपासकें, वलि ठाणाग मझार अज्ञानी।
रायपसेणी मइ कह्यउ, सूरीयाभ सविचार[1] अज्ञानी ॥४॥ए०॥
न्याता अंगइ जाणियइ, द्रूपदि नइ अधिकार अज्ञानी।
तिम अंवड़ अधिकार थी, निरखि उवाई सार अज्ञानी ॥५॥ए०॥
चारण श्रमण नमइ सदा, जिन प्रतिमा सस्नेह अज्ञानी।
ते छइ भगवई अंगमां, किम मन आणइ रेह अज्ञानी ॥६॥ए०॥
एक सदय गुण तूँ करइ, सूत्र वहुल नउ लोप ॥ अज्ञानी ॥
तउ तुझ नइ दीठां विना, मन नइं आवइ कोप अज्ञानी ॥७॥ए०॥

ढाल (३)

चाल—जोसीडानी

दृश्य पणइ आवश्यकै रे, भावित कायोत्सर्ग।
प्रतिमा विण नि·फल कह्यउ रे, तौ स्यु वाक्यिक वर्ग ॥१॥
अधर्मां प्रतिमाये स्यउ वंध।
जड़मति नइ अनुभाव थी, जाति तणउ तू अंध ॥२॥अ०॥
विजयदेव अति भक्ति सु रे, पूज्या श्री जिनराय।
इम छइ जीवाभिगम मा रे, ते तुझ नावइ दाय ॥३॥अ०॥
वलि जिन पूज्या शुभ मनइ रे, श्री सिद्धारथ राय।
कल्पसूत्र संपेखि नइ रे, तसु अवगम चित लाय ॥४॥अ०॥
दानादिक सम भाखियउ रे, अरचा नउ फल सूध।
महानिशीथे ते लहइ रे, तो स्यू तेह असूध ॥५॥अ०॥

१—विचारेण सहित

धर्म विशेष विरुद्धता रे, तें प्रारंभी मूध।
ते हिव शोभा किम रहइ रे, जिम कांजीयइ दूध ॥६॥अ०॥
साधन फल ते आदस्यउ रे, करण विना परतक्ष।
पिण कितलाइक दिन रहै रे, नदी कनारै वृक्ष ॥७॥अ०॥

ढाल (४)

चाल—मोहन सुन्दरी ले गयउ, एहनी

चिदानंद फल जउ ग्रहइं, जिन पूजा मन धार।
आधाकर्मिक भांति नउ हो, दूषण नहीय लिगार ॥१॥
मूरख रे मानि कथन तू माहरउ ॥आकणी॥
ताहरउ मन भ्रामिक थयउ, अचित हिंसा हेत।
नाग भूत यक्षादि नउ हो, विवरण सगलउ चेत ॥२॥मू०॥
पिण जिन हेति नवि कह्यउ, सूयगडांग मइ देखि।
भाष्य चूर्णि निर्युक्तियइ हो, एहिज अर्थ विशेष ॥३॥मू०॥
मानइ सूत्र सहु वली, पिण प्रतिमा सुं द्वेष।
तउ ताहरइ मुखि दीजियइ हो, मषीय कूर्चिका रेख ॥४॥मू०॥
जिनवर जैन समाचरइ, शैव ब्रह्म हरि राम।
तूं तउ एकण मा नहीं हो, निर्गत भेष प्रकास[1] ॥५॥मू०॥

कलश

इम सुगम कहतां जउ न समझै, सूत्र नउ बोधक पणउ।
भव मे अनंतानंत कालइ, दुख देखिस तू घणउ॥
आणा विना जे मत उपाजइ, नरक तासु निदान ए।
कवि विनयचन्द्र जिनेश प्रतिमा, तणउ धरिये ध्यान ए ॥६॥

इतिश्री जिन प्रतिमा स्वरूप निरूपण स्वाध्यायः सर्व गाथा ३६

[पत्र १ आचार्य ख० गच्छ भण्डार]

1 प्रकाम—अतिशयेन

कुगुरु स्वाध्याय

॥ दूहा* ॥

जैन युक्ति सुं साधना, आगम सु अनुकूल।
नित अविहित लक्षण हरण, सुविहित लक्षण मूल ॥१॥
सिद्धि शक्ति धारक सदा, व्यक्ति गुणइ अनुवन्ध।
निहत निरंजण भक्ति विधि, जानि हेतु निरबंध ॥२॥
धंध गिणइ संसरण सुख, चरण करण गुण लीण।
अतिशय सुध जसु आचरण, क्रिया धरण सुप्रवीण ॥३॥
मिथ्या भ्रम रूपक द्विरद, तिहा पंचायण जेह।
चिदानंद चिद्रूप सुँ, निस दिन अधिक सनेह ॥४॥
एहवा सदगुरु वंदियइ, जिम थायइ भव अंत।
कुगुरु कपटधर वंदता, तदूगुण न रहइ तंत ॥५॥

ढाल (१)

चाल—हठीला वयरीनी

[सार सु] प्रवचन नउ ग्रही रे,
विदित प्रपंचक भाव रे ॥सगुण नर॥
अनुभव कहि [सुंरं] गसुं रे लाल,
कुगुरु तणउ प्रस्ताव रे ॥सगुण नर ॥१॥

---

* प्रारम्भ करनेके पूर्व ओलिये पर लिखे दोहे :—
धर्म वचन साधक सदा, जिन वचनों पक्षीण।
प्रस्तुतानुयोगिक सदा, जे सोधिक सुकुलीण ॥१॥
उपादान मित भुक्तविधि, अन्वेषणीय प्राय।
प्रस्तुतानुयोगिक तणा, जे सोधिक मुनिराय ॥२॥
मारग साधु तणउ कह्यउ, दर्शन ज्ञान चरित्र।
तिणथी खिण विरचइ नहीं, निशिदिन पुण्य पवित्र ॥३॥

श्रुति विकसित चित सांभलउ रे लाल,
अधिक प्रयोजन आणि रे ॥स०॥
अंतरगत गुण पामिस्यउ रे लाल,
ए समवाय प्रमाण रे ॥स०॥२॥श्रु०॥
प्रथम द्रव्य भावइं रहइ रे लाल,
विकल सकल आचार रे ॥स०॥
चलन अवधि स्वच्छन्द सुँ रे लाल,
नित निर्गत उपचार रे ॥स०॥३॥श्रु०॥
वाह्य दृष्टि विरतंतनउ रे,
भेदक विविध प्रकार रे ॥स०॥
प्रवहमान पर वृत्ति सुँ रे लाल,
जेम जलदनी धार रे ॥स०॥४॥श्रु०॥
इन उन्मारग चालता रे,
नवि पामइं तिहा लाग रे ॥स०॥
चित्त विचारि समाचरइ रे लाल,
वलि मरकट वइराग रे ॥स०॥५॥श्रु०॥

ढाल २ सोरठ देश सुहामणउ, एहनी

अंतरगति आतप करइ, जप बहिरंग प्रधान लाल रे।
अवर मांहे जे धरइ, शवकर पट उपमान लाल रे ॥१॥
अवयव तादृश आचरइ, वचन तथा विध थाय लाल रे।
सविकलप चिन्तन करइ, अहनिशि अध्यवसाय लाल रे ॥२॥
चाहइ वेगि निरूपणा, सम पूरव पद चार लाल रे।
पिण इण कलि माहे नहीं, सांप्रति सहु परिवार लाल रे ॥३॥

रस आसंकायइं करउं, ज्वर औषध विधि जेम लाल रे।
कारिज नइ आलंबता, पृथिवी सुत सु प्रेम लाल रे॥४॥
इम संचरता हित धरी, ते स्तुति करि कहइ धन्य लाल रे।
ते जग माहे जाणियइ, परतखि पण्डित मन्य लाल रे॥५॥

ढाल ३ हरिया मन लागउ, एहनी

जिण अधिकारइ ऊपनउ, जे अनवस्थित दोप रे।
साजन सुणि मोरा।
हिव तेहिज विवरणा तणउ, निश्चय करिस्युं पोष रे।सा०॥१॥
जउ पूरव विधि मइ रहइ, न करइ किम विपरीत रे।सा०।
पिण पासत्थउ ते खरउ, सर्व देश परिणीत रे। सा० ॥२॥
ज्ञानादिक गुण जे तजइ, न वदइ मारग सूध रे। सा०।
साध तणी निंदा करइ, लोक भ्रमावइ मूध रे। सा० । ३ ॥
नवेय वखाणे जे करइ, कल्प वाचनता तेम रे। सा०।
साहशाता तेहनी लहइ, कल्पचूरणि मइ एम रे। सा० ॥४॥
नित्य सिझातर अन्नउ, आगलि देइ पिंड रे। सा०।
जे ल्यइ तिणनइ तिण विधइ, आवश्यक द्यइ दंड रे।सा०॥५॥

ढाल ४ मेरे नन्दना, एहनी

साधु कहावइ सइं मुखइ रे हा, न मिले वचन विवेक।
वचन किसा कहुँ।
अवलंबन किहा थी ग्रहइ रे हा, इहा छइ जुगति अनेक। व०॥१॥
जे नव कलरी नवि करै रे हा, उद्यत मुदित विहार। व०।
मास दिवस ऊपरि रहइ रे हा, सेपइ काल अपार। व०॥२॥
तिण सरिखउ ते दाखव्यउ रे हा, आचाराग मझार। व०।
आधाकर्मिक आग्रहइ रे हा, ते ठाणाग विचार। व०॥३॥

शास्त्र लिखावइ जे चली रे हा, पिण न रहइ व्यवहार। व०।
इम अधिकतायइ कहइ रे हा, प्रवचन सारोद्धार। व० ॥४॥
(वात करइ जे मारगै रे हा, उत्तराध्ययनइ तेह।व०।)
व्याख्यानादिक नित करइ रे हा, उपदेशमाल मे तेह। व०।
इत्यादिक आगम तणी रे हा, साख कही निसंदेह। व० ॥ ५ ॥

ढाल ५ यत्तिनी

हिव तास प्रसगउ जेह, ते पिण कहीयइ ससनेह।
उसन्नउ दुविध प्रकार, तसु अन्त पणइ व्यभचार ॥१॥
वलि भाख्यउ त्रिविध कुशील, नाण दंसण चरण निमील।
विहुँ भेद कह्यउ ससत्तउ, शुभ अशुभ प्रकृति संपत्तउ ॥२॥
जह छंद लगइ ए पंच, सद्भाविक सगलउ संच।
चिहुँ नउ निर्णय नवि कीधउ, स्वाभाविक फल गुण लीधउ ॥३॥
परमातम ग्रहण विशेप, ते संग्रहिज्यो अवशेप।
भापित त्रिहुँ नइ अनुयाय, व्याकृति समयादिक न्याय ॥४॥
निज कल्पित दोइ प्रकार, शास्त्रादिक पंच उदार।
पासत्थादिक सूं दूर, तसु वन्दन ऊगत सूर ॥५॥

॥ कलश ॥

इम युक्ति साधन धरी चितसइ कीध सबल सरूपता।
जाणिस्यइ तो पणि तेह लहिस्यै प्रवल अनवच्छिन लता ॥
उच्छेदि असमर्थक तणउ मत विनयचन्द विख्यात ए।
उपदिसइ सहु नी प्रार्थना वशि इण परइ आख्यात ए ॥१॥

॥ इति श्री कुगुरु स्वाध्यायः ॥ सर्वगाथा ३१

कविवर विनयचन्द्र विरचित

श्री उत्तमकुमार चरित्र चौपाई

॥ दूहा ॥

एकदन्तो महावीर्य्यो, नमोस्तु सरस पाणिने।
सिद्धन्ति सर्व कार्याणि, त्वं प्रसाद विनायकः ॥१॥
ॐ अक्षर अतुल बल, चिदानन्द चिद्रूप।
सकल तत्व सपेखता, अविचल अलख अनूप ॥२॥
अजर अमर अविकार निति, ज्योति तणौ जे ठाम।
सत्व रूप साराहियै, पूरण वंछित काम ॥३॥
जेहनै नाम स्मरण थी, फीटै सगला फंद।
मंदमती पंडित हुवै, दूरि टलै दुख दंद ॥४॥
योगी ध्यावै युक्ति सुं, भक्ति करी भरपूर।
सपै तेहनै व्यक्ति गुण, शक्ति सहित ससनूर ॥५॥
मंत्र मुख्य बीजक कह्यो, सार सहित सुविलास।
अरिहंतादिक पंच नौ, अन्तर जास निवास ॥६॥
अभ्र माहि जिम ध्रू अडिग, शेषनाग पाताल।
मृत्युलोक मां मेरु जिम, तिम ए वरण विसाल ॥७॥
ते अक्षर तो छै वडू, मन पिण आगेवाण।
सरसति माता आपजे, मुझ नै अमृत वाणि ॥८॥
श्रीजिनकुशलसुरिंद गुरु, पूरौ मुझ मन आस।
अंतरजामी जाणि नै, करीयै निज अरुदास ॥९॥

जोड़ि तणी का सुद्धि नहीं, हूं अति मूढ अयाण ।
तुम सुपसाये जे कहुँ, चाढो तेह प्रमाण ॥१०॥
दान सुपात्र समो न को, मुक्ति तणो दातार ।
उलट धरि द्यै ते तजै, सलिल निधि संसार ॥११॥
सालिभद्र आदिक उपरि, दान तणै अधिकार ।
जिनशासन मां जोवता, चरते नावै पार ॥१२॥
तो पणि उत्तमकुमर नौ, चरित सुणो मन रंग ।
साधु प्रशंसित दान जिण, दीधो आणि उमंग ॥१३॥
वात चिंत कौ मत करौ, छोडो कुमति किलेस ।
वाचंतां कविता तणो, मन जिम थाय विशेष ॥१४॥

ढाल—(१) गौतम स्वामि समोसर्या एहनी

वचन रचन सुणज्यो हिवै, आणी भाव प्रधानो रे ।
देज्यो दान इसी परै, जेम लहो तुमे मानो रे ॥१॥व०
इणहिज जंबूद्वीप मां, दक्षिण भरत उदारो रे ।
काशी देश जिहाँ भलौ, पृथिवी नो सिणगारो रे ॥२॥व०
नयरी तिहाँ वणारसी, अलिकापुरि सम तेहो रे ।
जहाँ सुर सरिखा मानवी, निशदिन चढते नेहो रे ॥३॥ व०
वलि तेहनै चौ पाखती, विकट दुरंग विराजै रे ।
घण वाजित्र सदा घुरै, घन गरजारव लाजै रे ॥४॥ व०
ऊँचा मंदिर अति घणा, दीठा आवै दायौ रे ।
तिम चित चोरै कोरणी, जोतां दिन वहि जायो रे ॥५॥ व०

गोखै बैठी गौरडी, अपछर नै अनुहारो रे।
केलि करै मन मेलि नैं, सहियर सुं सुखकारो रे ॥६॥ व०
जिनमन्दिर रलियामणा, दंड कलश करि सोहै रे।
अति ऊँची धज लहलहै, सुरनर ना मन मोहै रे ॥७॥ व०
चौरासी वलि चौहटा, मिलिया बहु जन वृन्दो रे।
देश अने परदेश ना, पावै परमाणंदो रे ॥८॥ व०
सरस सरोवर चिहु गमा, भरीया जल करि पूरो रे।
हंस प्रमुख कल्लोल सुं, निवसै दुख करि दूरो रे ॥९॥ व०
वली विशेषै तरुवर करी, सोहै वन सश्रीको रे।
कोकिल करै टहूकडा, रहै पंखी निरभीको रे ॥१०॥व०
बारै मास लगै सदा, नील हरी जिहाँ दीसै रे।
फल फूले छाइ घणुं, हीयडो देखी हीसै रे ॥११॥व०
राज करै नगरी तणौ, मकरध्वज भूपालो रे।
सूरवीर अति साहसी, न्याय नीत सुदयालो रे ॥१२॥व०
दुर्जन जे वाका हता, नार कीया ते जेरो रे।
जिम मृगपति नै आगलै, न सकै गयवर फेरो रे ॥१३॥व०
इन्द्र समोवर जाणीयें, रिद्धि करी राजानो रे।
गुनह खमै निज प्रजा तणौ, दिन-दिन बधतै वानो रे ॥१४॥व०
यत :—उदै अदृश्कै भूप नहि, पहिस्या नाही भूप।
खुद खमै सो राजवी, निरख सहै सो रूप ॥१५॥
तेहनै राणी रूवडी, पतिभगती गुण खाणो रे।
नामे श्री लखमोवती, इन्द्राणी सम जाणो रे ॥१६॥व०

जाणै ते चौसठि कला, निरूपम वचन विलासो रे।
चन्द्रवदन मृगलोयणी, गय गजराज उल्हासो रे ॥१७॥व०
पालै सील भली परै, धरम करी सुविकासै रे।
एम विनयचन्द्र हेज सुं, ढाल प्रथम परकासै रे ॥१८॥व०

॥ दूहा ॥

ते सुख विलसै दंपती, विविध परै ससनेह।
मास घडी सम लेखवै, जिम दोगंधक देह ॥१॥
शुभ स्वप्ने सुत ऊपनौ, राणी उयर मझार।
सुख ऊपरि सुख तौ लहै, जौ तूसै करतार ॥२॥
ललित लच्छि पुण सुत निपुण, गौरी गजगति गेलि।
पुण्य प्रमाणं पामीयै, विनयचन्द्र गुण वेलि ॥३॥
दिन-दिन डोहला पूरतां, वोल्या पूरा मास।
सुत जायौ रलियामणौ, सहुनी पूगी आस ॥४॥
ए अद्भुत प्रगटीयौ, प्रथम हतो जे भूप।
दीप थकी दीपक हुवै, ए दृष्टान्त अनूप ॥५॥
राजा अति उच्छवक थकै, जनम महोच्छव कीध।
घरि-घरि तोरण बाधीया, दान बली तिहां दीध ॥६॥
दशऊठण कीधा पछी, उत्तम लक्षण देखि।
नाम दीधो सहु साख ले, उत्तमकुमर विशेष ॥७॥

ढाल—(२) वींछियानी

म्हा रे लाल तेह कुमर दिन-दिन वधै,
जिम चन्द्रकला सुविसाल रे लाल।

धाइ माइ पालीजतौ,
थयो आठ वरस नो वाल रे ॥१॥

वाल्हो लागै रंगीलो रे कुंमरजी,
ते खेलै राज दुवार रे लाल।
मोह्या मुख मुलकै सहु,
तिम निजर तणै मटकार रे ॥२॥ वा०

हां रे लाल मात पिता वहु प्रेम सुं,
तजिवा वालापण लाज रे लाल।
आडम्बर करि कुमर नैं,
मुंक्यौ भणवा नैं काज रे।३॥ वा०

हां रे लाल लेखक शाला माहि जे,
जुड़ि वेंठा छात्र अनेक रे लाल।
ते सहु पाछलि तेह नै, अध्ययन करै सुविवेक रे ॥४॥ वा०

कितले दिन जाते थयौ, ते सकल कला नो जाण रे।
लघु वय सकज सकल वधै, ए पुण्य तणा परमाण रे ॥५॥ वा०

सत्य वचन वोलै सदा, वाम्ह वलि राखै नीति रे।
तो हिज वाधइ लोक मां, तेहनी पूरी प्रतीति रे ॥६॥ वा०

कांटो वाजें पगतलै, ते खटकै वारो वार रे।
जीव कहो किम मारीयें, इम जाणीदया करै सार रे।७॥वा०

अणदीधो लीजै तृणो, तो ही अदत्तादान रे।
एम विचारी परिहरें, सुकलीणो कुमर सुजाण रे ॥८॥ वा०

नरक महल चढिवा भणी, नीसरणी सम परदार रे।
अकलंकित तनु जेहनो, वलि कनकाचल सम धीर रे॥६॥वा०

सहज सलूणो कुमर जी, सायर री परि गभीर रे।
गमन निवारै जाणि नै, देखी अति गहन विचार रे॥१०॥वा०

कला वहुत्तर आगलो, दाता ज्ञाता जिम सूर रे।
प्रसिद्धि भलेरी जगत मा, जस अधिको प्रवल पडूर रे॥११॥वा०

खेल करै निशि वासरै, मन मेलू लेई संग रे।
विषमा अरियण अवहटै, ए राजवीयां रो अंग रे॥१२॥वा०

दीन हीन नै ऊधरै, दुखीयां केरो प्रतिपाल रे।
विनयचन्द्र कहै एतलै, पूरी थई बीजी ढाल रे॥१३॥ वा०

दूहा सोरठा

सुख विलसता तेम, निशि भर कुमर इसी परै।
एक दिन चिंतै एम, तरुण थयौ हिव हुं सही॥१॥

तौ स्यु वैठो आम, परवशि थई मुधा परै।
ए कायर नुं काम, घर सूरा किम थईयइं॥२॥

यत :—गुण भमतां गुणवंत नै, वेठां अवगुण जोय।
वनिता नै फिरिवौ बुरौ, जो सुकलीणी होय॥३॥

खाटी लखमी जेह, वाप तणी किम विलसीयै।
तौ नहीं ए मुझ देह, जउ मन चिंत नवि करूं॥४॥

इम मन मा आलोचि, हाथ खड्ग ले उठीयौ।
कीयौ न काइ सोच, स्वजन तणौ तिण अवसरै॥५॥

चाल्यौ होइ निचंत, ते परदेशैं पाधरौ।
खरी आणी मन खंत, कुमर परीक्षा कारणै॥६॥

ढाल—(३) घण री सोरठी

लांघै विषमी चालतां होजी, वाट अनड़ वर वीर, प्रवल पराक्रमी ।
धरम धुरंधर धीर प्र० महीयल शोभा आक्रमी होजी,
गुण निधि गुण गंभीर , १ प्र०

सूर तपै सिर ऊपरै होजी, लू पिण भेदै अंग, खलहल खलकती ।
तिहा पणि उतरै ढलकती होजी, नदियाँ परवत शृङ्ग , २ ख०
सुख दुख पामे ते सहे हो जी, कौतकियाँ नो राव ।
मलपइ मन नी रली, तो पणि सुविशेष वली होजी,
देखी खेलै दाव ; ३ म०

तिहा किण आवै पंथ मा हो जी, अटवी एक अपार ।
सरस सुहामणी, घणी तिहां सरवर तणी होजी,
लहिर सदा सुखकार ; ४ स०

अवलोकै रन वन घणा हो जी, तरुवर नौ नहिं ग्यान ।
नयणा निरखती, जाण कि अमृत वरषती होजी,
कुमर तणी तिण ठाम , ५ न०

किहा किण कमल तणी भली हो जी, कलिया अति सोरंभ,
विहसैं विकसती, नानी मोटी निकसती होजी,
करती वडो रे अचंभ ; ६ वि०

अनुक्रमि नियत प्रमाण मां हो जी, लांघै ग्राम अनेक ;
दीपं दिनमणी. मन मांहे धीरप घणी हो जी,
संगि न कोई एक ; ७ दी०

भमतो भमर तणी परै हो जी, आयौ गढ चीत्रोड़ ;
हेजे हरखती, हेलै जिण जीता अरी होजी,
सुहड़ा सिरहर मौड़, ८ हे०
राजा तिण नगरी तणो होजी, मछरालौ महसेन ;
मानी महिपति, अछै सभा दो शुभमती होजी ;
दायक जिम सुरधेन ; ६ मा०
देशा माहे दीपतो होजी, देश वडो मेवाड़ ;
राखै तसु रली, जेहनै को न सकै छली होजी,
वैरी तणो रे विभाड़ ; १० रा०
गुणीयण जस जेहनो कहै होजी, चावो चारे खंड ;
कमणा का नहीं, सरिखा छै तेहने सही होजी,
हय गय प्रबल प्रचण्ड, ११ क०
अवर सहु कौ राजवी होजी, सीस नमावै जास,
अधिक वयण अमी, ए पणि मोटा राजवी होजी,
राखै महिर उल्लास ; १२ अ०
विरुओ दुर्मुख ऊपरै होजी, पिण जिन धर्म करंत ;
रयण दिवस रही, समकित सुद्ध सुमति ग्रही होजी,
भजै सदा भगवंत ; १३ र०
भामणि सेती भोगवै होजी, जे सुख संसारीक ;
अवसर आपणी, सुत कारण सहु अवगिणी होजी,
माणै लाछि अलीक ; १४ अ०

देसी धणरी सोरठी होजी, तिण मे तीजी ढाल ;
रसीया मन रमी, कहता हीज मन मां गमी होजी,
विनयचन्द्र सुविशाल , १५ र०

॥ दूहा ॥

राज करंता राजवी, गेह गिणै मृग पास ;
पुत्र तणी यौवन पणै, काय न पूगी आस ; १
सुखिया देखि सकै नहीं, दोषी दैव अकज्ज ,
संपति द्यै तो सुत नहीं, इण परि करै निर्लज्ज , २
वइ वूढो अंगज पखै, रहै मन माहि उदास ;
गृह जाणै सूनौ सहु, दिन दिन थाय निरास , ३
इक अवनीपति सुत विना, वलि वेस्या मे वास,
नदी किराडै रूंखड़ा, जद तद होइ विणास ; ४
दैव मनायां नवि थयौ, खरची धननी कोड़ि ;
तो कोई कारण अछै, का तन मांहे खोड़ि ; ५

ढाल ४ हमीरा नी

किणही आस फली नहीं, तेह करमनी वात राजनजी
विण सरज्या सुत किम हुवै, जो जमवारो जात रा० १ कि०
इम मन मांहे चींतवी, पोतानें परिवार रा०
जायै वन नें अतरै, मंत्रि प्रमुख लेइ लार रा० २ कि०
नील वरण हयवर ऊपरै, राज थयो असवार रा०
सहु गुण लक्षण पूरीयौ, ते हयवर श्रीकार रा० ३ कि०
पणि गति भंग करै घणु, महीपति पूछै ताम रा०
मुंहता नवलि किशोर नी, केम अवस्था आम रा० ४ कि०

बीजो कोइ बोलै नहीं, घणी थई तिहां वार रा०
तेह सरूप अलक्ष छइं, पिण मंत्री करै विचार रा० ५ कि०
राजा अति आतुर थयौ, तेहनै कीधी रीस रा०
उत्तम तिहां किण आविनै, बोलै विसवा वीस रा० ६ कि०
हुँ परदेशी छु प्रभो, तो पणि साभलि वात रा०
तुम आगलि किम राखियै, कूड़ कपट तिल मात रा० ७ कि०
हु कहिस्युँ मति अनुसरै, अश्व तुमारो एह रा०
महिषी दूध पियौ घणौ, तिण मदी गत छेह रा० ८ कि०
वाई पय प्रायै हुवै, चंचल गति तिण नाहि रा०
राय कहै वछ माहरै, तुं वसीयो मन माहि रा० ९ कि०
तुं ज्ञानी तुम्हसुं कहुं, इण साचइ अहिनाण रा०
स्या कहीयै गुण ताहरा, तु कोई चतुर सुजाण रा० १० कि०
दूषण किम ते जाणीयौ, कुमर कहै वलि एम रा०
जाणु हयवर पारिखौ, तिण कारण कह्यो तेम रा० ११ कि०
मा मूई जव एहनी, तव ए लघुतर वाल रा०
पय पाई मोटो कियौ, एम कहै भूपाल रा० १२ कि०
इण परि चौथी ढाल मे, रीझ्यौ चित राजान रा०
विनयचंद कहै कुमर नैं, थास्यै आदर मान रा० १३ कि०

॥ दूहा ॥

इतला दिन हुं घरि रह्यो, विण सुत अति निस्नेह ;
हिव तुं हिज सुत माहरै, दूधे वूठा मेह ; १

मारै भागे तू मिल्यौ, सगली वात सकज्ज ;
पर उपगार शिरोमणी, सहु साधण पर कज्ज , २
ए हय गय रथ ए सुभट, ए मंदिर ए सेज,
आदरि तु संतोप धरि, माहरो तो परि हेज ; ३
चारित्र लेवा ऊमह्यो, ज्ञानी गुरु नइं पास ;
तुझ आगलि तिण कारणै, कहियै वचन विलास , ४
आचारे लखीयै सही, तुं छैं राजकुमार ,
मन गमतो मुझ राज्य ले, मत को करे विचार , ५

ढाल (५)

रसीयानी

तव ते कुंवर कहै कर जोड़ि नै, तात सुणो मुझ वात, मया करि
हुँ परदेशी रे कुतूहल जोडवा, नीसरियो सुविख्यात, म० १ त०
हिव आगै चालीस एकलो, देखीस सकल विनोद, दया पर
तुम चरणे राजन जी हुं आविसु, मन धरि परम प्रमोद, द०२ त०
इम कहि लेइ सीख सनेहसुँ, ततखिण चाल्यो रे ऊठि, सुगुण नर
एकलड़ौ पिण रयौ डर तेहनै, जगगुरु जेहनै रे पूठि, सु० ३ त०
लांघै ग्राम नगर वहिला घणुं, तिमगिरि गह्वर नीर, चतुर नर
कितलाइक दिन मारग चालतो, पहुतो भरुच्छ तीर च० ४ त०
नगरी तणी छवि देखइं सोहामणी, प्रसन थयो मन माहिं सोभागी
जोवा लायक सगली जाइगा, जिण मुंकी अवगाहि सो० ५ त०
तिहाँ जिनवर मुनिसुव्रत स्वामिनै, देवगृह निज आय, सहीसुँ
वारो वार करै गुण वर्णना, मन सुद्ध प्रणमै रे पाय, स० ६ त०

जन्म सफल गिणि सरवर आवीयो, वैठो तरुवर छाय, रसिक नर
नीर भरै पणिहारी तिहा किणें, निरखै ते मन लाय, र० ७ त०
मांहो मांह वात करै त्रिया, सुणि वहिनी मुझ वात, सहेली
कुवेरदत्त नामा विवहारीयौ, आज चलेस्यै रे जात, स० ८ त०
पिण प्रवहण पूरेस्यै पाचसै, द्वीप मुगध मा रे जाय, सुरंगी
ते तो अष्टादश योजन शत, मान इसु कहिवाय, सु० ९ त०
मध्य भाग लवणोदधि नै रह्या, जिहाँ लंका कहवाय, सलूणी
द्रव्य उपावण साथे मानवी, त्या सु पूरी रे प्रीत, स० १० त०
इम सुणि वात घणु हरखित थयौ, कुमार विचारइ रे एम, सनेही
सांयात्रिक संघातइं ते भणी, पूछि चढुं तिहाँ खेम, स० ११ त०
प्रवहण ऊपर वैठो पूछनै, सहु सु मिलीयो रे आप, विनय सु
मीठा वचन कही रीझ्या सहु, सकल टल्यो रे संताप, वि०१२ त०
शुभ महुरत ले पूरीया, लाध्यो कितरो रे माग, चलंतां
जल खूटौ तिहा पोतक वणिक कहै,पूरो कोई रे अभाग, च०१३त०
इतलै वखत तणै वसि आवीयो, एक तिहाँ सूनो रे द्वीप, हरखसुं
सहु ऊतरि जल भरवा नें गया, वहिला कूप समीप, ह० १४ त०

यत :—पेखी नदी जल पूर, तिरस वसै जायै तृषित
जग मे गरज गरूर, विनयचन्द्र इण परि वदै ?

जल सग्रह करंतां लोकां भणी,खिण इक लागी रे वार, करम वसि
भ्रमरकेतु राक्षस तिहाँ आवीयौ,सरजित तणै रे प्रकार, क०१५त०
ढाल कही रूडी पाँचमी, विनयचन्द्र वहु जाण, भविकजन
भय करसी राक्षस पणि धरमथी,थास्यै कुशल कल्याण,भ०१६त०

॥ दूहा ॥

ते रात्रैचर अति विटल, विकल वदन विकराल ;
विषम वचन मुख बोलतो, रूठो जाणि कराल ; १
साठि सहस्र वलि जेहनै, राक्षस पूरइं पूठि ;
साँक न राखै केहनी, दूरि किया जिण दूठ ; २
पिण भूखौ ते स्युं करै, आव्यौ अवसरि देखि ,
माँस भखेवा उलस्यौ, माणस नौ सुविशेष ; ३
वलि काढंतो जीभ ते, लोक डरावै सर्व्व ,
कर झाले करवाल इक, धरि मन माँहे गर्व्व , ३
वचने करि सहु नै कहै, किहाँ जास्यौ रे आज ,
इम कहतो आव्यो कन्है, करतो अधिक अगाज , ५

ढाल (६) तारि करतार ससार सागर थकी, एहनी

कोप करि लोक तिण पकड़ि कबजै किया,
विगर घर वार हूवा वियोगी,
नासतां भूइं भारी पडी त्यां नरां,
सवल पानै पड्या थया सोगी १ को०
केइ झाल्या जकड़ि पकड़ि नै काख मे,
दाबीया केई करथी सदावै ;
तेम चाँप्या पग हेठि पापी तणै,
एण अवसर कवण केडि आवै , २ को०
अतुल वल फोरि करजोर हिव आपणौ,
कुमर तिण ठौर भरडाक आयौ ,

साहसी इम कहै दुष्ट पापिष्ट सुणि,
सीह सूतो किस्यानै जगायो ; ३ को०
नीच तुझ थी इसौ वयर कोई नहीं,
नास दांते तृणो लेई निवला ,
राति दिन रांक नर मारिवा रड़ वड़ै,
साह न सकीसि मो जिसा सबला, ४को०
चित्त मां इम सुणी प्रेतपति चमकीयौ,
वाल वय एम सुं वचन वोलै ;
किसी वलि देह घट मांहि पोरस किसौ,
डिगमिगै वचन मन केम डोलै , ५ को०
वचन कांकल प्रथम मांडि वड वेग सुं,
झडा झड़ि झूझ माड्यौ झड़ाकै ;
सडा सड़ सोक तीरां तणी सवल द्यै,
तडा तड़ वहै धजवड़ तड़ाकै , ६ को०
झणण धरि वाण करि वणण रमझमक द्यै,
खसर कसमस हसै करि खंगारा ;
सणण चिहुँ दिशि नासि सेना चरा,
जाण छूटी छलद जलद धारा ; ७ को०
धड़ाधड़ि धरणि गड़डाट नभ धड़हड़ै,
राग्डिदिधरि रीस ते लीयैं रटका ,
खाग्डिदि खेलै खड़ाखड़ विहुंज सखरइं,
वडा वडा उडै समसेर वटका ; ८ को०

भाग्डदि भुइ लुटै खिण छुटै वलि अभ्भटै,
प्रगट भट ऊछलै जिम पतंगा
तिहा करै घाव देइ ओट वड वेग सुं,
मरद न मुडै ज्जुडै जिम मतंगा, ९ को०
अंत तस वल घट्यौ कुमर तव ऊलट्यौ,
कट्यौ जंजाल सहु लोक छूटा;
जुद्ध हुइं रह्यौ हथियार रो जिण वड़ी,
जोर धरि वले अंग जूटा, १० को०
झपटि द्यै थापटे चापटे झापटे,
गहग गंभीर मुख करै गाजा
मूठि अर मुठि पडि ऊठि भड दूठ मचि,
लडि लगावै रखे कोइ लाजां ११ को०
अधिक नहीं वात चढ़ं लात करि घात अति
धग्डदि धुकि झवकि झुकि दीयै धमका,
जाणि खैंकार करती जिसी अपछरा
ठमकि पद ठावति करै ठमका, १२ को०
प्रवल भुज जुद्ध खिण मां उपसम थयौ
निठुर कायर भ्रमरकेतु नाठो
धन्न हो धन्य जोगणि कहै चित्त धरि
कीयौ राक्षस थकी हीयो काठौ १३को०
पोन्य पोते हुवै तेह जीपइं सदा
धरम न करै तिके धमधमीजै

पुण्य थी शत्रुदल तेह आई नडै
पुण्य थी शिवसुख तुरत लीजै; १४ को०
सुजस वाध्यो घणो कुमर उत्तम तणौ
कीयो उपगार तिण विण निहोरइ
ढाल छट्ठी विनयचन्द्र इण परि भणै
उत्तस्या वादला वाय जोरै; १५ को०

॥ दूहा ॥

आवै कुमर तिहा थकी, सायर तट मन रंग,
मनुष्य मात्र दीसै नहीं, तुरत कीयौ मन भंग, १
सहु नै राख्या जीवता, मैं कीधो उपगार;
तो पिण मुझनै अवसरै, मूकि गया निरधार; २
लाज विहूणा लोकए, नीच निगुण निसनेह:
आप सवारथ साधिनै, निश्चय दीधो छेह; ३
वहिला खेड़ जिहाज नै, मुझ सुं खेली घात,
तो काइक दीसै अछै, वखत लिखतनी वात; ४
मै तो कीधी मो दिसा, जेह भलाई आज;
जो न गिणी तो तेहनै, पूछेसी महाराज; ५

ढाल ७ इण रित मोनै पानजी सामरै, एहनी

वलि मन माहे चींतवैं सखी, ते तो लोक विनीत;
राक्षस आगलि स्युं करै सखी मन मां सवली भीति रे;
किण परि राखै मुझ चीत रे, भय मरण तणो विपरीति रे;
तिहां दूरि रही ते प्रीति रे, पछै सहु को नी रीति रे; १

इम जाणी रिदै गुण संभरै,
एहिज वृक्ष सुहामणा सखी, घणा वली फल फूल,
तो हिव इण हिज थानके सखी, वसियै करनै सूल रे;
किहा तो न पडीजै भूल रे, जिन ध्यान मां रहीयै भूल रे;
करिय गुण ग्रास अमूल रे, जिम न हुवइ चित्त डमडूलरे,२इ०

इहा रहता कुण जाणसी सखी, एहवो चित्त विमास,
एकण तरुवर ऊपरै सखी, ध्वज वांधी सुविलास रे,
तिहा समरै जिनवर पास रे, अवहड मन धरतो आस रे,
कहतो मुखथी जसवास रे, अमृत सम वचन विलास रे, ३इ०

तेहज द्वीप निवासनी सखी, देवी देखि कुमार,
मन चिंतइ रंजी थकी सखी, माहरइ प्राण आधार रे,
मिलीयो दुखियां साधार रे, जो आय चढै घर वार रे,
तउ सफल गिणु अवतार रे, थायै मन मांहि करार रे, ४ इ०

हिव आगलि आवी कहै सखी, सुणि मनमोहन वात रे,
तुझ सुं लागी मोहनी सखी, भेदी साते धात रे,
मुझ दाझै खिण खिण गात रे, मुझ सेती न रह्यो जात रे;
तुं दिल मां परम सुहात रे, स्युं कहियै वहु अवदात रे; ५ इ०

तुं तौ प्रीतम मानवी सखि, हुं छुं अपछर नारि;
तिहा सुख भोगवतां छता सखी, करमा अन्य प्रकार रे;
संतावै मदन अपार रे, तन वाध्यो मदन विकार रे।
मिलवो तोसुं इकचार रे, मैं कीधो एह विचार रे, ६ इ०

जोरइ पिण हिव ताहरइ सखी, गलि मांहि घालिस बाह;
जे मिलवा नै उल्हसै सखी, किसी विमासण ताहि रे;
ए जोवण लहिरें जांहि रे, टाढी तरुवर नी छाहि रे,
कहियौ आणौ मन मांहि रे, अणवोल्या वणसी नांहि रे, ७ इ०
राजकुमर तव इम कहै सखी, स्यानै खोवै लाज;
ताहरइ मन मे जे अछै सखी, मोसु न सरइ काज रे;
इवड़ी करइं केम आवाज रे, तुं सहु देव्या सिरताज रे;
माहरौ राखीजै माज रे, इतलो हिज दीजे राज रे; ८ इ०
परनारी वहिनी अछै सखी, वलीय विशेपै मात;
तिण तुझ नै साची कहुँ सखी सो वाते इक बात रे;
इण वात नरक मा पात रे, नव लक्ष जीव नो घात रे;
दुख सहियै दिन ने राति रे, नवि लहियै खिण सुख सात रे; ९ इ०
वईयर वालै रूसणै सखि भाखै देवी वाणि,
सगपण भगनी मात नो सखी, दाखै केम अयाण रे,
माहरो करि वचन प्रमाण रे, जो चाहै घट मां प्राण रे,
तुं भावै जाणि म जाणि रे, रहिस्यै नहिं काइ काण रे; १० इ०
देवी तव रूठी थकी सखी, काढि खड़ग कहै ताम,
विण जीवी तुं काइ मरै सखी, करि मूरख ए काम रे,
तुझ नै नवि लागै दाम रे, ए सजल सरस छै ठाम रे;
तुं जे नवि घालै हाम रे, कहि नै किम चलसी आम रे, ११ इ०
सूर अवर दिश ऊगमैं सखी, मेरु डिगै वलि जेम;
सायर मरयादा तजै सखी, पिण नवि चूकुं तेम रे,

परस्त्री सुं रमवा नेम रे, तव चिंतइ अपछर एम रे
एतौ नवि राखै मुझ प्रेम रे, निठुरो करीये कहो केम रे ॥१२ इ०॥
निश्चल मन कुमर कीयौ सखी, न पड्यो माया जाल ;
टेक ग्रही ते नवि तजी सखी, वचन तणो प्रतिपाल रे ;
कंठै ठवि शीलनी माल रे, सहु दूर भिड्यौ जंजाल रे ;
एतलै ए सातमी ढाल रे, कहै विनयचन्द्र चौसाल रे॥१३ इ०॥

॥ दूहा ॥

देवी इण परि वीनवै, रीस करी जे काय ,
ओछो अधिको जे कह्यो, खमज्यो तु महाराय . ॥१॥
एकण जीभइं ताहरा, गुण मोसुं न कहाय ,
ताहरै नामे जनम ना, पातक दूर पुलाय ॥२॥
जे वोल्या दशवीस तैं, अमीय समाणा वोल ,
हितकारी सहुनै अछै, पिण हुं निठुल निटोल ॥३॥
हाव भाव विभ्रम कीया, वलि तिमहीज विलाप ;
तो पिण तैं तिलमात्र इक, नाण्यो मन संताप ॥४॥
सील लील राखण भणी, तजिवा मौंडी देह ,
पिण परनारी जाणि नै, न कीयौ विषय सनेह ॥५॥

ढाल—८ मृगनयणी रावाजी रे कत कहा रति माणि राजि ए देशी

न दीयौ छेह नेह धरि गाढौ, धरम नी वात वखाणी राज हां ध०
गति मति नै द्य ति छानी रहे, नहीं वाणी अमीय समाणी राज १
अम्हे पणि जाणी राजि जाणी तु एतो मन जोवा नै माटै कुमरजी

मुझ थी बात कहाणी राज जिण धरमनी वात कुमरजी
विषय निजर तुमे नाणी अमे० २
इम कहि बारह कोड़ि रयणनी वरषा करि सुप्रमाणी राजि
जिण धरमनी देसण ठाणी मुगति तणी अहिनाणी ३ अ०
मन नी कासल छोड़ि गई हिव निज थानकि सुरराणी राज
कुमर तणा गुण खिण खिण समरै जास कुमति कमलाणी राज ४
प्रवहण देखि इसे इक नैडो नयण तिहां विकसाणी राज
सरलै साद कहै रे भाई ल्यो तुम्हे खबर अम्हाणी ; ६ अ०
साभली वाणी पुरुष नी एहवी समुद्रदत्त मन भाणी राज
कोइक नो भागो छै वाहण ल्यौ तुमे खबर आफाणी ; ७ अ०
सगला नर तिण पासे आवै, देखि धजा लहकाणी राज
उत्तमकुमर तिहा निज वाता, भाखी चित्त सुहाणी राज , ८ अ०
कुमर तणा गुण देखि सहूनी, अंतरगति उलसाणी राज
हिलमिल वेसि चल्या सायरमा, खूटि गयौ वलि पाणी , ९ अ०
भर दरीया माहे ते जल विण, सुं करै प्रीति पुराणी राज
तड़कै भड़कै भूत थई तसु, बींधइ उदर कृपाणी ; १० अ०
निर्यामक कहै शास्त्र निहाली, म करो खांचाताणी राज
हिवणा वेलि उतरसी जलनी, धीर धरो तुमे प्राणी ११ अ०
प्रगट हुस्यै गिर फिटक रयण मौं, कूपक तिहां सुखदाणी राज
जल निरमल ते मांहे अछै पिण एहवी वात सुहाणी १२ अ०
राक्षस धीठ रहै इण थानक लोक उक्ति कहवाणी राज
आठमी ढाल कहै मनरंगे, विनयचन्द्र गुण खाणी ; १३ अ०

॥ दूहा ॥

निर्यासक सुणि वातड़ी, लोक कहै गुण गेह ;
राक्षस ते केहवौ अछै, अंगत आकारेह , १
तेह कहै दीठो किणै, पिण लोका री वात ,
जे आवै इण थानकें, करै तेहनो घात , २
महाक्रूर रुद्रातमा, मासभखी विष नयण ;
भ्रमरकेतु नामै इसौ, दुर्द्धर जेहना वयण ; ३
जलधि देव नै आगलै तिण ए कीधो नेम ,
वाहण मा जन नवि भखु, वाहिर थी नहि नेम ; ४
वात करंता तेहवै, ते परवत तिण ठाम ,
जगा ज्योति प्रगट थयौ, सहु को हरख्या ताम ; ५

ढाल—६ योगिना री

कूप तिहा ते निरखि नै रे, जल पूरत ससुवाद सजन जी
सहु निर्यामक नै कहै रे, विरुओ तेह पलाद ; १
सजनजी एक सुणौ अरदास स० तेहनौ एछै वास स०
करिस्यै सहुनो नास स० थइयै तेण निरास , २
प्रवहण थी नवि ऊतरै, राक्षस भय असमान
केई नर आगे भख्या रे, कहता नावै ग्यान ; ३
तिण कारण मरवौ भलौ रे, तिरपारत इण ठाम ;
पिण न हुवा तेहना वसूरे, लोक वदै सहु आम , ४
वात सुणी इम लोकनी रे, देई अवचल वाच ;
कुमर विदा वर साहसी रे इण परि जंपै साच ; ५

मुझ सरिखौ साथै छतां रे, कांइ डरावै आम ;
सुरपति तिण मुझ सामुही रे, घाल सकै नहीं हाम ; ६ स०
तौ ए स्यु छै वापड़ौ रे, एहनी सी परवाह ;
स्याल तणौ स्यौ आसरौ रे, सीह तिहाँ गज गाह ; ७ स०
ऊतरि प्रवहण थी तदा रे, जल भरिवा नै काज ;
कूप समीपइं आविया रे, लोकां तणौ समाज ; ८ स०
मन संकित पण तो हिवै रे, लेइ नै जल पात्र ;
राढू आगलि बाँधि नै रे, मूक्यो सरलै गात्र ; ९ स०
पाणी तिहाँ नवि नीकलै रे, सोकातुर सहु जात ;
चिंतवणा एहवी करै रे, एतौ विरुइ वात ; १० स०
रीव करइं वलि तरफलै रे, जिम थोड़ै जल मीन ;
ऐ ऐ दुर्जय ए त्रिषा रे, जेण थया सत्वहीन ; ११ स०
माँहो माँहे ते कहै रे, दीसै जलि भृत कूप ;
तोही बिन्दु न नीकलै रे, कोइक दैव सरूप ; १२ स०
अरति अंदोह करै घणु रे, मरणौ आयो माय ;
स्युं कीजै हिव वापजी रे, तिरष न खमणी जाय , १३ स०
के संभारै गेहनै रे, के महिला सुख सेज ;
के वाई के वहिनड़ी रे, के भाई के भाणेज ; १४ स०
इम चिंतातुर लोक नै रे, देखी राजकुमार ;
कूप प्रवेशन आदरी रे, सहु मन कीध करार ; १५ स०
जेह विरुद मोटा वहै रे, तेह करै उपगार
नवमी ढाल कही भली रे, विनयचन्द्र हितकार ; १६ स०

॥ दूहा ॥

रज्जु विलंबी नै कुमर, पइसै कूप मझार,
तिण माहे इक झण परै, निरखै देव प्रकार ; १
जाली कंचन माहि सुभ, जल ऊपरि तिहा कीध,
मन मा अचरिज ऊपनौ, आडी किण ए दीध , २
सुणो सुणो रे लोक सहु, विस्मय वाली वात ;
जाली सोवन नी अछै, दीठा उल्लसै गात , ३
तिण नीचै जल देखि नै, वडवखती वड़वीर ,
डरी परही करि जालिका, भाजै घर मन धीर ; ४
पाणी सुगम कीयौ कुमर, जेह हतो दुरलंभ ,
रलियाइत सहु को थया, पीछो परिघल अंभ , ५

दूहो सोरठो

गुण समरी नर तेह, कुमर तणा तिण अवसरै ,
तास चरण नी खेह, सहु को आपण नै गिणै , ६

ढाल—१० राग—सामेरी

चतुर नर एह वडी अधिकाई,
वाल अवस्था माहि अछै पणि, कुमर थयौ सुखदाई , १ च०
हिव चालौ प्रवहण पूरी नै, करि जल तणी सझाई ,
चन्द्रद्वीप माहे वैठा किम, आवें वडम वडाई , २ च०
वात करंता कूपक माहे, अद्भुत भींत वणाई ;
देव दुवार सहित पाउडाए, निरखै कुमर सवाई ; ३ च०

लोकां ने कहै हुं परदेशी, कीधो भाग्य सहाई,
तो देखीजै केलि कुतूहल, खोड़ि नहीं छै काई ; ४ च०

प्रथम तजि गृह ते चीत्रोड़े, जाई सगुणता पाई ;
राज तिहां महसेन दियो पणि, न लीयौ लोभ समाई ; ५ च०

छोडाव्या नर रात्रिंचर स्युं, करि नै सबल लड़ाई ;
साम्रत पाणी परगट कीधउ, सहु जाणैं सुघडाई ; ६ च०

हिव आगै स्युं थासी ते पिण, देखीजे मन लाई ;
धूरि हुँति अभ्यास अछै मुझ, करवी सहु सुं भलाई , ७ च०

चाल्यो तिणहीज द्वार थई नइ, मन मां आणि जिकाई;
पाचे रंग तणा पाहण नी, बांधि वाट विछाई ; ८ च०

कंचन में सोपान सुपेखित, रोमराइ उलसाई ;
आगै एक भुवन अति सुंदर, वसुधा जाणि हसाई ; ९ च०

रतन जड़ित अंगण तसु दीसैं, अधिकी जास सफाई ;
भूमि प्रथम सोवन मां मंडित, विकसित रहै सदाई ; १० च०

जोता कुमर इसी पर बीजी, भूमि चढ्यौ वलि जाई ;
ते पिण मणि माणक मां मंडित, तिहां रहै चित लोभाई, ११च०

तीजी मुक्ताफल दीपति, तिम चौथी मन भाई ;
वलि पांचमी छट्ठी मन मोहै, सातमी भूमि सुहाई ; १२ च०

दसमी ढाल थई ए पूरी, विनयचन्द्र चतुराई ;
सुणिज्यो आगलि कुमर कुतूहल, तजि मन विघन वुराई,१३च०

॥ दूहा ॥

तिहां कणि तीजी भूमि परि, वैठी एक ज नारि ;
अति वूढी वलि खीण तन, दीठी तेह कुमार ; १
मुख नहीं खिण दांत विण, मुख माखी विणकार ;
केश पणि चक्षु माजरी, कूबजा नै आकार, २
देखी कुमर भणी निकट, इम जंपै सुविचार ;
कांइ मरै रे आयु विण, रे गुणहीन गमार ; ३
राक्षस तइं नवि साभल्यौ, भ्रमरकेत इण नाम ;
निज घर तजि आयौ इहा, कोइ नहीं स्यु काम ; ४
कुमर कहै रे डोकरी, ते जोरावर दीठ ;
एक धकै मास्यो गुडै, पड़ै स ऊठै नीठ ; ५
पणि ए गृह छै केहनौ, केण करायौ कूप,
वलि तुं वृद्धा कवण छै, ते सहु दाखि सरूप, ६

ढाल (११)

जिनवर सु मेरो मन लीनौ, एहनी

सुणि पथी एक वात हमारी, वृद्धा कहै मन लाई रे,
तैं पूछ्यो ते ऊत्तर देवा, मुझ मन हरषित थाई रे ; १ सु०
राक्षसद्वीप इहां थी नैड़ो, जिहाँ नगरी छै लंक रे ;
राज करै तेहनो राक्षसपति, भ्रमरकेतु निसंक रे ; २ सु०
अति वल्लभ तेहनें पुत्री इक, जास मदालसा नाम रे,
रूपैं करि जीती जाणै रति, अपछर जिम अभिराम रे, ३ सु०

नवली भली कुमुदिनी विकसै, रवि ऊगमतैं जेम रे ;
भर यौवन रवि ऊगै दिन दिन, कुमरी विकसै एम रे ; ४सु०
भ्रमरकेतु राक्षस एक दिवसै, भर दरबार मझार रे ;
नैमित्तिक नै पूछै चित धरि, प्रसन कहौ सुविचार रे ; ५ सु०
कवण हुस्यै मुझ पुत्री नै वर, ते भाखै मतिवंत रे
कहिस्युं तंत तुम्हारै आगलि, रीस म करज्यो अंत रे ; ६ सु०
ताहरी पुत्री नें वर थासी, राजकुमर सुप्रसिद्ध रे ;
तीने खण्ड तणो जे अधिपति, सगली वाते समृद्ध रे ; ७ सु०
एहवौ वचन सुणी विलखाणो, मन मां चिंतै घात रे ;
देवकुमर लायक मुझ पुत्री, भूचर किम परणात रे ; ८ सु०
इम जाणी मन मांहि न आणी, तास कहाणी जास रे ;
सायर में गिरिवर नै शृंगै, कूप कराओ खास रे ; ६ सु०
. . . .
पूर लूण कपूर धुरा धुर, कौणि मन विसवा वीस रे ; १० सु०
जाली कुपक मांहि लगाई, पड़िवा नें भय एह रे ;
वात कही तें पूछी ते सहु, वलि साभलि ससनेह रे ; ११ सु०
ढाल एकादशमी सांभलता, जाणीजै सद्भाव रे ;
विनयचन्द्र कुमर तिहा ऊभो, देखै अपणौ दाव रे ; १२ सु०

॥ दूहा ॥

अवर निमित्ती नै वली, पूछइं मन धरि राय ;
मुझ पुत्री कुण परणस्यै, ते मुझ तुरत वताय ; १
ते जल्पै तेहनी परइं, नृप मन आवी रीस ;
कोड़ि उपाय कीया इसुं, किम करिस्यै जगदीस ; २

दिल भरि दिल फेर कहि, स्युं तेहनो अहिनाण ;
सांयात्रिक जन मारिवा, तुँ गयौ करिनें प्राण ; ३
द्वीपमांहि तोसुँ लड्यो, जिण माहे वहुमाण ;
तुझ नै जीतो जोर करि, ते तुँ निश्चय जाणि, ४
दल वादल वहु मेलिने, तेह चड्यौ तसु काज ,
एम प्रतिज्ञा करि गयौ, मारेवौ तसु आज , ५

ढाल (१२)

विंदली नी,

मास थयौ इक तेहनैं, हिव पूछुं खवर हुँ केहनैं हो,
चटपट चित्त लागी ;
हुं संभारुं जेहनैं, जिम मोर चींतारैं मेहनैं च० १
हीयड़ै कुमर विचारइं, माहरौ स्युं तेहनै सारै हो च०
ते फोकट आपौ हारै, एहवौ कुण मुझनै मारै हो च० २
सवला नी उझड़वाट, आयौ तेहनै निराधाट हो च०
जोरो क्युं मुझ थाट, तो करिस घणा गहगाट हो च० ३
तेह जाणै हुं धीगो, तो मारग रोकी रीको हो च०
हुं पिण छुं रे दड़ीगो, ठीगां ऊपरलो ठीगो हो च० ४
वात विमासैं तेहवैं, ते कुमरी आवी तेहवै हो च०
यौवन रूपैं केहवैं, कवियण भाखै सहु एहवै हो च० ५
भर यौवन मां माती, पिण जैन धरम री राती हो च०
न सकै देखि मिथ्याती, जिणै दूर कीया कुरापाती हो च० ६

(यतः) नारी मिरगानयन, रंग रेखा रस राती,
वदै सुकोमल वयण, महा भर यौवन माती ;
सारद वचन सरूप, सकल सिणगारे सोहै,
अपछर जेम अनूप, मुलकि मानव मन मोहै ;
कल्लोक केलि वहु विध करै, भूरि गुणे पूरणभरी,
चंद्र कहै जिण धरम विण, कामिणि ते किण कामरी; १

रमझमकतैं चालैं, हंसला रै हीयड़ैं सालै हो ; च०
रींसै नयण निहालै, पिण घात किसी परि घालै हो , च० ७
चरण कमल नें ठमकै, निशिदिन काछबियो चमकै हो , च०
नासि गयौ तिहां धमकै, जिम कायर ढोल नैं ढमकै हो , च० ८
जेहनी जाघ विराजै, कदली थंभा स्यै काजै हो ; च०
कटि देखी जसु लाजै, निज मां उपमान छाजै हो , च० ६
हृदयकमल सुविकाशै, सोहै दोइ पयोहर पासै हो ; च०
एहवा ते प्रतिभासै, भली कनक कलश छवि नासै हो : च० १०
वांह विहुं लटकाली, अति ओपै लुंब झुंबाली हो ; च०
रूड़ी नै रलियाली, हीणी करि चंपक डाली हो ; च० ११
करनो निरखि प्रकाश, आकाश थयो नीरास हो ; च०
कहज्यो मुख थी खास, ए भावातर सुविलास हो ; च० १२
देखी मुख अरविन्द, दिवसै नवि ऊगें चन्द हो ; च०
माचा सुरनर वृन्द, रीझ्या देखी किंनर नागिंद हो ; च० १३
रक्त अधर वलि जाणी, परवाली मन विलखाणी हो ; च०
इण मोसुं अति ताणी, तिण वासो कीधो पाणी हो ; च० १४

दन्त पंकत सोभावै, दाडिम कलीया लोभावै हो ; च०
नाक तणै जसु दावै, जिहां दीपशिखा पणि नावै हो ; च० १५
आंखड़ीया अणीयाली, विचि सोहै कीकी काली हो , च०
हिरण घसैं खुरताली, मारी आँखि लीधी मटकाली हो च० १६
भुंअ सजोड़ै दीपै, वाकड़ी कवाण नै जीपै हो ; च०
मांहो माहि न छीपै, ते भाल विसाल समीपैं हो ; च० १७
वेणि निरखि विशाल, शेषनाग गयौ पाताल हो , च०
एहवौ रूप रसाल, नहीं छै सही इण कलिकाल हो , च० १८
रमणी जेह कुरूप, स्यु कहीयै तास सरूप हो ; च०
विनयचन्द्र चित्त चूप, कहै बारमी ढाल अनूप हो ; च० १६

॥ दूहा ॥

सखीया सोल सिंगार जिण, स्यु कहीयै ते नाम ;
रूप तणै अनुमान सहु, जाणो निज निज ठाम ; १
देखै देह कुमार नै, नाखै सनमुख नयण ,
फिर पूठी चढ मालीयै, बोलै मीठा वयण ; २
हे वृद्धा तु माहरै, पासे वहिली आवि ,
स्युं भुंडी आलस करै, खिण इक वार म लाइ , ३
तिण पासै हिव ते गई, पूछै एहनी बात ,
कुण ऊभौ मुझ आंगणै, एह पुरुष शुभ गात ; ४

ढाल (१३)

नणदल नी

इण मन वेध्यो हे माहरो, सर विण केण प्रपंच हे सजनी
ते कहै माहरै आगलै, सवल करै मन खच हे सजनी ; १इ०
तेज प्रवल एहनौ अछै, निरमल सूर समान हे स०
नयणे अमृत रस वसै, निरुपम योध जोवान हे स० २ इ०
सारद वदन सोहामणो, हृदय कमल सोभंत हे स०
रूपै मदन थकी रूयड़ौ, गौर वरण गुणवंत हे स० ३ इ०
पुरुष घणा दीठा हुस्यै, कोइ न आवै दाय हे स०
इण दीठा मन माहिलौ, दौड़ी मिलवा जाय हे स० ४ इ०
कवण अछै पिण जातिनो, ते कल न पड़ै काय हे स०
पूछयाँ विण हिव तेहनै, मन किम ठाम रहाय हे स० ५ इ०
ऊतर आपै डोकरी, सुंदरि म करि विलाप हे स०
विरह गहेली तुं थई, जाग्यौ मदन नो ताप हे स० ६ इ०
एह मन मान्यौ ताहरै, तिणि कारण सर जाण हे स०
जौ चूकै ए निजर थी, तिण भय तुं तजै प्राण हे स० ७ इ०
मोह तणै वसि जे पडया, थाइ सही सु अंध हे स०
जिण सुँ रस कस तिण विना, जाणै अवर ते धध हे स० ८
स्युं तुझनै नवि साभरं, इण मन्दिर नो हेत हे स०
एहनै मिलवा टलवलै, पिण पहिली हो चित चेत हे स०९इ०
तेह वचन अवहेल नै, तेड़ै कुमर सुजाण हे स०
ऐ ऐ मन नी मोहनी, स्युं न करै काम हे स० १० इ०

परदेशी तुं हो कवन छै, बोलै इम धरि नेह हे स०
कुमर कहै छु मानवो, स्यु इवडो संदेह हे स० ११ इ०
वारू किम आया इहाँ, कुमर पयंपइ एम हे स०
केवल तुझ नें निरखवा, आयो छुं धरि प्रेम स० १२ इ०
लाजन लोपै सुन्दरी, सुकुलीणी सिरदार हे स०
छोड़ि कपट हाजो कहै, ना न कहै सुविचार हे स० १३ इ०
ढाल वखाणी तेरमी, विनयचंद्र तजि रेह हे स०
ते तिम हिज करि जाणज्यो, मत आणो संदेह हे स० १४ इ०

॥ दूहा ॥

भले पधास्या कुमरजी, पावन कीधो गेह,
चक्रवाक रवि नी परै, थास्युं लागौ नेह, १
नाम तुमारूं स्युं अछै, किम छोड्या मा बाप;
किण नगरो किण देशना, वासी छो महाराज, २
कुमर कही सहु वातड़ी, करि कुमरी आधीन,
विहुंना मन लहस्या लियै, नीर विषै जिम मीन, ३
वात कही वृद्धा भणी, पाणिग्रहण संकेत,
तिण दीधउ आदेश इम, जाणो विहुंनो हेत, ४
भावी न मिटै कुंयरी, तुम्हे थया छो एक.
मन मान्यो सोढो मिल्यो, परणो आणि विवेक; ५

ढाल (१४)

सीयाला हे भलइ आवीयौ, एहनी

नवलो नेह लगाड़िवा, कुमरी नै हो ते कुमर सुजाण ;
सहेली हे नयणे मिलें, वलि वयणं हो ते चवै मीठी वाणि ;
स० चोल मजीठ तणी परै, रंग लागोहे माहो माहे प्रमाण १
स० जोड़ी सरखी जाणि नै, ते परणै हे यौवन नै लाह ;
स० विचि माहे थई डोकरी, तिहां कीधो हे गंधर्व वीवाह, २
स० हाथ मुकावण द्यै तिहा, मणि माणिक हे भलीरतन नीकोड़ि;
स० द्यै आसीस सुहामणी, मत लागो हो इण जोड़ि नै खोडि ; ३
स० अंग विलेपन कीजिये, कस्तूरी हे नूतन घनसार ;
स० कुमर कुसुम सायक समौ, रंभा नै हे कुमरी अवतार ; ४
स० खावो विलसौ भोगवौ, जो जग माहे किम जाणौ साच ,
स० स्वाद अछै इण वात मां, इम जपइ हो ते वृद्धा वाच , ५
स० खिण खिण मा पहरइं तिके, जिहाँ भूषण हे नव नवला वेस ;
स० मन गमती मोजां करै, भय नाणै हे केहनो लवलेश ; ६
स० धरम तणी चरचा करै, मन रूड़ै हे वर वींदणी तेह ;
स० जिम जिम चतुरपणो भजै, तसु तिमतिम हे हुवें विकसित देह, ७
स० फूलें फलै रलीयामणा, देखाड़े हे कुमरी आराम ;
स० जल ना कुंड सुहामणा, लेइ नै हे तिहां नाम सुठाम, ८
स० पालोकड़ निज हरणली, खेलायै हे मन धरि ऊछरंग ,
स० घड़ी घड़ी नै अन्तरें, विहुं नो हे थयो चढतो रंग ; ९

स० प्रीतम नो चित रीझीयो, मधुर स्वर हे गाई गुणगीत ;
स० पति भगती ए कुंयरी, पद्मण नी हे जाणै सहुरीति ; १०
स० कुमर सतेजो हिवथयो, कौमुदी करि जाणे जिमचंद;
स० लोक सहु पिण इम कहै, नारी विण हे जाणौ नर मन्द, ११
स० ढाल कही ए चौदमी, तिण माहे हो पहिलौ अधिकार,
स० मनगमता पूरो थयौ, ते तौ थाज्यो हें सुणतां सुखकार ; १२
स० निजमति विस्तरवा भणी, मैं कीधो हे ए प्रथम अभ्यास;
स० विनयचन्द्र कहै दाखिस्युं, आगै पणि हे द्वितोय प्रकाश; १३

इति श्री विनयचन्द्र विरचिते सरस ढाल खचिते सच्चातुर्य्य शौर्य्य धैर्य्य गाम्भीर्य्यादि गुण गणा मत्रे श्री मन्महाराज उत्तम-कुमार चरित्रे पर जनपद संचरण अश्व परीक्षा करण चित्राकूटावनिध मिलन भृगुकच्छपुर गमन यान यात्रा रोहण पलाद निर्दलन भूमिगृह प्रवेशन मदालसा पाणि-पीडनो नाम द्वितीयाग्रजो-ऽधिकारः ॥ १ ॥

द्वितीय प्रकाशः

॥ दूहा ॥

हिव समरूं श्री सिद्धपद, जेहनौ सवल प्रभाव ;
आतम तत्व विचार नै, ग्रहस्युं गुण सद्भाव ; १
बीजै अधिकारै सहु, सांभलिजो वृत्तान्त ;
विकथा वैर विरोधथी, थाज्यो भविक प्रशान्त , २
कुमर कहै कुमरी भणी, हिव तो हुं न रहेस ;
वैरी नो थानक तजी, जास्युं देश विदेश , ३
कूड कपट बहु केलवै, राक्षस नी अपजात ,
तिण कारण हुँ चालस्युं, सो वाते इक वात ; ४
तुं रहिजे इण थानकै, मुझ नै दे हिव सीख ;
तदनंतर कुमरी वदै, हुं छुं तुझ सरीख ; ५
स्यानै राखै छै इहा, स्युं रहिवा नौ काम ,
हु छाया जिम ताहरै, कहिवौ न घटै आम ; ६
कर सेती करजोड़ि नैं, जे नर दाखै छेह ;
तेहनैं भलो न को कहै, हेज विहूणा जेह ; ७

ढाल (१)

मेरी वहिनी कहि काई अचरिज वात, एहनी

जिण दिवस हुं तुझनै मिली, कीधो वीवाह विचार ;
तिण दिन थकी मांडी करी, कीधी मैं इकतार ; १

माहरा वालहा, ताहरी न तजुं लार, तुं हीयड़ा नुं हार;
तुं यौवन सिणगार, तुं भोगी भरतार; मा०
स्त्री तणै वसि जे पड्या, निश दिवस कथन करेह,
कुमरइं वचन मानी लियउ, अविहड़ नेह धरेह; २ मा०
हिव रतन पृथिवी आदि दे, जे च्यार प्रगट प्रधान;
पाचमो गगन तणी परै, सुन्दर नव नव वान, ३ मा०
ते पाच रतन मदालसा, लेई चलै प्रीउ साथि,
स्युं करै रहिनै डोकरी, चलिता पकड्यो हाथ, ४ मा०
जण त्रिण एक मतं थई, आव्या कूपक तीर,
तिहां समुद्रदत्त ना आदमी, ऊभा काढै नीर, ५ मा०
नीसर्या रज्जु तणै वलै, तीने जणा तिण काल;
मन दीयौ कुमरी मा सहु, निरखि निरखि सुकमाल; ६ मा०
कुमर ने पूछै किहा जइ, परणी नवल ए वाल;
अपछर किंवा किन्नरी, अथवा रंभ रसाल; ७ मा०
चिंता करीनें तुम तणी, अम्हे रह्या इण हिज ठाम;
नयणे निहाली तुम भणी, हरख्या आतम राम, ८ मा०
विरतंत सहु कुमरे कह्यौ जिम थयौ धुर थी माडि,
सापुरुष झूठ कहै नहीं, नेह न नाखै छाडि, ९ मा०
प्रवहण तिहा थी पूरिया, करतां अत्यन्त विनोद,
लोकनो कुमरे मन हर्यो, उपजावी आमोद; १० मा०
पाणी वलि पूरौ थयौ, लाघतां कितलौ पंथ;
एहिवुं थानक को नहीं, काढे जोई ग्रन्थ, ११ मा०

पूठिली परि ते गलगलै, पिण नहीं कोई उपाय ;
सगलै जी कहै जल नैं विना, जीव विछूटौ जाय; १२मा०
मन मां कुमर इम चिन्तवै, ए थई तीजी वार ;
पीड़ा करै छै पापीयौ, विरुयौ कोई वेकार ; १३ मा०
अधिकार वीजै ए कही, अति भली पहिली ढाल ;
इम विनयचंद्र कुमार सुँ, वात कही उजमाल , १४ मा०

॥ दूहा ॥

इण अवसर कुमरी कहै, सुणि सोभागी कंत ;
जिम सहुनो थास्यै भलौ, तिम करिस्यै भगवंत,१
एतौ गलिगलि लोक छै, थायै सवल अधीर ,
दे सहु नैं आस्वासना, तनिक काई सधीर ; २
कुमर कहै किम थाय ते, सूका सहुना होठ ;
कहिवौ तो दूरे रह्यौ, मरण तणी छै गोठ ; ३
हिव तुं जउ उपगार करि, मेटि सहुनी पीड़,
स्युं भाखै छै मो भणी, भाजि दुहेली भीड़ ; ४
सी राखइं छै चित्त मा, गुगा केरी गाह ;
तिम करि माहरी सुन्दरी, जन जंपइ वाह वाह , ५

ढाल (२)

कन्त तमाखू परिहरौ एहनी

डावी नै वलि जीमणी, वात वणै नहीं काय मोरा लाल
नीर विना दरियाव मा, लोक घणुं अकुलाय मो० १

मिठड़ा राजिंद मिल रह्यौ, इक मानो मोरी वात मो०
महिर करो मो ऊपरै, जिम न हुवे उतपात मो० २ मि०
रत्न करंडक माहरो, तुम पासै छै जेह मो०
पांच रतन ते मांहि छै, गुण सांभलि गुण गेह मो० ३ मि०
भूदेवाधिष्टित भलो, पहलो रत्न उदार मो०
तेहनो निरखे पारिखो, जिम न हुवै अकरार मो० ४ मि०
थाल कचोला वाटला, वासण चरवी चंग, मो०
मग गोधूमादि दियें, प्रथवी रतन सुरंग; ५ मि०
नीर रतन भजे धरै, जल वरसे ततकाल मो०
तेहनो हिवणां काम छै, कटिसी दुख नो जाल मो० ६ मि०
अगनि रतन थी सिद्धि हुवै, ते सुणि दीनदयालु मो०
नवली नवली रसवती, चावल नें वलि दाल मो० ७ मि०
मुरकी नें लाडू भला, पर्‌ंडा सखर सवाद मो०
खाजा ताजा देखतां, हरइं क्षुधित विखवाद मो० ८ मि०
वात समीरण चालवै, सुरभि सीतल नें मंद मो०
गगन वस्त्र जास कहीयै, तजे तिमिरनो फंद मो० ९ मि०
पांच रतन ए लेइ नें, करि प्रीतम उपगार मो०
हुं करिस तो ताहरो, नवि रहसी व्यवहार मो० १० मि०
उपगारी मिर सेहरो, तुं जग मांहि कहाय मो०
केम कठिन थाये इहां, कहियौ करि महाराय मो० ११ मि०
वचन सुणी नारी तणा, कुमर विचारै एम मो०
ए गुणवंती भामनी, वांछै सहु ने खेम मो० १२ मि०

वाप अधम छै एहनो, पण एहतो धरमीण मो०
आज लगै दीठी नहीं, एहवी नारि प्रवीण मो० १३ मि०
वीजै अधिकारै थई, वीजी ढाल विचित्र मो०
विनयचंद थारयै सही, नीर प्रगट सुपवित्र मो० १४ मि०

॥ दूहा ॥

रत्न करंड उतारि नै, काढी नीर रतन्न,
कूत्रा थंभै वांधिनै, करि नै सवल यतन्न ; १
केसर नें कस्तूरिका, कुंकम अगर कपूर ;
चढतै मन पूजा करै, भाव सहित भरपूर ; २
झर कर नै वरसै, तिहां, जलद अखंडित धार,
जाण्यो उलस्यौ भाद्रवो, ध्वनि गंभीर अपार ; ३
सहु लोके भाजन भस्या, नीर तणौ करि पान ;
शीतल तन करि चालिया, धरि निज रक्षकै धांन,४
खूटि गयौ धन धान्य वलि, मारग माहे नेट,
पृथिवी रतन दियौ तिहा, ना सति नाखी भीट, ५
पांचे रतन तणै वलै, जिहा तिहा पामै जैत ;
वीजा ते सहु वापड़ा, कुमर वडौ विरुदैत ; ६
रावल राणा राजवी, गुण आगलि सहु जेर ;
जाणौ माणस गुण विना, धूलि तणौ जे ढेर, ७

ढाल (३)

हा चन्द्रवदनी हा मृगलोयण हा गोरी गजगेल च० एहनी

सेठ तणै मन माहि उदधि माँ कुमरी वसै निशदीश ;
विरह विलूधो रे विसवावीस ;
नलिनी देखि भमर जिम अटकै, तिम तसु मिलण जगीस; १वि०
मुखडै जंपै रे हा जगदीस, सास खैंची नै रे धूणै सीस ;
हे गौरी तें ए स्युं , कीधौ, मनड़ो लीधो खंच ; वि०
ताहरै सरिखी अंतेउर विच, मुझ न लागै अंच ; वि० २
इम विलपतो जाणै जोडुं, भावै जिम तिम प्रीत , वि०
एहवी नारी नै जो माणुं, तो न चढै काई चीति , वि० ३
इम मन धारी तेह विचारी, वचन कहै सुख कार , वि०
कृपा करी इहाँ आवी वैसौ, उत्तम राजकुमार , वि ४
वात कहौ काई सुख दुखनी, तेवड़ि मुझ नै मीत , वि०
हुं पण कहिसुं माहरा मन नी, ए रूडी छै रीति , वि० ५
ताहरा गुण देखी नै रीझ्यो, रीझ्यौ देखी रूप ; वि०
हिव निश्चय सेवक छु ताहरो, तू मुझ स्वामि अनूप ; वि० ६
मोहनगारो तु मछरालो, सगुणा सिर कोटीर , वि०
तइं तो प्रेम लगायो एहवौ, चोल रंग नो चीर ; वि० ७
पंचाख्यान माहे तुझ कह्या छै, मित्र पणैना तीन , वि०
परम मित्र ते प्रथम वखाणौ, रहियै जसु आधीन , वि० ८
द्वितीय भलाई राखै मुख सुं, अवसर पूछै खेम , वि०
तृतीय मिलै मारग चलता, मित्र तणी विधि एम , वि० ९

रजनी तुं जाजे निज थानक, दिवसे करिस्यां ख्याल; वि०
ताहरै मिलियै माहरा मन नो, टलीयौ सवलौ साल; वि०१०
माहरै तुं छै परम सनेही, प्राण तणौ आधार; वि०
इत्यादिक वचने संतोषै, करि चुवन करि सार; वि० ११
कुमरी तेड़ि कहै निज पति नै, नीच थकी स्यौ नेह; वि०
प्रीतम ए तौ वड़ौ ज अधर्मा, निपट कपट नौ गेह, वि० १२
मोर मधुर स्वर करि नै वोलै, रंग सुरंगौ होइ; वि०
पुँछ सहित विषहर नै खायै, इण दृष्टान्ते जोइ, वि० १३
दाढ गलै सहुनी गुल दीठां, तेहवौ नारि शरीर; वि०
दृश्यमान उपमान नै नइण, जेहवौ वारिधि नीर; वि० १४
केवल मुझ हरिवा नै काजै, माडै तुम सुं रंग; वि०
प्रीत तणा वीजा मुख दीसै, ए कायरो रे कुरग; वि० १५
ए वीजै अधिकारै तीजी, ढाळ कही सुविलास, वि०
विनयचन्द्र जो मुझ नै चाहै, मानि मोरी अरदास; वि० १६

॥ दूहा ॥

माणस कालै सिर तणौ, मिसरी घोलै मुख;
हीयड़ा नौ कपटी हुवै, अवसर आपै दुख; १
तिण ऊपरि साभलि कथा, वाल्हेसर सुविदीत;
राजकुमर इक वन विषै, गयो सहू ले मीत; २
वीजा पिण पाछलि कीया, तिज घोडो छोड़ाणि;
पहुतौ वन माहे तुरत, अंग पराक्रम आणि; ३

कुमर परीक्षा जोइवा, आयो तिहा वन देव ;
रूप कीयो वानर तणो, तज पूरवली टेव ; ४

ढाल (४)

प्रोहितीया थारै गलै जनोई पाट की रे एहनी

वोलइ ते आगलि वानर कूदतो रे,
आवो मन ना मानीता मीत रे,
आगति स्वागति करिस्यु थाहरी रे,
रजनी माहरै घरि करो व्यतीत रे, १वो०
आवा रायण नालेरी तणो रे
सवल वल्यौ छै एहज कूंडरे ;
तेण थानक चालौ वैसियंरे,
पिण मुझ नें जावौ मत छंडिरे ; २ वो०
रूंख तणै थुड़ि घोड़ो बाधि नै रे,
कुमर चढ्यौ वानर नै साथ रे,
साख ऊपरि वैठा जाइनै रे,
नेह धरी तिहां जोड़ै वाथ रे, ३ वो०
जल निरमल ल्यावै नदीया तणौ रे,
पान तणा संपुट करी सार रे ;
सरस रसाफल आणि नै रे,
ते करै कुमर तणी मनुहार रे, ४ वो०
राजकुमर पूछै वानर भणी रे,
काइक अणदीठी कहि बात रे ;

तुं तो हिव माहरौ प्रीतो थयो रे,
तुझ नै दीठां उलसै गात रे ; ५ वो०
तिहां वली सवलो सिंह विकूरवी रे,
ते कहै मै दीठो इक सीह रे ;
माणस नो लेतो वासना रे,
आवै छैं इण वार अबीह रे ; ६ वो०
न करो नींद कुमरजी थे हिवै रे,
इण तरु ऊपरि रहो सचेत रे ;
इतलै सीह तड़ूकी आवियौ रे,
फाटै मुख झलहलता नेत रे ; ७ वो०
कुमर कहै स्युं करिस्या वानरा रे,
सीह तणौ भय मुझ न खमाय रे ,
तिम वलि नींद आवै छै पापिणी रे,
करि करि वहिलौ कोइ उपाय रे , ८ वो०
राजि सूवो मुझ खोला मां तुमें रे,
दोइ प्रहरनी द्युं छै सीम रे ,
कुमर सयन करि वानर अंक मे रे,
रयणि गमावै गलती हीम रे , ६ वो०
वानर नै भाखै इम केसरी रे,
तुं वन नो वासी छै नेट रे ;
आस् करै जो निज देही तणी रे,
तो करि कुमर तणी मुझ भेट रे ; १० वो०

इम कहता हवें ते जागीयौ रे,
वानर सूतो तेहनैं अक रे.
मन लेवा नें कंपट निद्रा करी रे,
खाचें स्वासोश्वास निसंक रे, ११ वो०
तिमहीज मृगपति कुम्मर भणी कहै रे,
खाईस हयवर ताहरो आज रे,
नहिं तर पटकी दे वानरो रे,
तिल भरि मकरि सूनी लाज रे, १२ वो०
कहता वे हाथे करि नाखीयो रे,
वानर ऊडि गयो आकाश रे,
सीह अरूपी लागो मारगे रे,
रहीयो मन मा कुम्मर विमास रे; १३ वो०
भाखी एहवी वात मदालसा रे,
उत्तम चतुर वात सुणी निरबंध रे.
इम अनुमान प्रमाणौ जाणियै रे,
इहा जुड़तो एहीज संबंध रे, १४ वो०
च्यार श्लोक तणै अनुयायिनी रे,
आगलि कहिज्यो वात सुरंग रे,
स्वाभाविक फल आश्रय आणिनें रे,
मैं न कही श्रोता नै संगि रे, १५ वो०
वीजै अधिकारइं पूरी कही रे,
चौथी ढाल सरल श्रीकार रे,

जग मां विनयचन्द्र यश ते लहै रे,
जे न करै परद्रोह लिगार रे ; १६ वो०

॥ दोहा ॥

फेरी नें कुमरी कहै, प्राणपीयारा नाह ;
पछतावै पडस्यौ पछै, दिल ऊलससी दाह ; १
बात कुमर मानै नहीं, साचौ जाणै साह ,
सजन मन माहे रमणि, कूड कपट हुवे काह ; २
सेठ अछै धर्मातमा, वहु राखै छै प्रेम ;
कहि नारी वरसि अगणि, चद्र किरण थी केम ; ३
तेहवइं निजर चुकायवा, सेठ दिखलावै खेल ;
वर गिरवर जल कातिमय, वल जल रतनी रेल ; ४
हुइं हीया नौ जालमी, करतो सवली हेल ;
पग सुंठेलि समुद्र मां, नांख्यो कुमर उथेल , ५

ढाल (५)

चाल :—विडलै भार घणौ छै राजि

कुमर पडंतो इण परि भाखै, मिश्र वचन शुभ भावै ;
गुण ऊपर अवगुण लेईनै, पापी खोड़ि लगावै ; १
पापी स्युं कीधो तैं एह, काज कुमाणस वालौ ;
पड़त समान मच्छ एक मोटो, मुख प्रसारि नै वैठौ ;
ततखिण तेह कुमर नै गिलीयौ, वलि जल ऊंडै पइंठौ; २ पा०

प्रवहमान उछलित वेलि वसि, पार जलधि नो पायो ;
पुण्यादिक अनुभाव कुमर नो, जलचर निमित्त कहायौ ; ३ पा०
तिहां मच्छ नै अभिलाप संचरै, धीवर सायर कूलै ;
तसु दृग बंधन थयौ माछलो, जल प्रायक विण शूलै ; ४ पा०
माया जाल सहु नै सरिखौ, ते सहु कोई जाणै ;
अंतःकरण तजै मीनादिक, द्रव्य जाल अहिनाणै , ५ पा०
खिण इक मा ते पकड़ि विणास्यो, तीखण कठिन कुड़ाड़ै;
यादृस आचरणादिक तादृश, फल तेहनै न गमाड़ै , ६ पा०
तेहना उदर थकी नीकलियौ, उत्तमकुमर सवाई ;
रंच मात्र पिग घाव न लागौ, ए जोवौ अधिकाई ; ७ पा०
सगला धीवर अचरज पाम्या, एस्युं थयौ तमासौ ;
कुमर कहै रे मूढ़ गमारा, इण वाते स्यौ हांसौ ; ८ पा०
सदा आपदा पड़ै पुरुष मा, तम ने साचौ भाखुं ;
घण घाते हुं नवि भेदाणो, तो डर केहनो राखुं ; ९ पा०
धीरवंत कुमर नै निरखी, धीवर पाइ लागा ;
स्वामी पणै थाप्यौ सहु मिलनें, जस ना वाजत्र वागा, १० पा०
रहै कुमार तिहां सुख सेती, फल साधन ए राखै ;
जेह वृत्त जिन पक्षै वाधक, तेह कदापि नविभाखै ; ११ पा०
मिथ्यादृष्टि तणो उत्थापक, व्यक्त गुणे सुविलासी ,
वलि विरक्त मोहादिक भावैं, एक युक्ति अभ्यासी ; १२ पा०
ढाल थई बीजै अधिकारै, तुरत पाचमी पूरी ;
विनयचन्द्र आगलि ते कुमरी, विहुं ढालां मे स्फूरी ; १३ पा०

॥ दूहा ॥

हिव विरतंत सुणौ सहु, आदरवंत अचूक ,
सेठ तिहाँ ठगनी परै, पडीयौ पाडै कूक ; १
हा ! बांधव हा ! वल्लहा, हा ! मुझ जीवन प्राण ,
पाणी में पड़तौ थकौ, इम स्यु थयो अजाण ;
तुझ सरिखा किहांथी मिलै, गौरव गुण नै योग ;
मिटसी किम ताहरै विना, माहरै मननो सोग ; ३

ढाल (६)

योलुनी

कोलाहल लोके कियो जी, कुमरी सुणीयो रे ताम ;
सायर माहे नाखीयौ जी, इण निरलज्ज नो काम; १
न करिस्यौ नीच पुरष सु नेह ,
करसी तेह पछतावसी जी, निश्चै नै निस्संदेह , २ न०
रोवै अबला एकली जी, खिण खिण मां मुंझाय ;
सहजै अगनि उछालतां जी, लागि उठी क्षण मांहि ; ३ न०
झूरइ पूरइ हेज स्यु जी, मांडइ मरण उपाय ;
प्रियु विरहागति झालस्युं जी, देही संतप थाय ; ४ न०
प्रियु नै द्यै ओलंभड़ा जी, कथन न कीधो मुझ ;
तुं मुझ नै मेल्ही गयौ जी, हिवस्युं कहियै तुझ ; ५ न०
हुं तुझ नै कहती सदा जी, विगडन हारी वात ;
ते साप्रति साची थई जी, दुरजण खेली घात ; ६ न०

तैं भद्रक परिणाम थी जी, सुविशेषै मन लाय ;
ऊपरलै आडवरे जी, राचि रह्यो मुरझाय ; ७ न०
प्रीतम म्हारा भमरलां जी, काइक कीजै संक ;
फुल्या दीसै फूटरा जी, आकु आडै अंक ; ८ न०
नाम थयौ जोवतव्यनौ जी, पिण सी पूगी आस ;
तैं कल्पद्रुम जाणि नै जी, सेव्यो निगुण पलास , ९ न०
लाज न आवें एहनें जी, वलि न करे निज सूल ;
मुख कालो करि नै रह्यो जी, जिम केसूनो फूल ; १० न०
यतः—धन्ना होइ सुलखणा, कुसती होइ सलज्ज ,
खारा होइ सीयला, वहु फल फलै अकज्ज ; ११ न०
हा हा हिवहुं किम रहुं जी, ताहरइ विण खिण मात्र ,
विरह व्यथा नी माहरै, हीयडै वूही दात्र ; १२ न०
बीजै अधिकारइं करै जी, ढाल छट्ठी वहुलाज ,
विनयचन्द इम उपदिसै जी, रोयाँ नावै राज ; १३ न०

॥ दूहा ॥

वारंवार मदालसा, कहै निसासाँ नाँखि
किण आधारैं जीवियै, छेदी म्हाँहरी पाँख १
इवड़ा वखत किहा थकी, कायम रहै सोभाग
सिर कदि आवै माहरै, अगूठानी आगि २
पखिण पखी वीछडै, जिम शोकातुर थाय ;
तिम कुमरी नै पिउ विना, खिण इक खिण न सुहाय ३

ढाल (७)

कागलीयो करतार भणी सी परिलिखुं रे, एहनी

करम तणी गति को नवि लखै सकै रे, सहु जाणै छै एम ;
पिण सयणां रे विरहे हीयड़ो रे, फाटै हो रन सर जेम ; १ क०
कुमरी विचारै रहिनै जीवती रे, स्युं करिस्युं निश दीस ,
मरण नथी का देतो पापीया रे, फिट भुंडा जगदीस , २ क०
सांभलि सजनी प्रिउ नें पाछलै रे, करिस्युं झंपापात ;
वारिधि पिण जाणैस्यै प्रीतड़ी रे, जगि रहसी अखियात ; ३ क०
इम सुणि ते आकुल थई रे, इण विध झंपै रोइ ;
कांइ न ऊगौ वीरा चादला रे, एह अधोमुख जोइ , ४ क०
कमल विलासी क्युं विकस्यो नहीं रे, इण तो कर सकोचि ,
हीयड़ा आगलि दे प्रीयुड़ा तणौ रे, मांड्यौ सवलो सोच ; ५ क०
वलि वनवासी पसुवा हिरणला रे, जोवो मन धरि नेह ;
विरह वियोगइं नयणां मीचियां रे, तिण कारण कहुं एह, ६ क०
इम कहती सहुनै रोवरावियारे, वलि भाखै उपदेश ;
होवणहार पदारथ नवि मिटै रे, मकरि मकरि अंदेश ; ७ क०
वालमरण मन मां नवि आणिये रे, इण साहस नहि सिद्धि ;
जैन तणै आगम जे वारियै रे, तिण सरसी अण किद्ध ; ८ क०
जीवंता मिलसी तुझ नाहलौ रे, पंखी नी परि जाण ,
जिम इक हंस सरोवर मा रहै रे, महिला सहित प्रमाण ; ९ क०
एक दिवस सर नै कूलें गयौ रे, जिहा वहुला सेवाल ;
अणजाणंता मांहि अलूझियौ, कंठइ आयौ काल ; १० क०

नेह तणी वाधी तिहा हंसली रे, धसिवा लागी जाम,
सयण कहै तेहनें पासें थकारे, ए तुं मत करि काम ; ११ क०
तेह तणे वखते तिण रत्न में रे, आयो पुरुष ज एक ;
तिण सेवाल सहु दूरे किया रे, हंसण नी रही टेक ; १२ क०
एक घडी मा ते सव तौरे, वलि विहुं थया रे सचेत
तुं निश्चय जाणे तेहनी परें रे, पिण एम धरि तुं हेत, १३ क०
देखो इण पापी कीधी तिका रे, वीजो न करै कोइ ;
कुमरी कहै धिग माहरा रूप नैं रे, एहा अनरथ होइ ; १४ क०
वीजे अधिकारइं ए सातमो रे, ढाल कियौ प्रतिभास ;
विनयचद्र कहै दुखीया माणसां रे, घटिका जाय छमास, १५क०

॥ दूहा ॥

इम विलपंती देखि नै, आवै सेठ निलज्ज,
सुवचन कहै संतोष नें, एहवी करै अरज्ज, १
मित्र हतो ते माहरै, उत्तमकुमर सुजाण ;
हिव तेहनै दीठां विना, छूटै छै मुझ प्राण, २
ते सरिखा तो पामीयैं, पुण्य तणै संयोग,
विरह सह्यो जाइ नहीं, जिम घट व्यापै रोग, ३
ते चिन्तामणि सारिखो, आय चढ्यौ थो हाथ,
पिण जाणौ छो किम रहै, दालिद्री घर आथ, ४
मन मे किण जाण्यो हतो, इण परि थासी अंत,
छट्ठी रात तणा लिखत, ते पणि थायै तंत, ५

ढाल (८)

चाल :—पाटोधर पाटीयइ पधारो, एहनी

सोहागिण रंग रंगीली, तु प्रेम महारस झीली,
साभलि मुझ बात रसीली , १
हठीली तेहनै स्युं झूरै, ते नजर थकी थयौ दूरै,
हिव मुझ नै थापि हजूरै ; २ ह०
तसु जाति पाति नहीं काई, नहीं कोई जेहनें भाई ,
वलि बाप न काई माई ; ३ ह०
हुं तुझ नै आवी मिलीयौ, वीतग दुख सहु टलीयौ,
घर अंगण सुरतरु फलीयो, ४ ह०
माहरै हिव था धणीयाणी, तु हिज मन माहि सुहाणी,
जिम राजा नै पटराणी ; ५ ह०
माहरौ घर ताहरै सारै, वलि जो सिर माहे मारै,
तो पिण बलिहारइं थारै; ६ ह०
मुझ थी सुख भोगवि नारी, कहियौ करि मोहनगारी,
थारी सूरति लागै प्यारी, ७ ह०
करतां जो प्रीत न कीजै, तो गाढो अपजस लीजै,
वचने कोई न पतीजै ; ८ ह०
जे प्रारथीयां निरवासी, जग मा एतलौ ही जरसी,
सगला नर इम हीज कहसी, ९ ह०
वलि जेह करै उपगार, न गणै ते साझ सवार,
सहु बोल नो ए छै सार, १० ह०

ए यौवन ना दिन च्यार, लटकौ छै इण संसार,
कालातर नि भलीवार; ११ ह०

मिलतां सुं नयण मिलावै, प्रस्तावै विरह बुझावै,
तेहनै कुण दावै आवै ; १२ ह०

वहु वात कहीजे केही, मुझ मति तुझ चित्त सुरेही,
तुं किम थाइं निसनेही, १३ ह०

दूहा :—कामातुर न कहै किसुं, न करै स्युं न अज्ञान,
कीजै इण वातइं किसौ, विनयचद्र विज्ञान ; १

कामातुर नी सुणि वाणी, कुमरी मन मांहि लजाणी,
एहवी किम वात कहाणी ; १४

ढाल आठमी एम वणाई, वीजै अधिकार सुणाई,
पिण विनयचंद्र चित नाई ; १५

॥ दूहा ॥

कुमरी मन मां चिंतवै, किम रहसी मुझ लाज ,
ए पापी लागू थयौ, करिवो कोय इलाज ; १
सील रयण नें कारणै, अनवच्छेदक वात ;
जिम तिम करी उपचार ज्यु, ते विघटै व्याघात , २
ठीक सील इक राखवौ, मन करि निज अनुकूल;
झूठ वचन पण भाखिनै, एह नें मुख द्युं धूल ; ३

ढाल (६)

चाल :वीर वखाणी राणी चेलणा जी, एहनी,

वीनती सेठ जी साभलौ जी, सरस पीयूष समान ;
तुझ थकी चित लागी रह्यो जी, लोह चंवक उपमांन ; १
ताहरै माहरै प्रीतड़ी जी, आज थी थई रे प्रमाण ;
पिण दस दिवस मुझ कंत नी जी, कांइक राखीयै क्राण ; २
निजर नौ नेह जिण सुं हुवै जी, वीछड्या दुख न खमाय ;
तेह साप्रति किम वीसरै जी, जेहनो जीवन प्राय ; ३
किण इक नगर में जाय नै जी, साख धर राखि नै राय ;
मनगमणी रमणी हुस्युँ जी, सेवस्युं ताहरा पाय ; ४
जेह काचा हुवै मन तणा जी, वात मानै नहिं साच ;
पिण तुमे सगुण सापुरुष छौ जी, मानज्यो अवचल वाच ; ५
इम सुणी सेठ मनि हरखीयौ जी, परखीयौ स्त्री तणो भाव ;
भोडलो एम जाणै नहीं जी, इहां न कोलावन साव ; ६
हिवै रे मनोरथ-मालिका जी, पूरसी वालिका एह ,
सेठ गयौ निज थानकै जी, चित मा चीतवी तेह ; ७
तिण समै ते वृद्धा कहै जी, राखीयौ तैं भलौ सील ,
जेह थकी भय सहु त्रासवै जी, पामियै शिवपुर लील ; ८
वात अनुकूल लेई करी जी, प्रवहण दीयौ रे वलाइ ;
नव नवैं पंथ ते संचरै जी, द्वीप सनमुख नवि जाय ; ६
पवन रतन नें पूजिनै जी, अधिक धरी सनमान ;
वेलकूलै सहु आविया जी, मोटपल्ली अभिधान ; १०

मेदनीपति तिहां जाणिये जी, व्यसनवारक नरवर्म ;
परम जिनधरम नै आदरै जी, अवर जानै सहु भर्म ; ११
सात खेत्रे वित्त वावरै जी, छावरै मोस नै मर्म ;
शीतल चन्द्रमा सारिखौ जी, निज प्रजा ऊपरि नर्म ; १२
ध्यान जिनवर तणौ मन धरै जी, साचवै जे षट कर्म ;
ईति उपद्रव दहवटै जी, जेम छाया घन घर्म ; १३
ढाल नवमी रमी हीयड़े जी, अवल बीजै अधिकार ;
न्याय राजा करसी भलो जी, विनयचन्द्र इकतार ; १४

॥ दूहा ॥

दरवारै आवै हिवै, सेठ स्त्री ले साथ ;
पेसकसी आगलि करी, प्रणम्यो अवनीनाथ ; १
माह महुत्त घणौ दियौ, राजाये तिणवार ,
सुख साता पूछी कहै, वयण एक सुविचार ; २
साभलि सेठ प्रवृत्ति शुभ, कुण नारी छै एह ,
सर्वाभरण विभूपिता, सुभगाकार सुदेह , ३
सेठ कहै ए मइं सग्रही, जिहां छइ चन्द्रद्वीप ;
पति सायर मा पडि मूओ, ए छै हजी अछीप ; ४
ए माहरी ग्रहणी हुस्यै, अनुमति द्यौ महाराज ;
कहींयें न हुवै अन्यथा, राज समक्षे काज ; ५

ढाल (१०)

चाल :—मेरे नन्दना

तिण वेला कुमरी कहै रे हा, वयण विचारी बोलि, सीख किसी कहुं
भूठो स्युं एहवो झखै रे हां, मूरख निठुर निटोल १ सी०
अगल डगल मुख भाखतो रे हां, किम न हुवै उपसात ; सी०
न्याय करै जौ राजवी रे हां, तौ तोड़ै तुझ दांत ; २ सी०
सेठ कहै इस कां कहै रे हां, बीतग जाणि प्रबन्ध ; सी०
किहां मारग ना बोलड़ा रे हां, स्युं तुझ बोले बंध ; ३ सी०
करि लज्जा वलती कहै रे हां, धर मन अधिक उमंग , सी०
महाराज इण पापीयै रे हां, कीधउ मुझ घर भग ; ४ सी०
पति जलधि मांहे नांखियौ रे हां, धरि मन अधिक उमंग ; सी०
सील रयण खंडण भणी रे हां, मांड्यो घणो रे तरंग ; ५ सी०
पिण हुं सीलवती सती रे हां, केम विटालुं देह ; सी०
जिम तिम करी ए भोलवी रे हां, राख्यो शील अभंग ; ६ सी०
हिव तुझ सरिखा राजवी रे हां, न करै सुधो न्याय ; सी०
तो मन्दिरगिर डिगमिगै रे हां, धरणि पाताले जाय , ७ सी०
पातक लागै दरसणै रे हां, ए पर स्त्री नो चोर ; सी०
जो सीखावण द्यौ नहीं रे हां, स्युं करिस्यै जगि जोर , ८ सी०
सत्य वचन राजा सुणी रे हां, धर्यो वली फिर द्वेप ; सी०
पोत स्थित धन संग्रह्यो रे हां, नवि राख्यो अवशेष ; ६ सी०
जे भावित भवतव्यता रे हां, न चलै तास उपाय ; सी०
जेहवो वावै रूखड़ो रे हा, तेहवा होज फल थाय ; १० सी०

ते धन लेई सेठ नो रे हाँ, भूप भर्यो भंडार ; सी०
तस्कर माँहे ले ठव्यो रे हाँ, जिहाँ छै कारागार ; ११ सी०
कुमरी नइं हिव पुत्रिका रे हाँ, कहि बोलावै राय ; सी०
रहि तुं माहरा गेह माँ रे हाँ, चितनी चिंत गमाय ; १२ सी०
माहरै पुत्री त्रिलोचना रे हा, जीवन प्राण छै तेह ; सी०
तिण पासैं रहि नानड़ी रे हाँ, दिन दिन वधतइ नेह ; १३ सी०
पुत्री बीजी माहरै रे हाँ, तुं हिज थई निरधार , सी०
मिष्ट अन्न पानादिके रे हां, करि कायानी सार ; सी० १४
दीन दुखी नें दान दे रे हां, खवर करावीस तेह ,
... ... सी० १५
सील प्रसादै पामियैं रे हा, विनयचन्द्र नव निधि , सी०
ए वीजा अधिकारनी रे हां, दशमी ढाल प्रसिद्ध ; सी० १६

॥ दूहा ॥

वहिनी थई त्रिलोचना, वदै परस्पर वान ;
सिद्ध थयौ कारज सहु, कुमरी नौ तिण थान ; १
सखिया सुं खेले रमै, करैं गीत नै गान ;
अवर पंच परमेष्टिनौ, धरै निरन्तर ध्यान ; २
पंच रतन परभाव थी, द्यै दुखीयां नै दान ;
सदगुरु वाणी साभलै, करै पवित्र निज कान ; ३

ढाल (११)

वारू नै विराजै हंजा मारू लोवडी, एहनी

सीलवंती नै हो एहिज जोगता, धरम पणौ दृढ थाय ;
वलि विशेषे हो जेह वियोगिणी, धरम करइ मन लाय ; १ सी०
अभिग्रह लीधा हो कुमरी मदालसा, प्रीतम न मिलइ जाम ;
सुइवौ हो धरती निरती चूंप सुं, जपती रहुँ प्रिय नाम , २ सी०
अतिघणुं राता हो चीर न पहिरिवा, न करु कइयै स्नान ;
वलि न विछाउं हो फूलनी सेजड़ी, न लहुँ केह मान ; ३ सी०
आँखडीयैं न आँजुँ काजल प्रियु विना, नवि करवौ सिणगार ;
तिलक न धारू हो मस्तक ऊपरै, करि कंकण परिहार , ४ सी०
विलेपन अंगै हो तजिवो सर्वथा, वलि तजिवा तबोल ,
स्वादिम छोडूँ हो तिम हिज पणि वली, दूध दही ने घोल ; ५
साकर गुल ने हो खाडनी आखड़ी, सरव मिठाई तेम ,
हास्य वचन नो हो कारण नवि धरु, चित्त रहै थिर जेम , ६ सी
साक न खाऊं हो फूल फल नवि भखुं, न जावुं जीमण काज ;
सखीय संघाते हो हुं हिव नवि रमुं, राखुं माहरी लाज ; ७ सी०
गोखड़ै न वैसुं हो केहनै जोइवा, चित्रित सुं नहीं प्यार ;
बात न करिवि हो किण पुरुष सुं, सरस कथा अपहार ; ८ सी०
जौ कथा करवी हो तो वइरागनी, इत्यादिक जे सुंस ;
कुमरीयइं लीधा हो ते सहु साभली, मन मां धरिज्यो हुंस ; ९
कुमरी ग्रह्या छै हो पति नै ऊपरै, पिण तेहनै स्यावास ;
जे मन वालै हो विन कारण वशै, धन धन कहियै तास ; १०सी

ढाल प्ररूपी हो एह इग्यारमी, वीजै हिज अधिकार ;
सार्थकता नी हो जे उपमा वहै, विनयचन्द्र गुणधार ; ११ सी०

॥ दूहा ॥

सहु धीवर इण अवसरै, कुमरोत्तम ले सग ,
मोटपल्ली आव्या मिली, कृत्य हेतु उछरंग ; १
मंडावै राजा तिहां, नरवर्मा उल्लास ;
निज कुमरी नें कारणै, अनुपम एक आवास , २
द्युति निवेसनी जोवतो, बीजो जाण कैलास ;
ते महल निजरै पड्यौ, आवै तेहनै पास ; ३
कारीगर कारिज करै, पणि गृह मांहे हाणि ;
खिण खिण मां चूकै तिके, अंध परंपर जाणि ; ४
वास्तुक शास्त्र तणै वलै, बोलै कुमर सुजाण ;
ए गृह नी चातुर्यता, कुण करसी परमाणि ; ५

ढाल—१२ कंकणानी

तें चित चोस्यो माहरो रसीया, तूं छै पुरुष उदार ।
मोरो मन रीझ रह्यौ ;
हा रे तुझ देखी दीदार, मो० घर मां केही खोड़ छै रे,
एम कहै सूत्रधार ; मो० १
कुमर सीखावै सहु भणी रे, र० मन सुँ तजि अहंकार , मो०
खोड़ हती जे गेह मंझार रे, र० न रही तेह लिगार ; मो० २
अचरिज सहु नै ऊपनो रे, र० वलि चींतइ सूतार , मो०
विश्वकरणनि ओपमा रे, र० एहिज लहै रे कुमार ; मो० ३

भगति युगति करि अति घणुँ रे, र० कुमर भणी हरपेण , मो०
दीठा विण विलखा थया रे, र० पूरव हेज वसेण ; मो० ४
... . , मो०
... . , मो० ५

कोई अचाहड़ो माहरो रे, र० रतन लह्यो छो जेह ; मो०
ते पिण राख सक्या नहीं रे, र० धिग जमवारो एह ; मो० ६

इत्यादिक वचने करी रे, र० निंदे कर्म स्वकीय ; मो०
ते पहुता निज थानकै रे, र० पिण नवि पायौ प्रीय , मो० ७

तिण पासे रहता थकां रे, र० हुन्नर धरि निज हाथ ; मो०
कुमर करायौ राय नो रे, र० गृह कारीगर साथ , मो० ८

संपूरण जईयै थयौ रे, र० कुमरी तणो रे निवास ; मो०
राजा निरखण आवियौरे, मन मां धरी विलास ; मो० ६

निरखी अति उच्छक थयो रे, र० हीयड़लो रहीयो हींस ; मो०
कारीगर नें रंग सुँ रे र० करइं सवल वगसीस ; मो० १०

तिण मांहिज कुमर निहालीया रे र० अभिनव जाण अनंग ; मो०
वैठो ऊँचे आसणै रे, र० ओपै रवि जिम अंग ; मो० ११

जिम वालक मृगराजनो रे र० वैसे गिरवर शृंग ; मो०
ए दृष्टान्ते जाणियै रे र० कुमर भणी चित चंग ; मो० १२

वीजै अधिकारै थई रे र० वारमी ढाल अनूप, मो०
विनयचन्द्र कहै एहवुं रे र० मन्न मां रज्यो भूप ; मो० १३

॥ दूहा ॥

आदर मान देई कै, कुमर भणी ते राय,
इतला माहे देखता, तुं हिज आवै दाय; १
सत्य वचन मुझ आगलै, तूं कुण छै ते भाखि,
एक मनौ मुझ जाणि नै, अंतर मत को राख; २
हूं तो छुं परदेसीयौ, स्वामि वयण अवधार,
जाति न जाणु रायजी, रहुं तुम नगर मझार, ३
पूरी सी जाणुं नहीं, नाम तणी मन सार;
पेट भराई हुं करुं, कारीगर ने लार, ४
निज मंदिर मा नृप गयौ, मन धरि एम विचार;
दीसै छै निश्चय सही, ए कोई राजकुमार; ५

ढाल (१३)

चाल :—हम तो दिहाड़ा मोनै छोड़ि रे जोरावर हाडा, एहनी
आव्यौ मास वसंत रे रसीयां रो राजा।
सुख द्यै साजा, तरु होइ ताजा
जेहनै तूठां रे मौज लहीजीयै रे।
अधिक पणै ओपंत रे र० मदन तणौ रे मित्र कहीजीयै रे; १
तास थयो प्रारम्भ रे र० थंभ जिसारे तरुवर पालवै रे
दुखियां ने दुरलभ रे र० विरही लोका रै हीयड़ै सालवै रे; २
वाजै सीतल वाय रे र० लहरी आवै रे सुरंभ तणी घणी रे,
कहतां न वणै काय रे र० सवली रे शोभा वन मांहे वणी रे; ३

मउरुया जिहां सहकार रे र० ऊपरि बैठी कुहकै कोयली रे ;
महिला मानी हार रे र० एहवी चतुराई मिलतां दोहिली रे ; ४
जिहां किण कमल अपार रे र० चापो मरुवो रे दमणो मालती रे
विउलसिरी सुखकार रे र० जाई जूई रे ढुखडां पालती रे ; ५
भमर करै गुंजार रे र० निशदिन राचै तेहनी वास थी रे ;
रस आस्वादे सार रे र० संग न छोड़ै कहीये पास थी रे ; ६
रूड़ी रीति कहिवाय रे र० रंग थकी परिपूरण छकी रे ;
सहु फली वनराय रे र० एक न फूली निगुणी केतकी रे ; ७
एहवौ जे मधु मास रे र० जाणी नैं राजा रमवा नीसर्यो रे ;
वनमां आवै उल्लास रे र० नयणे देखी रे जसु हीयड़ौ ठर्यो रे , ८
सघन सुशीतल छायाय रे र० सरिता वहै रे वन पासै छती रे ;
तिहां खेलै ते राय रे र० राणी रमइं रंगइं राचती रे ; ६
ते वन अति श्रीकार रे र० तुरत मिटै रे मन नी सोचना रे ;
सखीयैं नें परिवार रे र० रायली रमै रे कुमरी त्रिलोचना रे ; १०
नगरी केरा लोक रे र० फाग गावै रे राग सुहामणै रे ;
मेली सगला थोक रे र० मन नी रे इच्छा पूरै हित घणै रे ; ११
वाजै चंग मृदंग रे र० वाजै रे वीणा भीणा तार नी रे ;
वाजै वली उपंग रे र० वार नह विणा द्वार नी रे ; १२
उडै गुलाल अबीर रे र० नीर छांटै रे माहो मां सहु रे ;
भीजै नवला चीर रे र० प्रेम वणावै नरनारी वहु रे ; १३
तेरमी ढाल प्रधान रे र० एहवै रे बीजै अधिकार रै थई रे ;
विनयचन्द्र विद्वान रे र० एम कहै रे मन मां ऊमही रे ; १४

॥ दूहा ॥

तिहा क्रीड़ा करता थकां, कुमरी नै तिण वार,
डंक दीयौ नागै सबल, करइंज हाहाकार;
तिण वन थी उपाड़ि नै, आणी निज आवास;
नयण विहुं धवला थया, व्यापौ विषनौ पास; २
तेड्या सगला गारुड़ी, मंत्र तंत्र ना जाण,
झाड़ौ द्यै पावै सलिल, पणि निकसै तसु प्राण; ३
राजा फेरावै पड़ह, नगर माहि इण रीति,
मुझ कुमरी साजी करै, द्यु तेहनै सुख प्रीति; ४
राज्य अरध मुझ कन्यका, तिण माहे नहिं झूठ;
इम सांभलि उत्तमकुमर, पटह छब्यौ पर पूठि; ५

ढाल (१४)

आवउ गरबै रमीयै रूड़ा राम सु रे, एहनी

कुमर आवै राय मारगै रे कांइ, साथै नर नारी थाट रे;
चालौ नै रे जइयै कुमरी देखिवा रे ॥ आ० ॥
ए परदेशी जाण छै रे कांइ, जेहनो रूडो रूडो घाट रे; १ चा०
सगले लोके कुमर नै रे काइ, आण्यौ भूपति पास रे;
कुमर कहै नृप आगलै रे कांइ, इण परि वचन विलास रे २ चा०
राज्य अरधउ रे ताहरी कन्यका रे काइ, मुझ देज्यो महाराय रे;
हुं कुमरी जीवाड़िस्युं रे कांइ, करस्युं दाय उपाय रे; ३ चा०

पाणी मंत्री नइ छांटियउ रे कांइ, कुमरी थईय समाधि रे ;
उठै रे आलस मोड़ि नै रे कांइ, दूर गई सहु व्याधि रे ; ३ चा०

कुमर प्रति नृप ओलख्यौ रे, कांइ ए तो तेहिज कुमार रे ,
जनम लगै पुत्री भणी रे, कीधो इण उपगार रे ; ५ चा०

बोल कह्यो ते पालिवारे, कांइ भूपति करै विचार रे ,
पुत्री माहरी त्रिलोचना रे, कांइ द्यु एहनै निरधार रे ; ६ चा०

राज्य प्रमुख सहु सूंपिनै रे, काइ हिव रहीयै निश्चित रे ;
इम जाणी तेड़ावी नै रे, कांइ जोसीयड़ो गुणवंत रे ; ७ चा०

जोसी नै राजा कहै रे, कांइ परणै कुमरी मुझ रे ;
दिवस लगन कहि रूवड़ौ रे, काइ हुं संतोपिस तुझ रे ; ८ चा०

जोवइं जोसी टीपणो रे, काइ दिवस लगन करि ठीक रे,
जंपै राजा आगलै रे, काइ अमुक दिवस सुप्रतीक रे , ६ चा०

अति उच्छव राजा करै रे, काइ मंगल हेतु तिवार रे ;
परणावै निज कन्यका रे, कांइ मन मा हरख अपार रे ; १०चा०

कर मुंकावण अवसरै रे, काइ अरधो दीधो राज रे ;
वलि गृह निज पुत्री तणौ रे, काइ दीधो सुइवा काज रे; ११चा०

तिण गृह मा सुख भोगवै रे, कांइ निशदिन स्त्री-भरतार रे ,
श्री परमेसर ध्यान थी रे, कांइ कुमर लह्यौ जयकार रे; १२ चा०

ढाल चवदमी ए कही रे, काइ पूरण थयौ अधिकार रे ;
सत्गुरु नैं परभाव सुं रे, काइ एह लह्यो पणि पार रे ; १३ चा०

अनुभव नै अधिकार थी रे, कांइ सत्ता ने अनुकूल रे,
विनयचंद्र कहै मैं कीयो रे, कांइ एह संबंध समूल रे; १४ चा०

इतिश्री विनयचंद्र विरचिते सरस ढाल खचिते सच्चातुर्य्य शौर्य्य गांभीर्य्यादि गुणगणामत्रे। श्री मत्महाराजकुमार उत्तम चरित्रे सुर-परीक्षित सत्व-प्रकटित प्रदत्त। रत्न प्रभाव प्रोद्भूत भूरिजल प्रकटन तत्पानतः सकल लोक तृप्ति वितरण। दुर्दैवात्समुद्रान्तर्बूडन मत्स्य समुद्रान्तः पतन तग्दिलण मोटपल्ली वेलाकूल प्रापण। धीवर ग्रहण मच्छ विदारणतस्ततो निस्सरण। तत्र स्व विद्या यशः ख्याति विस्तरण दुष्टाहिदष्ट कष्ट त्रसित राजपुत्री सज्जीकरणो जीवत्त धरणो रमणतयाङ्गीकरण तत्पाणिग्रहणादि विविध चरित्र सूत्रणो नाम तृतीया प्रजोऽधिकारः ॥ २ ॥

तृतीय अधिकार

॥ दूहा ॥

वर्तमान तीरथ धणी, महावीर भगवंत,
नमस्कार तेहनै करूं, उच्छव घरे अनंत ; १
हिवइं तीजै अधिकार में, जेह थई छै बात ;
नरनारी मन लाय नै, साभलिज्यो सुविख्यात,२
जंपै एम मदालसा, दासी नै ऊमाहि ;
प्रिउड़ो नाव्यौ तो सही, वूडौ सायर मांहि , ३
दिन जास्यै हिव दोहिला, किम रहिसै मुझ प्राण;
संतावै मुझ नै सदा, घट मां पांचे बाण , ४
दीपक विण मंदिर किसौ, यौवन विण सिणगार,
नेह विना सी प्रीति जिम, तिम कंता विण नार , ५
नीरस आहारै किया, तप आंबिल मन लाय;
साहमी नें संतोषिया, पड़िलाभ्या मुनिराय , ६
नवा कराव्या देहरा, श्री जिनवर ना चंग ;
प्रतिमा सोवन रत्न नी, सकल भरावी अंग , ७
वलि त्रिकाल पूजा करी, भावन भावी शुद्ध ;
उन्नति कीधी अति घणी, धरम कीयौ अविरुद्ध,८
इणपरि करतां नवि मिल्यौ, जो माहरौ भरतार;
तौ पंच रत्न दे वहिन नै, लेस्युं संयम भार ; ९

ढाल (१)

दल वादल वूठा हो नदीया नीर चल्या , एहनी

इम वचनइं हो जंपइ कामनी,
माहरी ए वाणी हो सांभलि स्वामिनी ; १
परदेशी कोई हो वस्यो त्रिलोचना सुणा,
जेहना जस बोलइ हो, नर सहु इक मना; २
गुण मणिनो दरीयो हो भरियो हेजि सु,
जिण हेले जीतो हो सूरिज तेज सुं ; ३
सही सेती ताहरउ हो प्रीतम हीज हुसी,
दिल साख द्यै मांहरो हो तुझ मन उल्हसी, ४
जो अनुमति आपइं हो तो तेहनी खबर करूं,
मुख मटको देखी हो हीयड़ै हरख धरूँ ; ५
तव कुमरी भाखै हो था ऊतावली,
आलस छोड़ी नै हो जा मन नी रली , ६
तेहनै घरि आइ हो दासी नेह सुँ,
पणि तसु नवि देखै हो मिलवो जेह सुं , ७
कहै कुमरी नै हो ताहरौ भाग्य फल्यो,
मन नो मानीतो हो वालम आयो मिल्यो ; ८
मुझ नैं देखाड़ो हो प्रीतमनुं तुम तणो,
देखण मन मांहरै हो अलजउ अति घणो, ९
ते कुमरि पयंपइं हो साभलि सहल में,
मुझ प्राण पियारो हो सूतो महल मे ; १०

ते जोवा चाली हो ऊमही जिसै,
पल्लंक परि सूतो हो कुमर दीठो तिसै ; ११
देखी नै तन नउ हो कीधो पारिखो,
रूपइं पणि दिसै हो उत्तम सारिखौ ; १२
फिर पाछी आवी हो कुमरी नै कहै,
तुझ पति नै सारिखो ते तो गहगहै ; १३
इम सुणि नै कुमरी हो गाढौ हरख धर्यो,
खिण एक तसु रंगइं हो मिलिवा मन कर्यो; १४
वलि चित्त मां विचारै हो ए मैं स्युं कियो,
पर पुरुष न जाण्यो हो तेमां मन दीयो, १५
माहरो मन पापी हो कहुँ अवगुण किसा,
मन पाछो वाल्यो हो एम कहै मदालसा; १६
चतुराई तेहनी हो जे वहिलो भेद लहै,
इम पहिलै ढालइं हो विनयचंद्र कवि कहै; १७

॥ दूहा ॥

कुमर कहै निज रमणि नै, कवन हती ते नारि ;
आवी नै पाछी वली, ए स्युं थयो प्रकार, १
मुझ नै खबर पड़ी नहीं, नहिं तो एणी वार ;
सगली वाता पूछि नै, सही करत निरधार ; २
अवसर चूका माणसां, अति पछतावौ होइ,
अवसर चूकै सूदरि, जगमां जलधर जोइ ; ३

ढाल (२)

नागा किसनपुरी एहनी

प्राणसनेही सुणि मोरी वात, कौतुककारी छै अवदात ;
मीठी वात खरी, इण परि भाखै नृप कुँयरी ;
हे सुंदरि मुझ नै संभलाइ, सुणता हीयड़ौ उलसित थाय १ मी०
मुझ थी अधिकी रूप विवेक, परदेसण आई छइ एक,
वइंन करी मानी मै तास, निश दिन जीव रहै तिण पास, २ मी०
नाह वियोगै दुखणी तेह, भूरि कृस कीधो छै देह ,
रहै एकान्ते लेइ आवास, धरम ध्यान मन माहे जास , ३ मी०
दीन हीननइं आपै दांन, द्रव्य घणौ देई सनमान , मी०
करुणा आणी करै उपगार, एहवी काइ नहीं संसार , मी० ४
एतलौ धन नौ दीसै नहीं, क्याई थी काढइ छै सही, मी०
तेहनै पासे छै कांइ सिद्धि, खरचतां खूटै नइं रिद्धि , मी० ५
एह अपूरव छै विरतत, मुझ भगनी सो सांभलि कंत, मी०
तास सखी ए वृद्धा नारि, तुझ देखी गई एह विचारि ; मी० ६
सांभलि एहवा वचन कुमार, रागातुर हूवौ तिणवार, मी०
एहवी छै गुणवंती जेह, मदालसा हुसइं नहीं तेह ; मी० ७
अथवा नारी सुँदराकार, एहवी घणी छै घर घर बार, मी०
परस्त्री ऊपरि धरीयौ पाप, धिग मुझ नै निंदइ इम आप ; मी०८
किहां थी आय मिलै मुझ नारि, समुद्रदत्त ले गयो निरधार, मी०
खोटो मोह करै स्युं थाय, तन मन थी सगलो सुख जाय; मी०९

तिण अवसरि मन धरि उछरंग, श्री उत्तमाभिध सगुणनरिंद,मी०
मध्यानै जिन पूजा हेत, कुसुमचंदन लेइ सुगति संकेत , मी० १०
निज मंदिर पासै प्रासाद, आयौ मन धरतौ आल्हाद ; मी०
जातो किण ही न दीठो तेह, फिर पाछौ नायौ वलि गेह; मी०११
त्रिलोचना कुमरी तिणवार, दुख संपूरित हृदय मझार, मी०
दुखणी दुख भरि करै विलाप, प्रीय विरहागनि तनसताप,१२मी०
निज पति तणी करेवा सार, दासी नै मेली तिण वार, मी०
पिण नवि पायो परम दयाल, नयणे नीर झरै तिण वार; मी०१३
लज्जा छोडी वारवार, ऊंचइ स्वर ते करइं पुकार ; मी०
मन में धारै अधिको सोग, हींयड़ो फाटइ नाह वियोग , मी०१४
हिव तिणहीज पुरमांह प्रधान, सकल सुजस गुण तणौ निधान मी०
महेसदत्त नामै धनवंत, सहु वणिक मांहे सौभंत , मी० १५
छप्पन कोडि निधान मझार, छप्पन कोड़ि कलांतर धार ; मी०
छपन कोड़ि नौ करै व्यापार, इतली सोवन कोड़ि विचार ; मी०१६
एहवी जेहना घरमा रिद्धि, पुण्य-संयोगे दिन दिन वृद्धि ; मी०
सूरिजनी परि झाकझमाल, विनयचंद्र कहै बीजी ढाल ; मी०१७

॥ दूहा ॥

वाहण जेहनै पांचसै, वलीय पांच सइं हाट ;
घर गोकुल पिण पांच सै, तितला सकट सुघाट ; १
गज तुरंग नर पालखी, पांच सया प्रत्येक ;
कोठा जेहनै पांच सै, वली वणिज सुविवेक , २

वाणोत्तर वाजित्र पणि, सुभट थाट सश्रीक,
पंच पंचसय जाणियै ए सगला तहकीक ; ३
पांच लाख सेवक तुरी, एहवी लखमी जास ;
यौवन वय वोली सहु, पिण संतति नहिं तास ; ४

ढाल (३)

चेत लख लागा राजाजी रै मालियै जी

इणपरि चिंता करतां तेहनै दिन केतलाइक बीता ताम हो,
माहरी सुणिज्यो चित देइ चंगी वातड़ी जी,
वातड़ीमा चोज अधिक इण ठाम हो;मां०
वाटडी जोवंता थई कन्यका जी,
लावण्यगुण रूप तणौजाणै धाम हो,मां०१
सहस्रकला तसु नाम सुहामणो जी,
चौसट्ठि कलानी ते छै जाण हो ; मा०
अनुक्रमि भर यौवन थई सुन्दरी जी,
युवती नो जे छड़ावै माण हो ; मा० २
चिंतातुर थयौ तात निहालि नै जी,
केहनै ए दीजै कन्या सार हो ; मा०
ए सरिखौ रूपै गुण विद्या आगलौ जी,
पुण्यै लहीये एहवो वर सार हो, मा० ३
घर घर मा वर जोवै सेठ सुता भणी जी,
फिर फिर नै पुर पुर जोवै सुविशेष हो मा०
पणि कन्या सरिखो वर न मिल्यौ जोवतां जी,
आरति मन माहे थई अलेख हो मा० ४

को एक निमित्त नै पूछ्यौ तेड़िनै जी,
विनय करी देइ वहुमान हो ; मां०
माहरी पुत्री नें कुण वर परणस्यै जी,
तेह कहै सांभलि वचन प्रधान हो; मां० ५
राजा नइं दरवार मांहे जे वइसि नै जी,
त्रिलोचना भर्त्ता री कहिस्यै सुद्धि हो,मां०
कहस्यै वृतान्त मदालसा कुमरी नौ जी,
मूल थी मांडी नै निर्मल वुद्धि हो ; मा० ६
ताहरी पुत्री नो ते वर जाणजै जी,
महीना नै अंतरि मिलस्यै तेह हो ; मा०
समस्त राजा नो थास्यै राजवी जी,
तेहनौ प्रताप अखंड अछेह हो ; मो० ७
सगली सामग्री हिव वीवाहनी जी,
हलुवै हलुवै करै सेठ सुजाण हो ; मां०
इहाँ मन संदेह न आणिजे जी
साची मानै मांहरी तु वाणि हो ; मा० ८
लगन दीधो निरदोष निहालिनै जी,
वचन अंगीकरि महेशदत्त हो ; मां०
हरषित मन में थई अति घणु जी,
पुत्री नै परणायवा उछक चित्त हो; मा० ६
मंडप कराया मोटा सोहता जी,
सज्जन तेड़ावै कागल मेल्हि हो ; मां०

तोरण वंधाव्या मंदिर वारणै जी,
चित्रत कीधो घर मोहणवेलि हो; मां०१०
धवल गीत गावै नारि सुहामणा जी,
श्रवणे सांभलतां सहु ने सुहाय हो; मां०
कलश वस मेल्ही काजै वेदिका जी,
मेलि मेल्ह्या सकल उपाय हो ; मां० ११
वर भणी ताजा वला मेला नवा जी,
अम्बर उज्जवल सुन्दर पटकूल हो ; मां०
सोवन आभरण करावै नव नवा जी,
रतन जड़ित भारी मूल हो , मां० १२
जातीला गजराज तुरी जिण संग्रह्या जी,
यानादिक हाथ मेलावे देय हो ; मां०
सरल मति धारी तीजी ढाल मां जी,
इण परि विनयचंद्र कहेय हो ; मा १३

॥ दूहा ॥

वार्त्ता कौतुक कारणो, पुरमा थई तिण वार ;
वर विण सेठ वीवाह नो, रच्यो सवल विस्तार ; १
एह वचन राजा सुणी, चिंतै इम निज चित्त ;
धन माहेशदत्त गृहपति, जेहनी अविरल मत्ति ; २
देस्यै धन जामात नें, कन्या परणावेह ;
व्रत लेस्यै वयरागियौ, मन धरि परम सनेह , ३

सुद्ध जमाई नी लहुं, तो तेहनै देई राज,
हुं पिण संजम आदरुं, सारूं उत्तम काज ; ४
महेशदत्त सु राजवी, एहवौ करीय विचार ;
पड़ह नगर मां फेरव्यो, उद्घोषणा अपार ; ५

ढाल (४)

मुगफली सी वांरी आगुली, एहनी

राजा पुत्री त्रिलोचना, विरहाकुल थई नाह वियोग ;
एहवौ राय वचन कहावै छै सही,
तेहनो पति क्याही गयौ तिण कुमरी राखै बहु सोग ; १
मदालसा परदेसणी, मैं पुत्री करि मानी तेह । ए०
सहु सम्बन्ध तेहनो कहै, मांडी नै धुर थी नर जेह ।२ । ए०
राज्य समापुं ते भणी, वलि आपइं महेशदत्त सेठ । ए०
सहस्रकला निज दीकरी, सुरकन्या पिण जेहनै हेठ । ३ ए०
एक मास नै अतरै, सुक पडहो छबीयौ तिणवार । ए०
लोक सहु सुणज्यो तुमे, मुझ वाणी प्राणी हितकार । ४ ए०
मुझ ने ले जावो हिवै, महाराज केरी सभा मझार । ए०
क्षितिपति ना जामात नी, हुं कहिस्यु सगलो ही विरतंत । ५ए०
मदालसा नो पणि तिहां, संभलावीस नृप नें विरतन्त । ए०
राज्य लहीस राजा तणौ, कन्या परणेसुं गुणवन्त । ६ ए०
कौतुक धरि ते आदमी, लेइ आव्या नृप परपद माहि । ए०
राय बोलाव्यौ सूअटौ, नर भाषा बोल्यो ते साहि । ७ ए०

परीयछ वंधावौ इहां, त्रिलोचना तुझ पुत्री जेह। ए०
मदालसा पणि तेड़ीयै, जिम भाखुं आख्यानक एह। ८ ए०
राय वचन तेहनौ सुणी, हरषित थई कीधो तिम हीज ए०
ज्ञान विना तिरजंच तुं, किम जाणसि वीतक नो बीज। ६ ए०
तीन काल नी वारता, जो थारै मन अचरिज होइ, ए०
सावधान थई साभलो, विच वातां म करज्यो कोइ। ए० १०
रामति जोवा सहु मिल्या, पुर वासी जन मन धरि प्रेम। ए०
मदालसा नी वातड़ी, कहै सूवटो जिम कही छै तेम। ए० ११
वाराणसी नगरी भली, राजा तिहां मकरध्वज नाम। ए०
तेहनो पुत्र पराक्रमी, उत्तमाभिध जाणे रूपै काम। ए० १३
अचरिज नाना देश ना, जोएवा नीकलिया तेह। ए०
भाग्य परीक्षा कारणै, साहस धरि निज देह अछेह। ए० १४
कितले के दिवसे गयौ, भरुअछपुर नृप सुत कुशलेण। ए०
चौथी ढाल सुहामणी, इम भाखी कवि विनयचन्द्रेण। ए० १५

॥ दूहा ॥

मुग्धद्वीप देखण भणी, पोतै चढ्यो कुमार;
आव्यो कितलेके दिने, भर दरीयाव मझार; १
जलकान्तिक पर्वत तिहां, ऊंचो घणौ महान,
तिण मांहे कूपक अछै, पाणी सुद्धा समान; २
भ्रमरकेत राक्षसपति, तिणै करायो तेह;
जल अरथैं साहसधरी, गयौ तिहा गुण गेह, ३

ढाल (५)

धण रा मारूजी रे लो, एहनी

पर उपगारी कोइ न दीठो एहवो मीठो,
गुणधारी सुविचारी रे लो ; म्हारा राजेसरजी रेलो
चारी मा जल हेते पहुतौ मन गह गहतो,
दीठी तिहां किण नारी रे लो , १
मदालसा नामै सुकमाली रूप रसाली,
तिहां परणी ते वाली रे लो ; मां
जाली मां थई बाहरि आया नारि सुहाया,
वे गुण मणि नी आली रे लो ; २ मां
समुद्रदत्त नै वाहण चढीया त्या थी खडीयां,
पंच रतन परभावै रे लो ; मां०
जल इंधण अन्नादिक जोई लोक सकोई,
मन मां शाता पावै रे लो ; ३ मां०
अवसर देखी पापी सेठै भुंडो द्रेठै,
रामा धन नो रसीयो रे लो ; मां०
दरीया मांहे नांखी दीधो माठो कीधो,
पड़तो मच्छे ग्रसीयो रे लो ; मां० ४
मगर गलंतो कांठौ आयौ धीवर पायौ,
काढ्यौ पेट विदारी रे लो ; मां०
तुझ पुत्रि घर देखि नीपजतो आयो चलतो,
परणायो तिणवारी रे लो ; मां ५

सुख भोगवतां देव तणी परि किणीक अवसर,
श्री जिनपूजा करिवा रे लो ; मां०
श्री जिनवर नै मंदिर आवै भावन भावै,
भवसायर लहु तरवा रे लो ; मा० ६
फूल भरी चंगेरी नीकी वंस नली की,
मदनैं मुद्रित देखी रे लो ; मां०
उघाड़ी ते हाथे साही लघु अहि माहि,
कर करड्यौ सुविशेषी रे लो ; मां० ७
तन थी नष्ट सकल वल पडीयौ भुइं तलि अडीयौ
इतली मैं कही वातां रे लो ; मां०
सत्य प्रत्यज्ञा जो छै ताहरी आस्या माहरी,
पूरो तुझ गातां रे लो , मां० ८
पोतानो निरवाहै कहियौ तिण जस लहीयौ,
उत्तम ते जग माहे रे लो ; मां०
विवहारी तुझ पुत्री ल्यावौ मुझ परणावौ,
उच्छव सु कर साहै रे लो ; मा ० ६
ऊतावलि करि मुझ नै दीजै ढील न कीजै,
जग जस भारी लीजइ रे लो ; मा०
तिरजंच जो हुं थाहु राजा करू दिवाजा,
रमणी साथि रमीजै रे लो ; मां० १०
एहवौ कहि मुखि मौन सरागै वैठो आगै,
इतलै राय पयंपै रे लो , मां०

पोपट अंतर हीय म राखो आगै भाखौ,
थास्यइं मन कंपइं रे लो ; मा० ११
पंडित ते निज वोल्यो पालै कुल उजवालै,
तुझ सरिखा गुणवंता रे लो ; मां०
जो नवि आपै तो हुं जास्यु फेर न आस्युं,
मांनु पहुँची कंता रे लो ; मां० १२
स्वादवंत फलनो आहारी रहुँ वनचारी,
इण परि काल गमासुं रे लो ; मां०
ढाल पांचमी ए थई पूरी वात अधूरी,
विनयचन्द्र इम भास्युं रे लो; मां० १३

॥ दूहा ॥

मैं जाण्यो नर हुवै अधम, माया कपट निधान ;
स्वार्थ करी जायै नटी, तुम सरिखा राजान ; १
ऊडेवा नै सज्ज थयौ, नृप झाल्यौ ततकाळ ;
देईसि राज सु धीर धरि, वर पंडित वाचाल ; २
उत्तमकुमर किहाँ अछै, आगलि कहि वृतांत ,
जीवै छै किवा मूओ, भांजि भाजि मन भ्रांत , ३
वली वचन कहै सूवटो, जो तिल मां तेल न होय ;
तो वेळू मे किहाँ थकी, राय विचारी जोय ; ४
एतली वात कह्यां थकां, जौ तुं नापै राज ;
आगलि कह्या हुवै किसुं, कठ शोप स्यौ काज ; ५

राज देईसि जो मुझ भणी, तो आगै कहिस्युं वात;
कहि कहि देइस तुझ भणी, कन्या राज संघात ; ६

ढाल (६)

हस्ती तो चढिज्यो हाडा राव कुमकुमा माहरा वालमा, ए देशी

तो वारू राजा रे अहि डसीयां पछी माहरा साहिवा,
अनंगसेना इण नाम रे, वेश्या विगताली।
चंचल चरिताली, योवन मतवाली, गयवर गति गाली
तिण वार निहाली, माहरो कहियो मानो,
कहीयो मानो रे राज तुमने हुं कहिसुं वंछित फल लहिसुं,
धुरा राज्य नी वहिस्युँ
निज आपद दहिस्युं सुख सेती रहिस्युं गुण अवगुण सहिसुं। मां।
किण एक कारण रे दैव संयोग थी। मां।
ते आवी तिण ठांइ रे मणि नीर झकोली,
तसु काया खोली ॥ १ ॥ मां० ॥
ते तिण ऊपरि रे रीझ्यो अति घणो। मां।
वदनकमल निरखंत रे।
थयो परम सरागी, मिलिवा मति जागी। मा०।
ऊठाड़ी नै आपणै मन्दिर लीयौ। मां०।
चउथी भूमि ठवन्त रे, सुख माहि सदाई,
रहै कुमर सवाई ॥ २ ॥ मां० ॥

हुंतो थयौ मूरख रे दाक्षिणवंत थी । मां० ।
बात कही सहु तुझरे । राज चाहुं पाछै।
खोटी मति आछै । मां० ।
थाज्यो तो तुझनै रे स्वस्ति महीपति । मां० ।
अपजस आपो मुझ रे जे मंगलपाठी,
मुझ रसना घाठी । मां० ॥ ३ ॥
राजा भाषै रे अद्धे वैद्यक कियै । मा० । जावा न लहै वैद्य रे।
वाचाल तजी नै, मन सुथिर भजी नै । मा० ।
अनंगसेना नो घर जोऊं जेतलै । मा० ।
तूं मत काढे कैद रे, कन्या राज आपुं,
तुझ नै थिर थापुं ॥ ४ ॥ मा० ॥
क्षण इक इहां रे हुं बइठो अछुं । मां० । जोवो वेश्या गेह रे।
नृप आणा लहता, सेवक तिहां पुहता । मां० ।
सहु गृह जोयो रे नवि पामियौ । मा० ।
पूछै सगला तेह रे, किहां राय जमाई, द्यो साच बताई ॥ ५ ॥
अधोदृष्टि जोई रही पण्यांगना । मां० । ऊतर नापै लिगार रे।
विलखित मुख छाया, संकोचित काया । मां० ।
आवी सहु भाखी रे वात वेश्या तणी । मा० ।
जे छइं गहन विचार रे शुकनै पूछीजै, निश्चय ए कीजै ॥६॥मां०॥
सूं विप्रतारै अम्हनै सूवटा । मां० ।
जेहवो छै तेहवो दाखि रे।

कहि ज्ञान विचारी, तू छै उपगारी । मा० ।
सुणि महाराज रे पोपट वीनवै । मा० ।
वेश्या धर्यो अभिलाष रे ए वर मुझ थास्यै,
भोग अर्थइं आसै ॥ मां० ॥ ७ ॥
इहां बीजो जासी रे किमही न आवसी । मां० ।
एहवो चित्त विचार रे ।
ते मुझ सुक कीधो निद्रावसि वीधो । मा० ।
सोवन केरै पिंजर मां ठव्यो । मां० ।
रंज्युं गुण गीत गाय रे श्लोक कथा कहीनैं,
अवसाण लहीनैं ॥ ८ ॥ मां० ॥
चरणा थी छोडी रे डोरो नर करी । मां० ।
वाध्यो मोहनइ चाल रे ।
तिण सुं सुख माणुं, उदयास्त न जाणुं । मां०
दवरक बांधी रे वलि मुझ शुक करै । मा० ।
इम गयो कितलो काल रे,
मन माहि विचारुं, तिरजंच भव धारु ॥ ९ ॥ मां० ॥
परउपगारी रे सहुनो हुं हतो । मां० । निष्टाचार न चोर रे ।
केहनै दुख नवि दीधो काई विरुद्ध न कीधो । मा० ।
हां हा जाण्यो रे मैं इणहीज भवै । मा० ।
कीधो पातक घोर रे,
न रह्यो हुं सीधो मै सुजस न लीधो ॥ १० ॥ मा ।
राक्षसकन्या रे कुमरी मदालसा । मां० । परणावी न तसु बाप रे ।

परणी मैं छानै लज्जा करि कानै । मां० ।
राक्षस केरी पुत्री रे मइं हरी ।
सायरमा तिण पाप रे, सागरदत्त नांख्यौ,
निजकृत कर्म चाख्यौ ॥ ११ ॥ मा० ॥
धिग धिग मुझनै रे पांच मह्या मणी । मां० ।
राक्षसना अणदीधा रे ।
पापी मुझ सरिखो, नहीं कोई रे परखो । मा० ।
एतो छट्ठी रे ढाल सुहामणी । मा० ।
विनयचंद्रनी कीधरे, श्रवण सांभलजो,
पातक थी टलज्यो ॥ १२ ॥ मां० ॥

॥ दूहा ॥

तिम त्रिलोचना नै घरे, आवी वृद्धा नारि ;
मैं पूछ्यौ ए कुण अछै, मुझ प्रिया तिण वार ; १
सखी वतावी तेहनै, मुझ नारी मैं जाणि,
राग बुद्धि क्षण इक करी, हुं थयो मूढ अजाण, ; २
मोटो पातक मन तणो, मुझनै लागो तेह ;
सर्प्प डस्यो तिण वार थी, श्री जिनवर नै गेह ; ३

ढाल (७)

सासू काठा गेहूं पीसाय आपण जास्युं प्रेम सुं सोनारि भणै,
नर फीटी हो थयौ तिरयंच पातकि
वृक्ष कुसुम सही ; सुक एम भणै

वली कह्यु छै हो आगम मांहि
नरक वेदन फल संग्रही ; सु० १
महा वलधारी हो रावण जेह,
विश्व जिणै निज वसि कीयौ ; सु०
परस्त्रीनी हो वांछा कीध,
कुलखय नारक पामीयौ ; सु० २
जोई द्रुपद सुतानो हो रूप,
कीचक मन लाई रह्यौ ; सु०
भीम चांप्यौ हो कुंभी हेठि,
अपजस दुर्गति दुख लह्यौ ; सु० ३
इम समरै हो निज कृत पाप,
आतम निंदइ आपणौ ; सु०
हुवइ थोड़ो हो पिण अपराध,
उत्तम मानै करि घणौ ; सु० ४
हिवइ अनंगसेना हो राग,
मास रह्यौ घरि तेहनै ; सु०
आज गई नइ हो किण इक काज,
भावी न सूझै केहनै , सु० ५
पुण्ययोगै हो मुझ महाराय,
मुँक्यौ उघाड़ौ पींजरौ ; सु०
नीसरीयौ हो अवसर जाणि,
धीरज धरि मन आकरौ ; सु० ६

त्रिकनै हो चोक चचर सर्व्वत्र,
सांभलि पटहनी घोषणा ; सु०
मइं प्रगट निवास्यो हो तेह,
वचन सुणी रलियामणा ; सु० ७
हुं आव्यौ हो ताहरै पास,
वात कही मैं माहरी ; सु०
हिव दीजै हो मुझ सुखवास,
उलट मन माहे धरी ; सु० ८
हुं तो ते छुं उत्तमकुमार,
पगथी छोड़ो दोरड़ो ; सु०
दिव्य रूपी थयो ततकाल,
जाणै कंदर्प्प आगै खड़ौ , सु० ६
हर्षित हुवा हो सगला लोक,
सहस्रकला कन्या वरी ; सु०
तिहाँ मिलीयौ मदालसा नारि,
वृद्धा युक्त हरख धरी ; सु० १०
महोच्छव पुर मां हो करि नै भूरि,
त्रिलोचना कुमरी मिली ; सु०
नारी हो तीन तणौ संयोग,
थयौ मन नी आसा फली ; सु० ११
पुनवान हो पुरुष जे होइ,
तुरत मिटै तसु आपदा ; सु०
थई एतलै हो सातमी ढाल,
विनयचन्द्र लही संपदा ; सु० १२

॥ दूहा ॥

प्रीति परस्पर जाणि नै, वेश्या थापी नारि ;
तिण पणि कीधी आखड़ी, इण भवि ए भरतार ; १
हिव तेड़ी वनमालिका, करि नै वहुविध वंध ;
नलिका मांहे व्याल नो, पूछयौ सहु संवंध ; २
वोलै मालणि वीहती, दोष न को मुझ स्वामि ;
समुद्रदत्त मुझनै दीया, परिष पांचसै दाम ; ३
वोल कीयो जिण एहवौ, भूप जमाई मारि ;
तिण लोभे ए मैं धर्यो, नलिका सर्प्प विचार ; ४
राजा विहुं नै मारिवा, हुकम कीयो करि क्रोध ,
कुमरै राख्या जीवता, देई अति प्रतिवोध , ५
विहु नो धन लूटी लियौ, देश निकालौ दीध ,
उत्तम कुमर भणी, सहु हथ राजा कीध ; ६

ढाल (८)

लटको थारो रे लोहणी रे, एहनी

नृप हुवो वैरागीयो रे, जीता विषय कषाय ;
खटकौ जेहना रे मनथी टल्यौ रे। आ०
सेठ सहित संयम लीयौ रे, सद्गुरु पासै जाय ; ख० १
लोभ रहित जे मुनिवरा रे, निर्मल निरहंकार ; ख०
वाल वृद्ध गीतार्थ नो रे, वेयावच करै सार ; ख० २

थोड़ै काल भण्या घणुं रे, धरम ध्यान रस लीन ; ख०
केवलज्ञान लही करी रे, पोहता मुगति अदीन , ख० ३
तिण अवसर राक्षसपती रे, भ्रमरकेतु गुण ठाम ; ख०
नैमित्तिक पूछ्यौ वली रे, मुझ वैरी किण ठाम ; ख० ४
ते कहै ताहरी पुत्रिका रे, परणी गयौ जेह ; ख०
पंच रतन ताहरा लीया रे, मोटपल्ली छै तेह ; ख० ५
वक्रकूप पाताल मां रे, ते पैठो हसी केम ; ख०
पुत्री किम परणी हस्यै रे, नहिं संभीवीयै एम ; ख० ६
ज्ञान न थाय अन्यथा रे, नैमित्तक कह्यौ सुद्ध ; ख०
तेहनै जीती नवि सकौ रे, जो था तुं अति क्रुद्ध ; ख० ७
पहिली शून्यद्वीप मां रे, एकाकी हतो जाम , ख०
तो पण गंजी नवि सक्यौ रे, हिव युद्ध नौ स्यॅ काम ; ख० ८
पंच रतन सुपसाउलै रे, तेह थयौ भूपाल ; ख०
मिलीयै पासे जाय नै रे, सी करीयइ तसु आलि ; ख० ६
वलि सगपण मोटो थयो रे, ते माहरौ जामात ; ख०
इम चिंतवि आयौ तिहां रे, मुँकि सकल उतपात ; ख० १०
उत्तम नृप सेती मिल्यौ रे, दुविधा टाली दूर , ख०
पुत्री भीड़ी हीयड़ै रे, निरमल वाध्यौ नूर ; ख० ११
मस्तक धारी आगन्या रे, उत्तम नृप नी जेण ; ख०
चाल्यो निज नगरी भणी रे, राक्षसपति हरषेण , ख० १२
ढाल भणी ए आठमी रे, सांभलता सुख थाय ; ख०
त्रिनयचन्द्र महाराय नौ रे, जस जग माहि सुहाय ; ख० १३

|| दूहा ||

तिहां किण सकल सभा मिली, नृप बैठो मन रंग ;
छत्र विराजै मस्तके, चामर ढले सुचंग ; १
दूत तिहां एक आवोयौ, जास वचन सुपवित्र ;
कर जोड़ी नृप आगलै, मेल्हौ लेख विचित्र ; २
राजा खोली वांचियौ, मन धरि हरख अपार ;
तेमां स्युँ लिखीयौ अछै, ते सुणज्यो अधिकार ; ३

ढाल (६)

चाल—राजा जो मिलै, एहनी,

स्वस्ति थी जिनदेव प्रधान, नमीय वणारसी थी बहुमान ;
राजा वीनवै, प्रेमातुर इम संभलवै
श्री मकरध्वज नृप गुणगेह, सपरिवार सुं धरीय सनेह ; १
मोटपल्ली नामे वेलाकूल, सकल श्रियानौ जे छै मूल ; रा०
उत्तमकुमर कुमार आरोग्य,
निज अंगज स्नेहपूर्वक योग्य ; २ रा०
आलिंगी निज हृदयसरोज,
घणु घणु प्रेमै रोज ; रा०
समादिसति भूपति कल्याण,
कुशल अत्र वर्त्तइ सुविहाण ; ३ रा०
साता सुख तणा समाचार,
पुत्र तुमे देज्यो निरधार ; रा०

कारज कहीयै एह विशेप,
हीयड़ै धरीज्यो वाची लेख ; ४ रा०
तूं अम राज्य तणौ आधार,
करिजे माता पितानी सार ; रा०
तुझ नै दुहवियौ कहि केण,
पहुतो तूँ परदेशे जेण ; ५ रा०
जिण दिन थी नीसरियौ पूत,
खबर करावी तुझ बहूत ; रा०
पिण नवि लाधी ताहरी वात,
दुख पाम्या जाणे वज्रघात ; रा० ६
तैं तो अमने कीया निरास,
नांखंता दिन जाय नीसास ; रा०
सास तणीपरि आवै चीति,
साल तणीपरि सालै प्रीति ; रा० ७
प्रायै छोरू न लहै सार,
मावीत्रां नी किण ही वार , रा०
पिण मावीत्र तपै दिन-राति,
पांणी वल विरहो न खमात ; रा० ८
दिवस दुहेला कष्टे जाय,
रयणी तो किमही न विहाय ; रा०
जिम जलधरनै समरै मोर,
तिम तुझनै समरूं छूं जोर ; रा० ६

प्राणसनेही चतुर सुजाण,
तुझ विण जास्यै जाणै प्राण ; रा०
ढील न करिजे गुण-मणि-खाण,
वहिलो आवै मूकी माण ; रा० १०
उपजावै सुख लही सुख विभूति,
मावीत्रानै तेह सपूत ; रा०
सायर नै जिम चन्द्र-प्रकाश,
हरख वधारै परम उल्लास ; रा० ११
सुहणा ही मां ताहरो ध्यान,
वाल्हो लागै जेम निधान ; रा०
जिण दिन देखिसि ताहरो मुख,
तिण दिन थासी अगणित सुख ; रा० १२
वहिवा राज्य धुरानो भार,
वृद्ध थया असमर्थ विचार ; रा०
इहां आवीयौ पोतानो राज,
पालौ संभालौ गृह काज ; रा० १३
घणॅ किसुॅ कहीयइ वार वार,
तुॅछै चतुर सकल बुद्धि धार ; रा०
जो तुं अमारो भक्त कहाय,
तौ पाणी पीजे इहां आय ; रा० १४
लेख तणो एहवो समाचार,
वांचै वारंवार कुमार ; रा०

एहवा हितवछल मावीत,
हुँ दुखदायक थयौ अविनीत ; रा० १५
शीघ्र चलुँ नीसाण वजाय,
सुख द्युं मात पिता नै जाय ; रा०
इम उच्छक थयौ मिलण कुमार,
मात-पिता नै तेणी वार ; रा० १६
सचिव भणी निज राज्य भलाव,
चाल्यो चतुरंग सेन मिलाय ; रा०
वाणारसी नगरी भणी नाम,
चार प्रिया संयुक्त प्रकाम ; रा० १७
चलतां चलतां अखंड प्रयाण,
आया चित्रोड़ समीपे जाण ; रा०
ए पूरी थई नवमी ढाल,
विनयचन्द्र कहै परम रसाल ; रा० १८

॥ दूहा ॥

महासेन आवी मिल्यो, निज परिवार समाज ,
राज देई निज नृप भणी, आप थयौ मुनिराज ; १
मेदपाट नै लाट वलि, भोट अनै कर्णाट ;
पोते वसि करि चालीयौ, ले निज सेना थाट ; २
गोपाचल गिरि आवीयौ, उत्तम नृप जिण वार ,
वीरसेन राजा भणी, खबर पड़ी तिण वार ; ३

लेई च्यार अक्षौहिणी, सेना तणौ समूह ;
उत्तम नृप सामौ चल्यो, धरा धड़कै धूह , ४
उलकापात हुवो वली, थरकै अहिपति ताम ;
मेरु डिगै सायर चलै, कच्छप थयो विराम , ५
इत्यादिक अपशुकन तजी, गयौ सनमुख तास ,
सीमा सेढै ऊतर्यो, वीरसेन उल्लास ; ६
उत्तम पृथ्वीपति भणी, साम्हो मेली दूत ;
जौ राणी जायौ हुवै, तौ थाजै रजपूत ; ७
इम सुणी कोपातुर थयौ, उत्तम नाम नरिंद ;
वीरसेन ऊपरि अधिक, रूठो जिम असुरिंद ; ८
झंडा दीसै दल तणा, घणा घुरइ नीसाण ;
सूरा पूरा सहु थकी, हूवा आगेवाण ; ९

ढाल—(१०) हो संग्राम राम नै रावण मंडाणौ एहनी

मांहो माहि ते लसकर बे मिलिया, सनद्ध बद्ध सकलीया ;
टंकारव लागै नवि टलीया, भड़ सहु कोई भिलीया रे ; १ मा०
वाजा रण मांहे तिहां वाजै, गरजारव करि गाजै ;
लूवरि पिण आवण री लाजै, दल रै सघन दिवाजै हो ; २ मा०
हाथी सहु पहिरी हलकारै, हलकंता नवि हारै ;
सुँडा दंड सवल विसतारै, मद उनमत्ता मारै हो ; ३ मा०
जुगति लड़ण री घोड़ा जाणै, दल में ते दोडाणै ;
बापूकार्या वल बहु, टामक वज्जण टाणै हो ; ४ मा०

रिण मांड्यो सूरे रस राते, घट भांगे घण घाते;
मन थी महिर तजे मद माते, विचि विचि आवै वाते हो ; ५
गड़ गड़ नाल विशाल गडूकै, धरणी तुरत धडूकै;
चन्द्र वाण नाखंता न चूकै, कल कल स्वर करि कूकै हो ; ६ मा०
डिगै न पायक भरतां डाके, छल खेले छिलती छाके;
... ...ढाहि चढावै ढाकै हो ; ७ मा०
रुंख तणी परि पग आरोपै, लड़ता रिण नवि लोपै;
चक्षु तणै फुरकारै चोपै, कहर करतां न कोपै हो ; ८ मा०
चमकि लगावै वदन चपेटा, लातां तणा लपेटा;
घरहर नै जिम मंडै घेटा, तिम भरी रीस ल्यै भेटा हो ; ६ मा०
कुहक वाण छूटण रै कडकै, अरीयां साम्हा अडकै;
भड़ कायर भाजै तिहां भड़कै, त्रेह त्रसै जिम तड़कै हो ; १० मा०
वलि विच मां वंदूक विछूटै, खिण आरावा खूटै;
तरवारां त्राछंतां तूटै, सुभटा रो सिर फूटै हो ; ११ मा०
अरक छिपायो रज ऊडंती, अंबर जिम ओपंती;
रुहिर खाल तिहां मांहि रहंती, वालारुण वहसंती हो ; १२ मा०
असवारै असवार अटक्कै, लल वल लुंवि लटक्कै;
संभावै समसेर सटक्कै, तोडै, तुंड तटक्कै हो ; १४ मां०
अंग तणै पोरस्स उमाहे, अरियण नै अवगाहै;
ढालां री ओटा दे ढाहै, सवल सड़ासड़ साहै ; १५ मा०
रथ सेती जूटा रथवाला, मुडै नहीं मछराला;
मूंछे वल घालै मतवाला, टलि न करै को टाला ; १६ मा०

पासै सर आवंता पालै, झलकंते निज झालै;
नयणे निपट निजोक निहालै, धाव झड़ाझड़ घालै; १७ मा०

इतरै वेढ हुई उपशमती, कलिरो भाव कहंती;
दुइ दल रा तिहां दीसै दंती, वादल घटा वहंती हो; १८ मा०

प्रलय काल रिण मेघ प्रगट्टें, इत तल थल उद्वट्टैं;
झलहल विज्जल खड़ग झपट्टैं, छट्टा वाण आछट्टइं हो; १९ मा०

उदक वहै रुधिरालउ लोला, गडां रूप ते गोला;
इन्द्र धनुष झण्डा धज ओला, हयवर पवन हिलोला हो; २० मा०

इणपरि युद्ध तणी विधि जाणै, जे सगवट नें जाणै;
परतखि दशमी ढाल प्रमाणै, विनयचन्द्र सुवखाणै हो, २१ मा०

॥ दूहा ॥

संग्रामांगण नै विषै, जीतो उत्तम राय;
वीरसेन नै जीवतौ, वाधि लियौ तिणठाय; १

फेरावी निज आगन्या, उत्तम राजा वेगि;
गाल्यो गह वैरी तणो, भला जगाई तेग; २

वीरसेन मनमां चींतवै, माहरी न रही माम;
हुँ पिण जोरावर हतो, एह थयौ किम आम; ३

निज अपराध खमाइ नैं, पाए लागौ जाम;
राजा छोड़ि दीयो तुरत, फिर वगस्यौ निज ठाम; ४

ढाल (११)

ओलगड़ी

चित्त मां (२) विचारै राजा एहवो रे,
हो अपजस भाखै लोक;
तो हिवै (२) आपुँ उत्तम राय नै रे,
राज्य प्रमुख सहु थोक; १ चि०
केहनो (२) गुमान रहै नहीं सावतो रे,
गंजी नइं कुण जाय;
परभवि (२) परमेसर पूज्यां विना रे,
जेत कहो किम थाय, २ चि०
राजनै (२) गजादिक सूँपीया रे,
उत्तम नृप नै ताम;
निज मन (२) चाल्यो गृह बंधन थकी रे,
वीरसेन हित काम; ३ चि०
क्षण समै (२) सुविहित मुनि चूड़ामणी रे,
हो आव्या युगन्धर सूरि;
नगर नै (२) समीपै वन में समोसर्या रे,
हो साधु सहित भरपूर, ४ चि०
आवी नै (२) वन पालक दीध वधामणी रे,
गुरु आगमन प्रघोष,
वांदिवा (२) चाल्यो निज परवार सुँ रे,
हो नृप तेहनै संतोष; ५ चि०

वांदि नै (२) बैठो सुणिवा देसना रे,
सदगुरु द्यै उपदेश ;
धरम (२) करो रे भवियण भावसुं रे,
जेम कटै कर्म कलेश ; ६ चि०
नर भव (२) लहिस्यो फिर दोहिलो रे,
करि भव भ्रमण अनेक,
भवजल (२) निधि तरिवानै कारणै रे,
जैन धरम छै एक ; ७ चि०
तेहनो (२) सरणौ हो भवियण आदरो रे,
संयम तप धरि सार ;
इक भव (२) अथवा दोइ भव अंतरै रे,
वरिस्यौ शिवगति नार ; ८ चि०
धर्मकथा (२) सुणि संयम ग्रह्यो रे,
भण्यो शास्त्र सिद्धांत सुजाण ;
पालीने (२) चारित्र निरतिचार सु रे,
नृप पहुतो निरवाण ; ६ चि०
उत्तम (२) कुमर देश वशी करि,
आवै निजपुर मांहि,
आवता (२) अनमी राय नमाविया रे,
थयौ आणंद उच्छाह ; १० चि०
भूपति (२) सह्यौ सामेलो प्रेम सुँ रे,
सिणगार्या गजराज ;
घरि (२) तोरण बांध्या अति भला रे,
धुरे नगारा गाज ; ११ चि०

कोतिल (२) घोड़ा आगलि कर्या रे,
सधव धर्या सिर कुंभ;
इण परि (२) राय मिल्यो निज सुत भणी रे,
चित थी टलीयौ दंभ; १२ चि०
एहवै (२) ढाल कही इग्यारमी रे,
लहीयौ भूपति मान;
उत्तम (२) कीरति थंभ चढावीयौ रे,
विनयचन्द्र वरदान; १३ चि०

॥ दूहा ॥

उत्तम नृप मिलीयौ जई, बाप भणी धरि नेह;
मन विकस्यौ तन उल्लस्यो, रमगचित थयौ देह; १
मकरध्वज भूपाल पणि, सुत ऊपरि करि मोह;
अंगइ आलिंगन दीयौ, सखरी वधारी सोह; २
सासू नै पाए पड़ी, च्यार बहु मद छोड़ि;
दीधी तीण आसीस इम, अविचल वरतो जोड़ि, ३
प्रभुता देखी पुत्र नी, राजा हुवै खुश्याल;
पुण्य विना किम पामीयै, एल मुलक ए माल; ४
निज सुत समरथ जाणि नै, पोते थाप्यो पाट;
पंथ लियौ मुनिवर तणौ, जग माहे जस खाट; ५

ढाल (१२)

तबोलणि नी

च्यार राज्य अधिपति हुवो रे, उत्तम नृप गुण गेह;
जेहनै सुन्दर कामिनी रे, जसु कंचन वरणी देह; १

च्यारे त्रिया चित्त हरइ रे, अधिको अधिको नेह,
दिवस प्रति जे धरइ रें,
चित चोखो चिहुं नारि नो रे, गुणवंती कहवाय ;
प्रिउ ऊपरि अति रागणी, ते कथन न लोपै काय ; २
सेवै रंभा सारिखी रे दासी गृह नैं काम ;
माता नी परैं नेहलो, पालै टालै दुख ठाम , ३
सुख आपै निज पति भणी रे, सुकलीणी सिरताज ;
धरम ध्यान पिणसाचवै, अवसर देखि तजि लाज ; ४ च्यारे०
जेहनै लखमी अति घणी रे, कहता नावै पार ,
जाणि धनद निज आविनै, भरीयो पूरण भंडार ; ५ च्या०
चालीस लक्ष हयवर भला रे, गज पणि लक्ष चालीस ;
स्यंदन पणि जेहनै छै तितला हीज विसवा वीस ; ६ च्या०
च्यार कोड़ि पायक कह्या रे, ग्रामा गर पणि जास ;
चालीस कोड़ि वखाणियै, दिन दिनमा अधिक प्रकाश ; ७ च्या०
धरम करै उच्छव धरै रे, पूजे जिनवर देव ;
धूजै पातिक थी घणुं, इण रीति राखै टेव , ८ च्या०
भला कराव्या देहरा रे, जिनवर तणा अलेख ,
यात्र करी जिण जुगति सुं, सहु तीरथ नी सुविशेष , ९ च्या०
पोष्या पात्र सुपात्र ना रे, छोड्यो सगलो दंड ;
साधर्मिकवच्छल कर्या, चावौ थयो च्यारे खंड ; १० च्या०
पुस्तक जेण लिखावियां रे, जिन आगम सुविचार ;
दानशाला मडाविनै, दान देई करै उपगार , ११ च्या०
संसारी सुख भोगवे रे, च्यार स्त्रिया नै साथि ;
जाता दिन जाणौ नहीं रे, एतो वाणारसी नौ नाथ ; १२ च्या०

राज प्रजा सुख चैन मां रे, प्रवर्त्तै दिन राति ;
इम द्वादशमी ढाल मां, कहै विनयचन्द्र अवदात ; १३ च्या०

॥ दूहा ॥

इण प्रस्तावै समोसर्या, केवलधार मुणिंद ;
चित मां अति उच्छक थई, वांदण चाल्यो नरिंद ; १
मुनिवर पासै आविनै, वांदे बे कर जोड़ ;
धर्म देशना मुनि दियै, मोह तणा दल मोड़ि ; २
जगवासी जन साभलौ, ए संसार असार ;
तिहा तन धन यौवन निफल, जातां न लहै वार ; ३
पाम्यौ जनम मनुष्य नौ, आरिज कुल सुनिहाल ;
रयण राशि कवड़ी सटै, कोई गमावौ आलि ; ४
श्रुत सुणतां अति दोहिलो, राखै तिण मां चित्त ;
सद्दहणा वलि साचवौ, संयम धरि सुपवित्त , ५
धरम च्यार प्रकार नौ, दान शील तप भाव ;
ते दुर्म्मति छोडीजो, द्यौ कृतान्त सिर घाव ; ६
जनम मरण दुख छोडि नै, जेम लहो शिवराज ;
साभलि एहवी देशना, हरख्या लोक समाज ; ७
हिव राजा पूछै इसुं, स्वामी कहो विचार ;
मैं लखमी पामी घणी, राज्य लह्या वली चार , ८
हुं वारिधि मांहे पड्यो, मीनोदर रह्यो केम ;
गणिका घरि शुक किम थयो, भाखौ जिम छै तेम ; ९

ढाल (१३)

होलाई बाभणी, एहनी

सुणि नृप गुण रसीया पूरव अर्जित संवन्ध जो,
जे तै पाम्यौ रे फल इण हीज भवै रे लो। सु०
नवि छूटै निज कृत कर्म बंध जो,
केवलधारी मुनि इण परि चवै रे लो। १ सु०
भूमि हिमालै पासि नजीक जो,
सुदत्त तिहां रे गाम सुहामणो रे लो। सु०
तिण मां रहै कौटंविक गुण गेह जो,
धनदत्त नाम अति रलीयामणो रे लो। २ सु०
तेहनै रमणी चार सरूप जो,
लखमी तो लाखे गाने गेह मा रे लो। सु०
कितलै दिवसे थयो विरूप जो,
कवडी नौ वित्त मिलै नहीं जेहमां रे लो। ३ सु०
भूख मरंता कृश थयो अंग जो,
वली जरायै ते थयौ जाजरो रे लो०। सु०
तसु घर आव्या मुनि मन रंग जो,
कौटंवी जाण्यो धन दिन आज नो रे लो। ४ सु०
ते तो च्यारे साधु सुजाण जो,
चोरे लूट्या रे मारग चालतां रे लो। सु०
टाढइं धूजइं तेहना प्राण जो,
महिर आवी रे तास निहालतां रे लो। ५ सु०
वहिराव्या तिण वस्त्र प्रधान जो,
अनुकंपा कीधी रे च्यारे अगना रे लो। सु०

धन धन तुं प्रिय गुणनिधान जो,
मुनि पड़िलाभ्या वस्त्र सुचंगना रे लो । ६ सु०
तिण प्रभावै धनदत्त राय जो,
तूंतौ थयो रे सहु नो अधिपति रे लो । सु०
ताहरै स्त्री पुण्य पसाय जो,
ते ही थ्यारे रे अभिनव सरसती रे लो । ७ सु०
देखी किण एक भवि मुनि आंन जो,
निंदा कीधी रे तेहनी घणुं घणी रे लो । सु०
एतो मीनक नी परि म्लान जो,
मछ जिम वासै गंध देही तणी रे लो । ८
तसु कर्मे काल निवास जो,
तूं तो वसीयो रे मछ ना पेट मां रे लो । सु०
रहीयौ वलि मेनिक आवास जो,
आन पड्यौ रे दुखनी फेट मा रे लो । ६ सु०
इण भवि थी सूवडो कोड जो,
राख्यो रे तैं तो सहस्रतमै भवै रे लो । सु०
घाल्यो पंजर मां गुण जोइ जो,
हूवो रे पोपट तू पिण तिण ढवै रे लो । १० सु०
वलि अनंगसेना नै पास जो,
पइंलंतर आवी सहीयर सम्भि भली रे लो । सु०
तिण इण परि कीधो हास जो,
आवौ रे वाई वेश्या लाडिली रे लो । ११ सु०
तिण कर्म तणै वशि एह जो,
अनंगसेना रे गणिका ऊपनी रे लो । सु०
इम सुणि राजादिक तेह जो,
सकल विटंबन जाणी कर्मनी रे लो । १२ सु०

थई पूरी तेरमी ढाल जो,
भाख्यो रे पूरव भव जिण शुभमती रे लो। सु०
एतौ विनयचन्द्र दयाल जो,
नृप परसंसा जेहनी कृत छती रे लो। १३ सु०

॥ दूहा ॥

राज देई निज सुत भणी, उत्तम नृप जिन भक्त ;
गुरु पासै संजम लीयौ, च्यारे स्त्री संयुक्त ; १
चारित पालै निरमलो, तप करि सोपे काय ;
पूरव पाप पखालता, कर्म्म निर्जरा थाय ; २
प्रांते अणसण आदरी, पहुता वर सुर लोक ;
च्यार पल्योपम आउखो, जिहां छै वहु विह्लोक ; ३
तिहां थी चवि नै सीझसी, महाविदेह मझार ;
अविचल शिव सुख पामसी, नहीं जिहां दुख लिगार, ४

ढाल (१४)

गूजरी रागे

वस्त्र दान नै ऊपरै रे, उत्तम चरित्र कुमार ;
सुख संपत लही, हा रे सुख पाम्या श्रीकार ; सु०
इम जाणी नै दान द्यो रे, मन धरि हरख अपार, १ सु०
गुण गाया मुनिराय ना रे, धन्य दिवस मुझ आज ;
रास कीयौ मन रंग सुं रे, सीधा वछित काज ; २ सु०
चारुचंद्र मुनिवर कीयौ रे, उत्तमकुमर चरित्र ; सु०
ते संवंध निहालनै रे, जोड्यौ रास विचित्र ; ३ सु०
ओछौ अधिको जे कह्यो रे, कवि चतुराई होइ, सु०
मिथ्यादुष्कृत वलि कहुं रे, ते सुणज्यो सहु कोइ, ४ सु०

वचन प्रमाणै जाणि नै रे, मन थी टाली रेख ; सु०
ढाल भली देशी भली रे, कहिज्यो चतुर विशेष ; ५ सु०
श्री खरतर गच्छ जगतमां रे, प्रतपै जाणि दिणंद ; सु०
सहु गच्छ माहे सिर तिलौ रे, ग्रह गण मां जिम चंद ; ६ सु०
गुण गिरुवौ तिहा गच्छपति रे, श्रीजिणचंद सुरिंद ; सु०
महिमा मोटी जेहनी रे, मानै वड़ा नरिंद ; ७ सु०
ज्ञान पयोधि प्रतिवोधिवा रे, अभिनव ससिहर प्राय ; सु०
कुमुद चन्द्र उपमावहै रे, समयसुन्दर कविराय ; ८ सु०
तत्पर शास्त्र समर्थिवा रे, सार अनेक विचार ; सु०
वली कलिंदिका कमलनी रे, उल्लासन दिनकार ; ९ सु०
विद्या निधि वाचक भला रे, मेघविजय तसु सीस ; सु०
तस सतीर्थ्य वाचकवरू रे, हर्षकुशल सुजगीश ; १० सु०
तासु शिष्य अति शोभता रे, पाठक हर्षनिधान ; सु०
परम अध्यातम धारवा रे, जे योगेन्द्र समान ; ११ सु०
तीन शिष्य तसु जाणियै रे, पंडित चतुर सुजाण ; सु०
साहित्यादिक ग्रंथ ना रे, निर्वाहक गुण जाण , १२ सु०
प्रथम हर्षसागर सुधी रे, ज्ञानतिलक गुणवंत ; सु०
पुण्यतिलक सुवखाणता रे, हियड़ो हेज हरखंत ; १३ सु०
तास चरण सेवक सदा रे, मधुकर पंकज जेम , सु०
प्रमुदित चित नी चूपसुं, रे, रास रच्यौ मैं एम ; १४ सु०
संवत सतरै वावनै रे, श्री पाटण पुर माहिं ; सु०
फागुण सुदि पांचम दिनै रे, गुरुवारे उच्छाहि ; १५ सु०

ढाल बयालीस अति भली रे, नव नव राग प्रधान; सु०
अठतालीस नै आठसै रे, गाथा नौ छै मान; १६ सु०
एह चरित सुणतां सदा रे, वाधै महियल माम; सु०
सुख संपति बहु पामियै रे, अनुक्रमि मन विश्राम, १७ सु०
ढाल चवदमी मन गमी रे, सहु रीझ्या ठाम ठाम; सु०
ज्ञानतिलक गुरु सानिधे रे, विनयचंद कहै आम; १८ सु०

इति श्रीविनयचन्द्र कवि विरचिते सरस ढाल खचिते सच्चातुर्य्य शौर्य्य धैर्य्य गांभीर्य्यादि गुण गणामत्रे। श्री मन्महाराज उत्तमकुमार चरित्रे जिन पूजा रचन। श्रेष्टि दापित मालाकारणी पुष्प नलिकास्थ लघु सर्प्प दशन गणिका निर्मित विषापहरण। क्रीडा शुक करण। पटहोद्घोषण स्पर्शन सहस्र-लोचना परिणयन नरवर्म्म दत्त राज्य प्रापण। भ्रमरकेतु मिलन। महासेन दत्त राज्यागीकरण। हठात् वीरसेन राज्य ग्रहण पिता दत्त राज्यादि राज्य चतुष्टय निर्वाहण समयामृतसूरि समागमन। पूर्व भव श्रवणात् अवाप्त चारित्र सूत्रण। निर्वाण-पद प्राप्ति समर्थनो नाम चातुर्य्य वर्य्य तुर्य्याभ्रिजोधिकारः॥ ३॥

संवत् १८१० वर्षे मिती चैत सुदि ११ शुक्रे। महोपाध्याय श्री ५ पुण्यचन्द्रजी गणि तत्शिष्य पुण्यविलासजी गणि। तदंते-वासी वाचक पुण्यशील गणिः लिखिता चतुष्पदिका। बाकरोद ग्राम मध्ये॥ श्रीः॥

[श्री हीराचन्दसूरिजी के बनारस, ज्ञानभंडार की प्रति पत्र २१ पंक्ति प्रतिपत्र १७, अक्षर प्रति पक्तिमें ५६, आदि व अन्त का १-१ पृष्ठ रिक्त]

श्री नेमिनाथ सोहला

राग—खंभाइती सोहलौ

नेमिकुंवर वर वींद विराजै, यादव यानी केसरीया ।
असीय सहस सेजवाला साथे, मंगल मुख गावै गोरीया ॥ १ ॥
यदुनाथ चढे गज रथ तुरीयां । आंकणी ।

ऐरापति सम अग सुचंगा, सोवन मैं साकति जरीयां ।
अंग प्रचंड महावल मँगल, गात वड़ा सोहै गिरीयां ॥ २ ॥यदु०॥

गत तरंग चपल गति चंचल, खेत खरा करता खुरीयां ।
अश्व अनोपम ऊँचा सोहै, हींस करै हयवर हरीया ॥३॥यदु०॥

पवन वेग चालता साथे, धवला धोरी जोतरीयां ।
असीय हजार सुखासन आगै, जरकस में चालै जरीयां ॥४॥ यदु०॥

छप्पन कोड़ कुंवर मद माता, सारंग हाथ लेई सरीया ।
वजा सहज अड़तालीस बाजै, फरहरता नेजा धरीयां ।
पायक कोडि पंचाणू आगै, नोबति बाजै घूघरीयां ॥५॥ ॥यदु०॥

अपछर सरिखी राजुल रंभा, गोखि चढ़ी जोवै गोरीयां ।
अभिनव इंद्र विराजे प्रभुजी, सरिखी जोड़ी भल मिलीयां॥६॥यदु०॥

राजिमती तन देव विभूषण, खलकै कंकण कर चूरीयां ।
तोरण तें प्रभु फेरि सिधारे, विनयचंद्र मुगते मिलिया ॥७॥ यदु०॥

ढालों में प्रयुक्त देसी सूची

कठिन शब्दकोष

अ

अकरार=अशक्ति
अकज=निकम्मा, अकार्य
अकीकी=लालरग का पत्थर
अक्खरा=अक्षर
अखियात=अक्षय, आख्यात, आख्यान, कहावत
अगल-डगल=अटसट
अछइ, अछउ=है, हो
अछीप=अस्पृष्ट
अजेस=आज भी
अटिल=अटल
अड़कै=भिड़ते हैं
अड़=आठ
अढारह=अठारह
अणख=इर्ष्या, नही सुहाना
अणदीठी=विना देखी
अणियाला=तीखा
अथाग=अथाह
अदत्तादान=चोरी
अनड़=स्वाभिमानी, अनम्र
अनुयोग=जोड़ना
अनेरी=दूसरी
अपछर=अप्सरा
अपजात=हीन जाति
अवीह=भयरहित
अभ्भटै=आभिडे
अभिग्रह=नियम
अम=हम
अमी=अमृत
अमरप=अमर्ष, खेद, प्रचण्ड
अमीना=हमें
अमोलख=अमूल्य
अम्हाणी=हमारी
अयाण=अज्ञान
अरइ=आरामे (कालचक्र=६ आरे)
अरियण=अरिजन, शत्रु
अलजउ=हम
अलवेसर=प्रभु, प्रियतम
अलजो=उत्कट अभिलाषा
अलूंझयो=उलझ गया
अलवि=सहज
अवगाह=व्याप्त, डुबकी लगाना, लीन होना
अवदात=शुभ, सुन्दर यश
अवचल=अविचल, निश्चल
अवधारो=स्वीकार करो
अवर=अपर, और, दूसरे।

अविहड़=अविघट, निश्चय
अवहटै=दूर करता है
असाता=असमाधि, अशान्ति
अहिनाण=अभिज्ञान, चिह्न, पहिचान

आ

आउल=आवल, काटेदार वृक्ष
आखड़ी=नियम
आगेवाण=आगीवान, प्रधान
आगलै=आगे
आगल=अर्गला
आगन्या=आज्ञा
आचर्या=आचरण क्रिया
आछुटइ=छूटते हैं
आँजुं=अजन डालता हूँ
आडी=प्रहेली, काम में आना, रुकावट डालना
आडो=जिद्द, हठ
आणी=लाकर
आदर्या=स्वीकार किया
आधाकर्मिक=अधोकर्मिक, जो साधु के निमित्त बना हो।
आन=अन्य
आपइ=स्वय, देता है
आपउ=दो
आफाणी=अपने आप
आंबिलतप=रूखा व अलोना एक धान्य दिन मे एक ही बार खाना

आम=ऐसा
आराहु=आराधन करता हूँ
आराबा=एक प्रकार का शस्त्र
आलंबिया=अवलम्बित
आली=सखी
आलइ=व्यर्थ
आलि=छेड़छाड़
आलोचि=विचार कर
आसरौ=आश्रय

इ

इकताई=एकत्त्व
इवड़ी=ऐसी

उ

उघाड़ी=खोली
उछाहि=उत्साह से
उच्छवक=उत्सुक
उच्छक=उत्सुक
उजमाल=उज्वल, तेजस्वी
उझडवाट=उजड़ मार्ग
उठ=साढे तीन
उदाल=नष्ट करना
उदग्र=जोरदार
उदवट्टै=उलटना
उद्देशा=अध्याय
उपस्यउ=उपशात हुआ
उपधान=श्रुताराधनार्थ किया जाने वाला तप

उपाड़िनै=उठाकर
ऊपजस्यै=उत्पन्न होगा
उवरा=उमराव
उमाही=उमंग, उल्लसित
उयर=उदर, गर्भ
उलटइ=उल्लसित होना
उवंग=उपांग
उवावण=उपार्जन
उवेख्यउ=उपेक्षित
उसन्नउ=शिथिलाचरी
ऊठाड़ी=उठाकर
ऊडेवा=उडने के लिए
ऊतावलि=शीघ्रता
ऊधरउ=उद्धार करो
ऊभी=खड़ी हुई

ए

एकरस्यउ=एक वार
एकलड़ा=अकेले
एहवउ=ऐसा

ओ

ओछउ=न्यून
ओलग=सेवा
ओलइ=ओट, मिस
ओसर्यो=हटना
औखाणौ=कहावत

अं

अंभ=पानी
अंतेउर=अन्तःपुर
अंतगड़=अन्तःकृत, अंतिम समय में कार्य सिद्ध कर मोक्ष जानेवाले
अंदेसउ=आशंका
अंदोह=अंदोलन, कंपन

क

कचोला=प्याला
कड़कै=शब्द करना, कड़कड़ाहट
कन्हैं=पास, निकट
कड़ुव=कटुक
कड़ा=कृता
कण=धान्य, अंश
कवाण=कमान
कमणा=कमी, न्यूनता
करड़्यो=काटखाया
करण=क्रिया
करसणी=कृषक, किसान
कल=अटकल, उपाय
कवड़ी=कौड़ी
कवियण=कविजन
कहर=आफत
कन्ता=कान्त, पति
कांकर=कंकड़
कांकल=ललकार
कागल=पत्र
काठौ=दृढ़
काढतौ=निकालते हुए

काढूँ=निकालू
काण=लिहाज, कायदा, इज्जत
कारिमउ=व्यर्थ
कारिज=कार्य
कासल=कश्मल, पाप
किंपाक=एक विष परिणामी मधुर फल
किम=कैसे
किराडै=किनारे
किसी=कौन सी
कीकी=आँख की पुतली
कुढना=भीतर ही भीतर जलना
कुण=कौन
कूकइ=चिल्लाते, पुकारते है
कूड़=झूठ, मिथ्या
कूरम=अक्रूर
केडइ=पीछे
केरी=की
केलवि=प्रयत्न करके, खोज करके
केहना=किसके
केही=कैसी
कोड=उत्कण्ठा
कोतिल=सजावटी (घोडे)
कोर=कोने मे

ख

खमणा=क्षपणक, दिगम्बर
खमात=महन होना
खमिजे=क्षमा करना
खरउ=सत्य
खाटइ=भोगता है
खाणी=खान
खातर=खाता वही
खातइ=क्षातिपूर्वक
खामी=त्रुटि
खिजमति=सेवा
खिण=क्षण
खिमइ=हटता है
खीणउ=क्षीण
खुट=अपराध
खूटि (गयो)=समाप्त (हो गया)
खेड़=हाक कर, चला कर
खेह=धूलि
खोड=त्रुटि
खोली=प्रक्षालित कर

ग

गइन=गगन
गड़ा=ओले
गणपिटक=द्वादशागी
गभारे=गर्भगृह
गमइ=सुहाना
गमा=भेद
गरूआ=बड़े
गलगलि=गद्‌गद्
गवाणी=गायी गई

गहकइ=प्रफुल्लित होता है
गहगाटइ=उत्साह से, समारोह से
गहेली=पागल, ग्रथिल
गाने=प्रमाण मे
गाह=गाथा
गीतारथ=गीतार्थ, वहुश्रुत विद्वान
गुड़ै=लुढकता है
गुणीयण=गुणी जन
गुल=गुड़
गूँगा=मूक, अवोल
गोचरी=मधुकरी, भिक्षार्थ भ्रमण
गोठ=गोष्ठी

घ

घटइ=चाहिए
घाठी=घृष्ट, घसी
घाणी=कोल्हू
घालता=प्रविष्ट करते, लगाते
घाल्यो=डाला
घालिस=डालूगी
घुरइ=बजते हैं
घेटा=मींढा

च

चइन=चैन, आनन्द
चउमाल=चमालीस
चटकउ=उत्साह
चवि=च्यवकर
चरण=चारित्त, चर्या
चरवी=चरी, वटलोइ
चंदूआ=चदरवो
चग=अच्छा
चहुटी=चिपकी, लगी
चापइ=दवाना
चारित=सयम, दीक्षा
चावो=प्रिय, चाहवाला
चीत=चित, चिन्ता, याद
चीर=वस्त्र, ओढणा
चुलसी=चौरासी
चूप=इच्छा, चेष्टा, युक्ति
चूरउ=चूर्ण करो
चीगटइ=चिकने, स्निग्ध
चोला=मजीठ, लाल
चौरी=विवाह मण्डप
चौमाल=होसियार, चतुर

छ

छती=रहीहुइ
छब्यौ=स्पर्श किया
छाजइ=सुशोभित
छाडस्यु=छोडूगा
छाने=गुप्त
छावरै=छोडे
छाहडी=छाया
छीपे=स्पर्श करै
छेहड़इ=अन्त मे
छोकरवाद=लडकपन

छोरी=लड़की
छोरु=लड़का

ज

जइयै=जब
जड़ी=मिली
जमवारो=भव, जन्म
जमवारइ=जन्म भर
जलहर=जलधर, मेघ
जसथम=कीर्ति स्तम्भ
जाइगा=जगह
जागरिका=जागरण
जाजरो=जर्जर
जाणपन=ज्ञान
जाति=जन्म से
जाम=जहातक
जाया=जन्मे
जंपै=बोलै
जात=यात्रा
जास्यौ=जाओगे
जीत्या=जीते
जीमणी=दाहिनी
जीवाडिस्यु=जिला दूगा
जूअउ=जुदा
जेत=जीत, विजय
जेम=जैसे
जेहवी=जैसी
जैत=जय-जीत
जेर=परास्त, निर्जित
जोगता=योग्य, योग्यता
जोड़इ=समकक्ष
जोतरीया=जोडे गए
जोसीयडो=ज्योतिषी
जोय=देखना
जोवइ=देखता है

झ

झकझोल=झकझोरना, झीलना
झखै=बकता है
झखि झखि=घिस घिसकर
झबूकै=चमकै
झाकझमाल=तेज, जगमगाहट
झाडो=मन्त्र फूक
झाली=पकड़ कर
झाले=पकड़े
झील्या=स्नान किया
झूलइ=झूलते हैं
झूली=डोलना, मडराना
झूझ=युद्ध

ट

टलवलै=उत्सुक, व्याकुल
टाढइ =शीत से
टाढी=शीतल
टामक=ढोल
टालउ=दूर करना, टालना
टाणै=अवसर पर

ठ

ठाणा=स्थान
ठवना=रखना, स्थापित करना
ठींगो=जबरदस्त
ठाढी=ठढी, शीतल
ठारू=शीतल करूँ
ठावा=निश्चित स्थान
ढूकइ=जचता है

ड

डसीया (अहि)=सर्पदंश
डावी=बॉयी
डोकरी=बुढिया
डोहला=दोहद
डोलुं=डोलना
डाहला=डालियाँ

त

तक=अवसर
तणी=की
तड़कै-धूप मे
तत=तत्त्व
तड़की=गर्ज कर
तरफलै=तडफडै, व्याकुल
तलावडी=तलाइ, छोटा सरोवर
तल्पिका=शय्या
तागत=बल
ताग=यज्ञोपवीत
ताणीनइ=तानकर, खींचकर
तिरस=प्यासा, तृषा
तीखी=तीक्ष्ण
तुमचउ=तुम्हारा
तूटै=टूट पडै (आक्रमण)
तूठा=तुष्ट हुए
तेडनइ=बुलाकर
ते तउ=वह तो
तेडावी=बुलाकर
तेवडउ=मानो, निश्चय करो
तेहवउ=वैसा
त्रस=चलते फिरते जीव
त्रसै=फट जाती है
त्राछन्ता=तड़ाछ से
त्रेह=तह, अन्तर मे प्रविष्ट होना (पृथ्वी में पानी का)

थ

थकी=से
थया=हुआ
थाटइं=ठाठ से
थानकइं=स्थान मे
थापइ=स्थापित करे
थापी=स्थापित की
थाय-होता है
थावर=स्थिर जीव
थारउ=आपका
थासी=होगा
थिर=स्थिर

थुड=वृक्ष का तना, धड
थुणिया=स्तुति की
थुणु=स्तुति करता हूँ
थेट=ठेठ
थोभ=स्तम्भ

द

दडीगो=जबरदस्त
दमिया=दमन किया
दवरक=डोरी
दशऊठण=दसोठन, पुत्र जन्म के १० वें दिन का उत्सव
दहिस्यु=नष्ट करूंगा, जलाऊँगा
दाखवी=दिखाकर
दाखविस्यौ=दिखाओगे
दाभै=दग्ध हो रहा है
दाढगलै=मुंह में पानी आवै
दाव=अवसर
दिवाजइ=प्रकाशित
दिदृक्षायें=देखने की इच्छा से
दिहाड़ला=दिवस
दिसा=दिशि, तरफ
दीकरी=पुत्री
दीठ=देखा, दृष्टि
दीसइ=दिखाई देता है
दीसउ=दीखते हो
दुक्कर=दुष्कर
दुत्तर=दुस्तर
दुहेला=दुखदाई
दूठ=दुष्ट
दूओ=हटने का आदेश, निकालना, ललकारना
दुहवियौ=दुखित किया
देवा=देने के लिए
देसण=देशना, उपदेश
देशना=उपदेश
देहडी=शरीर
देहरा=देवगृह, मन्दिर
दोगंधक=इन्द्र के गुरु स्थानीय देव
दोर=डोरी, रस्सी
दोरड़ो=डोरी
दोहिला=दुर्लभ

ध

धणीयाणी=स्वामिनी, स्त्री
धमियउ=तप्त
धरमीण=धर्मात्मा
धवलड़ौ=सफेद
धसिवा लागी=प्रविष्ट होने लगी
धीणौ=धेनु आदि दुधारु पशु
धीरप=धैर्य्य
धीगौ=जबरदस्त
धुखइ=सुलगता है
धुरीण=धुरन्धर, प्रधान
धोरी=प्रधान, संचालक, अगुआ
धंध=जजाल

न

नटी (जावै)=इनकार करैं
नडै=नमै
नथी=नहीं
नमिया=नमन किया
नय=जानने का प्रकार, तत्व जानने का साधन
नवि=नही
नानड़ी=बच्ची
नाखइ=गिराता है
नाखंता=डालते हुए
नाठउ=नष्ट हुआ
नाठौ=भग गया
नाणइ=नही लाता है
नाणु=द्रव्य
नालइ=नही देता है
नासंता=भगते हुए
निकाचित=वे कर्म जो भोगे विना न छूटे
निचत=निश्चित
निचोल=निचोड़
निजुत्ति=निर्युक्ति
निट्ठुल=निष्ठुर
निटोल=निश्चित, व्यर्थ
निवद्ध=दृढ़ बंध (कर्म) जो भोगे विना न छूटे
निरख=दृष्टि
निरूवणा=निरूपण
निरान्ति=निश्चिन्त
निलवट=ललाट
निलौ=निलय, घर
निहाली=निहारकर, देखकर
निहेजा=निस्नेही
निक्षेप=वस्तु सिद्ध करने के प्रकार
नीगमियइ=निर्गमन करना
नीठ=कठिनता से
नीम=नियम
नीसरइ=निकले
नीसरणी=सीड़ी, निसैनी
नीसाण=उठ पर वजनेवाली नोवत, नगाडे
नेट=अन्तमें
नेम=नियम, त्याग
नेहलउ=स्नेह, प्रेम
नैड़ौ=निकट

प

पखालता=प्रक्षालित करते
पखी=पक्ष, तरफ की
पगला=चरण पादुका
पचखाण=प्रत्याख्यान, त्याग
पजर=पिंजड़ा
पटली=तख्ती
पटोलैं=पटकूल
पड़वज=प्रतिबंध

पड़हो=पटह
पड़िवत्ति=प्रतिपत्ति
पड़िलाभ्या=प्रतिलाभ्या, साधुओं को दान दिया
पडूर=प्रचुर
पणयालीस=पैंतालीस
पणि, पिण=भी
पतगर्‍यौ=प्रतीति प्राप्त
पतियावै=विश्वास दिलावै
पतीजै=विश्वास करै
पथीडा=पथिक
पन्नता=प्ररूपित, कथित
पयपइ=कहता है
पर्यवा=पर्याय
परइ=जैसी, तरह, भांति
परखियइ=परीक्षा करें
परचावै=कहलाता है
परणी=विवाहिता
परगडउ=प्रगट
परिघल=प्रचुर, बहुत
परिख=जो, परखो
परीयछ=पडदा
परित्त=असख्य
परूवणा=प्ररूपणा
पलाद=मांसभोजी, राक्षस
पहुतो=पहुँचा
पाउडीए=सीड़िएँ, पगथिए
पाउधारउ=पधारो
पाउले=चरणों मे
पाखइ=विना
पाखती=ओर, निकट
पाच=हीरा, रत्न
पाज=पद्या, सेतु
पाड=एहसान
पातरै=अन्तर
पाति=पंक्ति, जातपात
पादपोपगमन=एक विशेष प्रकार का अनशन
पाधरो=सीधा
पानै पड्या=पाले पडे, धक्के चढे
पामीयइ=प्राप्त करें
पामी करी=पाकर
पारेवौ=कबूतर
पारिखो=परीक्षा
पालोकड़=पालतू
पासत्था=शिथिल आचारी
पाहण=पाषाण, पत्थर
पिचरकी=पिचकारी
पीठ=पैठ
पीधी=पान की
पीलण=पीलना
पूठा=पीछा
पूठली=पिछली
पूरउ=पूर्ण

पूरवइ=पूर्व दिशा में, पूर्ति करना
पूरस्यइ=पूर्ण करेगा
पूरेस्यै=पूर्ण करेगा, भरेगा
पेसी=प्रवेश कर
पैसता=प्रवेश करते
पोइण=पद्मिनी, कमलिनी
पोतानी=अपनी
पोतानउ=अपना
पोपट=शुक
पोरस, पोरस्स=पौरुष, बल, पुरुषार्थ
प्रभावना=ख्याति
प्रयुजइ=प्रयुक्त करते हैं
प्रहरण=हथियार
प्राहुणा=मेहमान, पाहुने

फ

फरस्या=स्पर्श किया
फलस्यइ=फलेगी
फाटै (मुह)=खुले मुह
फाटै (हृदय)=(हृदय) फटता है
फिटक रयण=स्फटिक रत्न
फीटै=नष्ट होते हैं
फूटरा=सुन्दर
फूभौ=फैल (रूई का)
फेट=फंदा
फेटि=सम्बन्ध
फेड्या=दूर किया
फेरवी=घुमाकर, ५

ब

बकोर=शोर, हल्ला
बटका=टुकड़ा
बणस्यै=बनेगी
बधत=वृद्धि
बहिराव्या=दान दिया, अर्पित किया
बारस=द्वादसी
बाकडी=टेढी
बारणे=द्वार पर
बाची=पढ़कर
बाडी=बाटिका
बाधइ=बढ़ता है
बाधइ=बाधा देना
बाजै=लगना
बावइयै=पपीहा
बार=द्वार
बाभण=ब्राह्मण
बापडा=बिचारे
बिंब=प्रतिमा
बिभाड=विभाजक
बिवणी=द्विगुनी
बिहूणा=रहित
बीटाणउ=वेष्टित
बीजा=दूसरा
बीफाय=व्यजित होना
बीहती=डरती हुई
बूठा=वृष्टि हुई

वूडो=डूब गया
वेउ=दो
वैसो=बैठो
वोलाइ=डूबना
वोहइ=बोध देते हैं
व्रजस्यइ=चलेगा, जायगा, वर्जित होगा

भ

भजउ=भागो, भागते हो, दूर करते हो
भड=भट, योद्धा
भणी=को
भज्यउ=भजन किया
भरड़ाक=तुरन्त
भलाव=सभालना
भलेरी=अच्छी
भविया=भव्य जीवों का
भमता=भ्रमण करते
भरेज्यो=भरना
भागा=भेद
भाउ=भाव
भणवा=पढ़ने के लिए
भाणी=सुहाइ
भाणी=पसन्द आइ
भामणि=भामिनी, स्त्री
भारणि=भारी
भामणा=वारणा लेना
भावठ=संकट
भावइ=चाहे, भले ही
भासइ=कहता है
भीडीयउ=दुखित
भुइ=पृथ्वी
भुंडी=बुरी
भेटा=भिडना, मिलाप
भेव्या=मिला
भोडलो=बुद्धू, भोला
भोलइ=भूलकर
भोलवी=भूलाकर

म

मउज=सुख
मग=मूग
मच्छर=मात्सर्य
मछरालो=जोरावर
मछराला=गुमानी
मटकार=नेत्रों का सौम्य कटाक्ष
मटकउ=बणाव
मण्ड्यउ=छिड गया
मडावै=(मकान) वनवाता है
मल्हार=प्रिय
मलपइ=मस्त, आनन्द करता
महियल=महीतल, पृथ्वी में
माज=इज्जत
माठी=बुरी, निकृष्ट
माठो=बुरा
माडिस्यु=करूँगा

माडी=विगतवार
माणु=भोगूं
माणे=भोगे
माण=मान
माणसा=मनुष्यों को
माण=मान
मातो=मत्त
मानीता=मान्य
माम=अहंकार
माम=सम्मान
मारकी=हिंसक
माल्हुं=मौज करूं
मावै=समावै, अटै
मावीत्र=माता-पिता
मावीत=माता-पिता
माहोमाहि=परस्पर
माहरा=मेरे
मिसि=बहाने
मिश=बहाना
मींचिया=मुंद लिये, बन्द कर लिये
मीट=दृष्टी
मीता=मित्र
मीनति=वीनती, प्रार्थना
मुद्गशैलिक=मगसिलिया पाषाण
(हरे रङ्ग का एक रूखा पत्थर)
मूघ=मुग्ध, मूढ
मुलकै=मुस्कराहट
मुहड़इ=मुख से
मूओ=मर गया
मूकाय=छोडा जाना
मूकइ=छोडता है
मूझाणी=उलझन
मूझि=मुग्ध होकर
मूलिका=उखाडने वाली
मेटि=मिटाओ
मेनिक=मछूवा
मेलिस्यइ=जगावेगा
मेलू=छोडू
मेल्हि=छोडो
मेहडा=मेघ
मोटिम=महत्ता
मौड=मुकुट
मोनइ=मुझे
मोरा=मेरा
मोरियउ=मुकुलित हुआ
मोसा=ताना
मोहणी=मोहिनी
मोहनगारउ=मोहित करनेवाला

य

यानी (जानी)=बाराती
युगतइ=युक्ति पूर्वक

र

रगरेल=हर्ष
रङ्गाणी=रङ्गी हुई

रज्जु=रस्सी
रन्न=अरण्य
रमिया=रमण किया
रयण=रत्न
रयणा=रचना
रलियामणा=सुन्दर
रलियालउ=सुन्दर
राखउ=रक्षा करो
राखेवा=रखने के लिए
राची=रंजित होकर
राढू=मोटीडोर, रंढू
रातौ=रक्त, रचा हुवा
रामति=खेल
रास=राशि, समूह
रीझवइ=रिझाते हैं, रंजन करते हैं
रीव=चिल्लाहट
रीस=रोष
रू=रूई
रूंखड़ा=वृक्ष
रूठा=रुष्ट हुए
रूडा=अच्छा
रूवडी=अच्छी
रुहिर=रुधिर, रक्त
रेलि=प्रवाह
रेह=रेखा
रोवराविया=रुला दिया

ल

लगइ=पर्यन्त
लटकउ=चाल
लछन=चिह्न
ललना=लाल, लालन
लच्छि=लक्ष्मी
लवधि=लब्धि, २८ प्रकार तपस्या से प्राप्त आत्म-शक्ति
लपटाणा=लुब्ध
लखाय=लक्षित होना
लसाय=लिप्त
लवन=छेदन, काटना
लगार=लेश
ललि-ललि=नमन कर
लाग=अवसर
लाघै=उल्लंघन करै
लाछि=लक्ष्मी
लाड=प्यार
लाडिली=प्रिय, प्यारी
लाधी=मिली
लावौ=दीर्घ
लार=साथ, पीछे
ल्यावइ=लाता है
लाव=लेना
लाहइ=लाभ
लाहउ=लाभ
लीणो=लीन हुई

लीधउ=लिया
लूखो=रूखा
लूवरि=लू
लेखवइ=गिनती
लेखइ=हिसाब से
लेवा=लेने के लिए
लोयण=लोचन, नेत्र

व

वइ=अवस्था, वय
वईयर=स्त्री
वउलावता=भेजते, लौटते
वखाण=व्याख्यान
वछ=वत्स
वज्जण=वजने के
वडम=महती
वन=वर्ण
वमिया=वमन किया
वयण=वचन
वरसाला=वरसने वाला
वलू=वलवान
वलि=फिर
वल्या=लौटा
व्यवहारी=व्यापारी
वसीला=निवासी
वहियइ=वहन किया
वहिला=शीघ्र
वाइ=वायु करना
वाच=वचन
वाचना=वाक्य, परम्परा, वाचन
वाची=पढ़ कर
वाधइ=बढ़ता है
वाटला=कटोरा, वाटका
वाणोत्तर=वाणिज्य करने वाला, गुमास्ता
वातडी=वार्ता
वारू=सुन्दर
वारेवो=वारण करना
वालभ=वल्लभ
वाल्हा=वल्लभ
वालेसर=वल्लभ, प्रियतम
वावत=वजाते हैं
वावरै=व्यय करता है
वासना=गंध
वास=पीछे
वाहला=जल प्रवाह
विगताली=पिछली
विगोवइ=नष्ट करता है
विचरइ=विचरण करता है
विछूटो=वियोग (जीव विछूटो मरना)
विज्जल=विजली
वींद=वर
वींदणी=वधू
विमासण=विमर्श

विपहर=विपधर, साप
विहरमान=विचरते हुए
विचरता=विचरते हुवे
विकूरवी=वैक्रिय लब्धि से उत्पन्न कर के
विरूओ=विरूप, विद्रूप
विरचइ=विरक्त होना
विरहण=विरहिनी
विलूधो=विलुब्ध
विहडे=विघटित होना
विह=प्रकार
वेभु=छिद्र
वेगलऊ=दूर
वेढ=युद्ध
वेलू=बालूका
वेधाले=वेधक
वेगला=दूर
वोली=बीती

स

सइमुख=सम्मुख
सइण=सज्जन
सइन=स्वय, साथ, सज्जन
सइहथ=अपने हाथ से
सकज=काम का
संगहणी=सङ्ग्रहसार
सगला=सभी
सकलि=जंजीर
सकलिया=सकलित हुए
सगवट=रूपक
सघातइ=साथ में
सघाते=साथ मे
सर्दहै=श्रद्धा करता है
सपै=सपजै, सम्प्राप्त हो
सभावइ=स्वभाव से
समवड=समान, समकक्ष
समुद्देशा=अध्याय का एक भाग
समवाय=समूह
समय=सिद्धान्त
समास=प्रकरण
समकित=सम्यक्त्व
समाणी=समान, समाविष्ट होना
समियउ=शान्त हुआ
समूर्छिम=स्वतः उत्पन्न जन्तु
स्युं=क्या
सरजित=कर्म, भाग्य
सरिस्यइ=सरेगा, सिद्ध होगा
सरिखा=समान
सलहै=सराहना
सलेहण=सलेखना
सलहेस=सराहना
सलूणा=सलोने, सुन्दर
सवार=सवेरा
ससत्तउ=शिथिलाचारी
ससरण=संसार, सासारिक

सशिहर=चन्द्र
ससनूर=विशेष सुन्दर
सहगुरु=सद्गुरु
सहीयर=सखि
सहिनाणी=चिन्ह, लक्षण
सहेजा=प्रीतिवाले
साकर=मिश्री
साँक=शका
सागी=मगा
साचवै=रक्षा करता है
साधइ=सिद्ध करता है
साभलो=ध्यानपूर्वक सुनो
साभरिया=स्मरण किया
सामेलो=स्वागत
साहमी=स्वधर्मी
साम्हो=सामने
सामुही=समक्ष
सायक=बाण
सायर=सागर
साल=सल्य
सारेवौ=सुधारना
सारै=भरोसे
सालै=खटकै
साव=सर्व, बिलकुल
सासय=शास्वत
शासता=शास्वत
साह=साधन करना
साही=पकड़कर
सिलोक=श्लोक
सिमाय=स्वाध्याय
सिमातर=शय्यातर (साधु जिसके घर ठहरे हो वह व्यक्ति
सीमइ=सिद्ध हो
सीमसी=सिद्ध होगा
सुइवो=शयन करना
सुकलीणो=कुलीन
सुकियारथउ=सुकृतार्थ
सुजगीस=अच्छी
सुजान=सुज्ञानी
सूतार=सूत्रधार, मिस्त्री
सूँघा=सुगन्धित
सुयक्खध=श्रुतस्कध
सूस=त्याग
सुहडा=सुभटों में
सुहणा=सपना
सूअटो=शुक
सूकइ=सूखता है
सूपीया=सौपें
सुविहित=सुव्यवस्थित
सुहकर=शुभकर
सुहामणी=सुहावनी
सूल=अच्छी तरह
सेषइकाल=चातुर्मास के अतिरिक्त का समय

सेजडी=शय्या
सेजवाला=वाहन विशेष
सेझै=शय्या में
सेलडी=ईख
सेहरो=शेखर, मुकुट
सोगी=शोकीले, दुखी
सोढो=वर, साथी, नायक
(राजपूतों की एक जाति)
सोरभ=सौरभ, सुगन्ध
सोवन=स्वर्ण
सोस=सोच
सोहग=सौभाग्य
सोहन=शोभन
सोह=शोभा

ह

हलवेहलुवं=धीरे-धीरे
हगलउ=हल
हाथ मुकावण=हथलेवा छुड़ाना
हाथ मेलावे=हस्त मेलापक
हाम=स्वीकृति, हँकारा
हिलोल्यउ=आन्दोलित
हिंडोलणा=हिडोला, झूला
हितूयउ=हितैषी
हिव=अब
हिवणा=अब
हीणउ=हीन
हीणों=रहीत
हीचिता=झूलते हुए
हीर=हीरा
हीयडा=हृदय
हीसत=हर्षित होता है
हूंस=उमंग
हुतउ, हतउ=था
हेज=प्रेम, स्नेह
हेजालू=प्रेमी
हेठ=नीची
हेलइ=सहज